अभिव्यक्ति

हिंदी गृह पत्रिका-अंक 24

2025

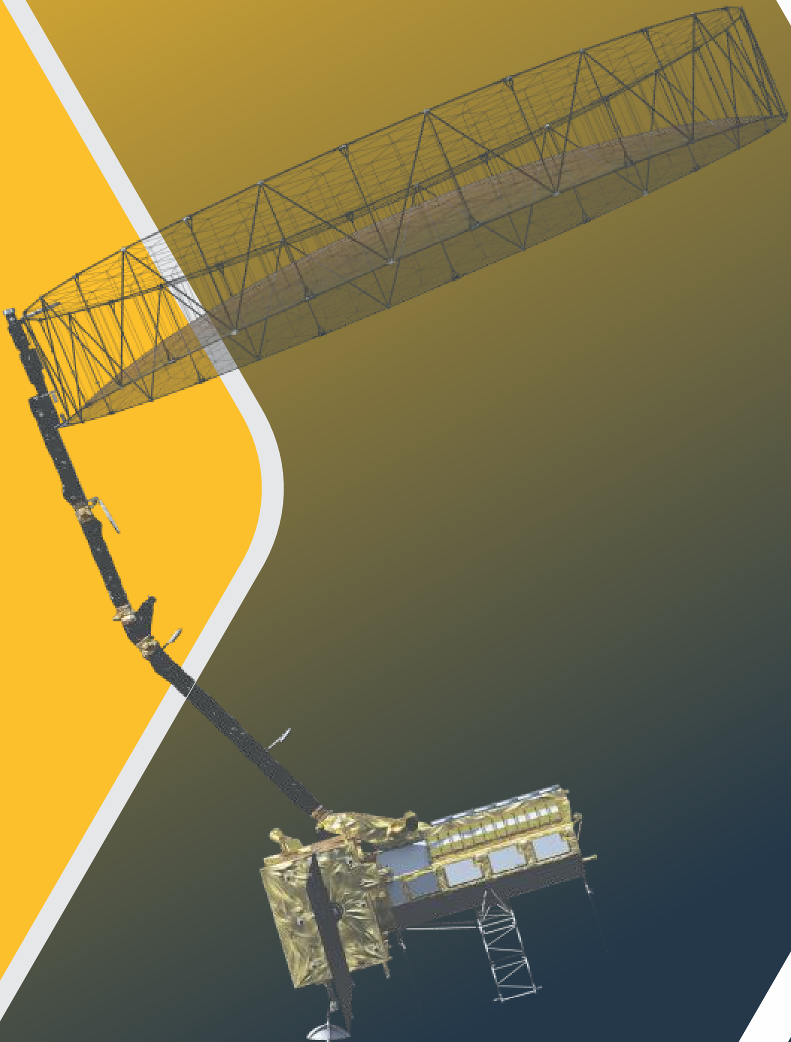

निसार

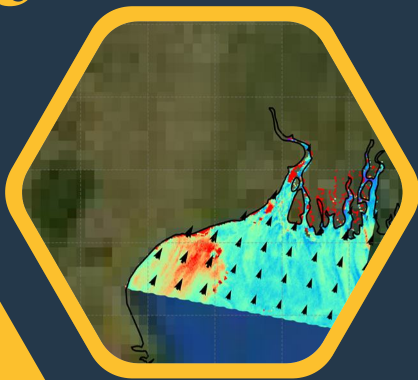

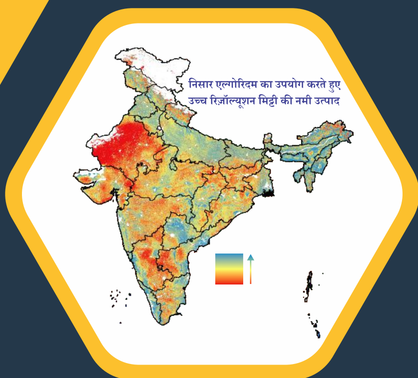

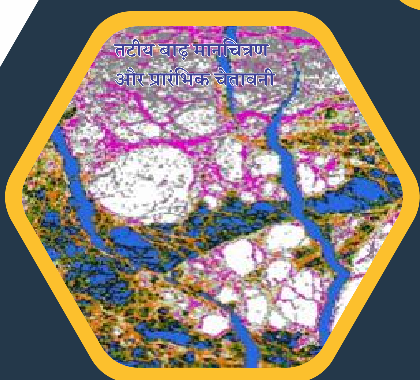

इसरो isro

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा अंतरिक्ष उपयोग केंद्र की राजभाषा गतिविधियों के निरीक्षण की झलकियां

संसदीय राजभाषा समिति

गृह मंत्रालय / भारत सरकार

निरीक्षण प्रमाण-पत्र

संसदीय राजभाषा समिति का गठन राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 4 के तहत वर्ष 1976 में किया गया। यह एक विशेषाधिकार प्राप्त समिति है। इस समिति में 30 संसद सदस्य हैं, 20 लोक सभा से और 10 राज्य सभा से। माननीय गृह मंत्री जी इस समिति के अध्यक्ष हैं। इस समिति का प्रमुख कार्य संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी के प्रयोग में हुई प्रगति का पुनरीक्षण और समीक्षा कर सिफारिशें करते हुए अपनी रिपोर्ट माननीय राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत करना है।

इसी क्रम में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिनांक 30.06.2025 को अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (सैक), अहमदाबाद का निरीक्षण किया गया। समिति द्वारा निरीक्षण में आपके कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग व कार्यान्वयन को उत्कृष्ट/ अच्छा/संतोषजनक पाया गया।

भर्तृहरि महताब

(भर्तृहरि महताब)
उपाध्यक्ष
संसदीय राजभाषा समिति

(उज्जवल रमण सिंह)
संयोजक
दूसरी उप-समिति

कार्यालय का पता: 11, तीन मूर्ति मार्ग, नई दिल्ली-110011, दूरभाष : 011-21411167
Email: us2ndsubcommittee@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र	रचना	लेखक का नाम	पृष्ठ सं
01	संपादकीय		01
02	संदेश : निदेशक सैक	निलेश एम. देसाई	02
03	संदेश : नियंत्रक सैक	विवेक कुमार जैन भा.दू.से.	03
04	अभिव्यक्ति अंक 23 के विशेष पुरस्कार विजेता		04
05	राजभाषा गतिविधियां		05
06	पाठकों की कलम से		07
07	माँ गंगा आरती दर्शन' से जुड़ी एक रोचक घटना	अजय कुमार	08
08	अजब - गजब है अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS)	दिनेश कुमार अग्रवाल	09
09	गर्मी की छुट्टियों में मेरा पसंदीदा गंतव्य स्थल	श्रेयश गुप्ता	11
10	चित्र: पेड़ लगाओ पर्यावरण बचाओ	नयोनिका वार्ष्णेय	12
11	चित्र: सीताराम	निशिका मकाणी	12
12	मिट्टी के बर्तनों में छिपा स्वास्थ्य का रहस्य	अपारनाथी किशनकुमार मोहनगर	13
13	नीरा आर्या : एक अनकही-अनसुनी दास्तां	जितेन्द्र कुमार	15
14	अपोप्सिस क्षुद्रग्रह : पृथ्वी पर संभावित खतरा	डॉ. हरीश सेठ	16
15	अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी - सरल भाषा में	राहुल जैन	17
16	दर्द....!	आशिष सोनी	18
17	हिंद का लाल अंतरिक्ष में	प्रीति अग्रवाल	19
18	दु:ख क्या रोना-धोना	हनी सोनी	19
19	क्योंकि सब कुछ मुझे जरूरत से ज्यादा मिला है	समिधा जैन	20
20	अग्नि सुरक्षा: सुरक्षित जीवन की आधारशिला	देवुलपल्ली एनवीएसएसएन मूर्ति	21
21	सैटेलाइट का जादू – एक अद्भुत कहानी	प्रीति अग्रवाल	23
22	जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान सफारी	डॉ. वैशाली उमरानिया	25
23	हमारी कहानी - मुहावरों की जुबानी	दीप्ति अग्रवाल	27
24	क्या है राजस्थान?	यशश जैन	28
25	संगीत: सुरों का सफर, हर आम ज़िंदगी के लिए खास!	डॉ. नित्यप्रिया श्रीवास्तव	29
26	चलो फिर से बीते ज़माने में जाएँ	अंजना सिंह	30
27	मूवी पहचानो	प्रिंस सोनी	31
28	ऊष्मा की कुछ रोचक बातें	कमलेश कुमार बराया	32
29	यात्रा वृत्तांत – एक स्वप्निल संसार की ओर	प्रीति सेन	33
30	बेटी बचाओ	देवांग एम मांकड	34
31	सोशल मीडिया का पक्ष एवं विपक्ष	राजकुमार गुप्ता	35
32	ऐ मोबाइल तेरा पेट कितना बड़ा?	विवेक पाण्डेय	36
33	ऑफिस डेस्क पर एक हरा भरा उपवन	अत्रिश मुखर्जी	37
34	मीडिया साक्षरता की आवश्यकता	दीप चन्द्र	38
35	वर्ग पहेली	आरती सोनी	39
36	होई एन : लालटेनों का शहर	आरती जोशी	41
37	अभिव्यक्ति पोर्टल : सैक की गृह-पत्रिका को मिली डिजिटल उड़ान	नीतेश कुमार पटैरिया - रतन लाल लववंशी	43
38	थोड़ा हँस लें!	मंत्रम वार्ष्णेय	44
39	कुछ तो लोग कहेंगे	नेहाबेन किशनकुमार अपारनाथी	45
40	धुआँ-धुआँ शहर, बुझती ज़िंदगियाँ	राजेश खंडेलवाल	46
41	इन्सान	श्रीजित बी	46
42	कू ची टनल: वियतनाम की धरती में छिपा वीरता का इतिहास	भूपेंद्र जैन	47
43	स्वस्थ जीवन के लिए योग	मोहित आनंद	49
44	सफर अभी बाकी है	विनोदचंद्र एम पटेल	50
45	LI FI - LIGHT FIDELITY फिडेलिटी लाइट : डेटा ट्रांसमिशन का सरल उपाय	राजेन्द्र एन गायकवाड	51
46	एक काँटे की व्यथा	रेणुका मिश्रा	52
47	एक कोशिश फिर से ...	प्रभु लाल पँवार	52
48	प्रकृति की गोद में - तुंगनाथ, चंद्रशिला और चोपता यात्रा का अनुभव	विश्व मोहन	53
49	चित्र : एब्स्ट्रेक्ट आर्ट	ख़ुशी गदाणी	54
50	अमर बलिदानी प्रताप सिंह बारहठ	विश्वेन्द्र प्रताप सिंह	55
51	ऊर्जानिधि	डॉ. सोनू जैन	56
52	ट्रेन स्ट्रीट: हनोई, वियतनाम	तृषा जे. त्रिवेदी	57
53	आओ देखो राजस्थान	विष्णु कुमार सेन	58
54	वियतनामी कॉफी: इतिहास और विविधता	सोमा करनावट	59
55	राम जी की शपथ और हनुमान जी का रण कौशल	वेद प्रकाश शर्मा	60
56	हरित पटाखों वाली दिवाली	व्योम गदाणी	61
50	हिंदी माह 2025		62
53	राजभाषा कार्यशाला		64

संपादकीय

"नमस्कार, मेरे प्यारे देशवासियों! हम 41 वर्ष बाद वापस अंतरिक्ष में पहुँच गए हैं। यह एक अनूठा सफ़र है। हम 7.5 किलोमीटर प्रति सेकंड की गति से धरती की परिक्रमा कर रहे हैं। मेरे कंधे पर मेरा तिरंगा है, जो मुझे जता रहा है कि मैं अकेला नहीं, बल्कि आप सबके साथ हूं। यह महज मेरी अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन तक की यात्रा की शुरुआत नहीं बल्कि भारत के मानव अंतरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत है..." 25 जून, 2025 को पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र से निकलकर अंतरिक्ष में पहुंचने के कुछ देर बाद गगनयात्री ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला का यह संदेश इस बात का द्योतक है कि भारत समानव अंतरिक्ष उड़ान आकांक्षाओं के एक नए युग में प्रवेश कर चुका है।

इससे पहले, कई उतार-चढ़ावों के बाद, मार्च में अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर 286 दिन बिताने के बाद स्पेसएक्स के ड्रैगन अंतरिक्षयान से भारतीय मूल की अंतरिक्षयात्री सुनीता विलियम्स की पृथ्वी पर सकुशल वापसी, इस प्रकार की उड़ानों की जटिलताओं और चुनौतियों के साथ-साथ इस तथ्य को भी उजागर करती है कि वैश्विक स्तर पर अब अंतरिक्ष उड़ानों की चुनौतियों के प्रबंधन और उनके निराकरण में भी दक्षता प्राप्त कर ली गयी है।

इसरो अध्यक्ष डॉ. वी. नारायणन ने एक ऐतिहासिक घोषणा में 2025 को 'गगनयान वर्ष' घोषित करते हुए कहा है कि अगले कुछ वर्षों में कई मानव और रोबोटिक मिशन, भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन और ऐतिहासिक अंतरराष्ट्रीय सहयोग संगठन के लक्ष्यों में शामिल हैं। पहला मानव रहित गगनयान मिशन दिसंबर 2025 में एक ह्यूमनॉइड रोबोट, व्योममित्र के साथ प्रस्तावित है। यह तीन नियोजित मानव रहित मिशनों में से पहला होगा जो भारत की पहली मानव अंतरिक्ष उड़ान का मार्ग प्रशस्त करेगा, जिसकी 2027 की शुरुआत में उम्मीद है। डॉ. नारायणन के शब्दों में "यह वर्ष हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हमने इसे गगनयान वर्ष घोषित कर दिया है।"

ये मिशन और नवाचार न केवल भारत के तकनीकी कौशल को प्रदर्शित करेंगे, बल्कि यह भी दर्शायेंगे कि मानवीय आवश्यकताओं से लेकर अंतर-ग्रहीय अन्वेषण तक और सामाजिक एवं सामरिक उपयोग के उपग्रहों से लेकर भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन तक, भारत न सिर्फ अंतरिक्ष अन्वेषण में एक वैश्विक शक्ति के रूप में पहले से ही स्थापित है, वरन् 21वीं सदी में अंतरिक्ष विज्ञान के वैश्विक नेतृत्व के बारे में भी गंभीर है।

गगनयान मिशन की सफलता की शुभकामनाओं के साथ...

संपादक मंडल

अभिव्यक्ति
हिंदी गृह पत्रिका
अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, वर्ष 2025, अंक 24

परम संरक्षक
श्री एन. एम. देसाई, निदेशक एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संरक्षक
श्री वी. के. जैन भा.दू.से., नियंत्रक एवं
सह-अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपादक मंडल
श्री नीरज माथुर, समूह निदेशक-एएमएसजी
श्री देवांग मांकड़, वैज्ञानिक/अभियंता-एसजी
श्रीमती निधि सिंह, वैज्ञानिक/अभियंता-एसजी
श्री मुकेश कुमार मिश्र, पुस्तकालय अधिकारी
सुश्री ज्योत्सना लाडकानी, वैज्ञानिक/अभियंता-एसएफ

प्रधान संपादक
श्रीमती नीलू सेठ, उप निदेशक (राजभाषा)

संपादक
डॉ. सोनू जैन, उप निदेशक (राजभाषा)

प्रबंध संपादक
सुश्री सोमा करनावट, कनि. अनुवाद अधिकारी
श्री पवन गुप्ता, वरि.सहायक

सहयोग
सुश्री रजनी सेमवाल, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री जी. एल. त्रिवेदी, वरि. परियोजना सहायक

आलेखी अभिकलन
श्री रमेश ए, वैज्ञा. अधिकारी-सी (मल्टीमीडिया)
सुश्री अंकिता, वैज्ञा. अधिकारी-सी (मल्टीमीडिया)

नोट – इस पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक मंडल का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

निलेश एम. देसाई
निदेशक, सैक एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

संदेश

'अभिव्यक्ति' का यह अंक एक सुअवसर पर प्रकाशित हो रहा है। हाल ही में 30 जुलाई 2025 के शुभ दिवस पर इसरो ने सुदूर संवेदन से संबंधित अत्यंत रोचक अनुप्रयोगों के लिए निसार-नासा इसरो सार- का प्रक्षेपण किया। यह एक सूक्ष्मतरंग प्रक्षेत्र में कार्य करने वाला द्वि-आवृत्ति संश्लेषी द्वारक रडार है जोकि एल-बैंड एवं एस-बैंड में समस्त विश्व के अनेक क्षेत्रों का अध्ययन करने हेतु, विपुल मात्रा में डेटा अर्जित कर रहा है। जैसा कि सभी को ज्ञात है, एस-बैंड की नीतभार प्रणालियों का विकास हमारे अंतरिक्ष उपयोग केंद्र द्वारा किया गया है। एल-बैंड का नीतभार अमेरिका की अंतरिक्ष अनुसंधान एजेंसी नासा से संलग्न जेट प्रोपल्शन लैबोरेट्री (जेपीएल) द्वारा साकार किया गया है। निसार अभियान के अनुप्रयोगों की बात करें तो इसका डेटा पृथ्वी पर होने वाले भू-स्खलन, कृषि क्षेत्र, ग्लेशियर ज़ोन संसूचन, सतह पर पानी की सीमा का अन्वेषण, मृदा नमी का आकलन इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों में उपयोगी होगा। इसके अलावा, बर्फ़ से संबंधित अनेक रोचक अनुप्रयोगों के लिए भी यह डेटा अधिक मात्रा में मददगार साबित होगा। सार इंटरफेरोमेट्री जैसी अद्यतन तकनीकी का उपयोग कर निसार के डेटा से होनहार वैज्ञानिक यह भी पता लगा पाएँगे कि भूकंप जैसी आपदाओं के दौरान सतह में कितनी मात्रा में विरूपण अर्थात् लैंड डिफोरमेशन हुआ है।

यह सर्वविदित है कि इसरो की सबसे महत्वपूर्ण परियोजनाओं में से एक, गगनयान अभियान हेतु अनेक आंतरिक प्रणालियों का विकास सैक में हो रहा है। इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर हमारे केंद्र द्वारा विकसित चालकदल कोंसोल प्रणाली, ऑडियो-वीडियो प्रसंस्करण प्रणाली एवं विज़िबल कैमरा प्रणाली को अंतरिक्ष यान के साथ एकीकृत करने हेतु प्रषित किया गया जोकि गगनयान परियोजना के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

केंद्र में इसके अतिरिक्त अनेक परियोजनाओं पर काम चल रहा है। अंतरिक्ष से प्राप्त डेटा के उपयोगों और अनुप्रयोगों में वृद्धि से आम आदमी के जीवन के स्तर में सुधार आएगा एवं राष्ट्र के विकास का एक स्वर्णिम अध्याय शुरू होगा।

इसी वर्ष हमारे केंद्र ने 53वें साल में प्रवेश किया है और भारत में अंतरिक्ष अनुप्रयोगों की शुरूआत माने जाने वाले 'साइट (SITE)' एक्सपेरिमेंट की भी अर्ध-शताब्दी पूर्ण हो रही है। इस दोगुनी खुशी के अवसर पर अभिव्यक्ति के पाठकों के साथ-साथ केंद्र के सभी पूर्व एवं वर्तमान कार्मिकों तथा उनके परिवारों को 'अभिव्यक्ति' के माध्यम से मैं बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ !!

(निलेश एम. देसाई)
17-11-2025

विवेक कुमार जैन भा.दू.से.
नियंत्रक,एवं
सह-अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक

संदेश

भारत सरकार की राजभाषा नीति प्रेरणा और प्रोत्साहन के माध्यम से हिंदी को लोकप्रिय बनाने पर जोर देती रही है। अंतरिक्ष विभाग के केंद्र/ यूनिट विशुद्ध तकनीकी कार्यों के साथ इस कर्तव्य को भी बखूबी निभाते हैं। इसी का परिणाम है कि अंतरिक्ष विभाग को अनेक बार राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। अंतरिक्ष उपयोग केंद्र को भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति स्तर पर अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। यह केंद्र के सभी उच्चाधिकारियों और कर्मचारियों की मेहनत और लगन का सुफल है।

राजभाषा हिंदी को ज्ञान-विज्ञान की भाषा बनाने की दिशा में भी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं। गत 6 माह के दौरान विभिन्न मंचों पर हमारे वैज्ञानिकों द्वारा सरल हिंदी में लिखी गई 08 तकनीकी पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है। ये पुस्तकें अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को जनभाषा में समझाने का बहुत सुंदर प्रयास करती हैं। हमें विश्वास है कि ये पुस्तकें छात्रों में अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति रुचि जागृत करने में सफल होंगी।

छात्रों में हिंदी के प्रति रुचि जागृत करने के लिए केंद्र में एक और अनूठा कदम उठाया गया है। हम कक्षा 1 से 12 के छात्रों को हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर पुरस्कृत करते हैं। इससे पहली कक्षा से ही उनमें हिंदी में अच्छा प्रदर्शन करने की भावना आती है। अंतरिक्ष विभाग के कई उच्चाधिकारियों द्वारा इस योजना की प्रशंसा और संस्तुति की गई है।

अभिव्यक्ति में कर्मचारियों और उनके परिवारजनों के योगदान से दिन-प्रतिदिन निखार आ रहा है। पत्रिका में कहानी, कविता, यात्रा-वृत्तांत, तकनीकी लेख, वर्ग-पहेली आदि वैविध्यपूर्ण रचनाएं शामिल हैं जिनसे इस अंक की छटा निखर आई है। आशा है कि पाठकों को यह रोचक और विविधतापूर्ण अंक पसंद आएगा।

पत्रिका का प्रकाशन बहुत श्रमसाध्य कार्य है। संपादक मंडल हर अंक को पिछले से अधिक रोचक और ज्ञानवर्धक बनाने में निरंतर लगा हुआ है। अभिव्यक्ति के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल और प्रकाशन से जुड़े सभी व्यक्तियों को हार्दिक बधाई।

वी.के.जैन

(विवेक कुमार जैन भा.दू.से.**)**

07-11-2025

अभिव्यक्ति अंक 23 के विशेष पुरस्कार विजेता

गद्य रचनाओं को पुरस्कार

क्र.	शीर्षक	रचनाकार का नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री/डॉ.)	भाषा वर्ग	गद्य	पुरस्कार
1	मिनिमलिज्म : एक सरल और सार्थक जीवन शैली	हीरालाल करनावट पिता- सोमा करनावट	क	गद्य	प्रथम
2	ऊष्मा की कुछ रोचक बातें	कमलेश कुमार बराया	क	गद्य	द्वितीय
3	जीवन शैली और तनाव: तब और अब	भूपेंद्र जैन विवाहिती- सोमा करनावट	क	गद्य	तृतीय
4	जांबुवन गुफा	किशन अपारनाथी	ख	गद्य	प्रथम
5	संस्कार, संबंध और धन	प्रिंस सोनी	ख	गद्य	द्वितीय
6	नैनीताल यात्रावृत्तांत	वैशाली उमरानिया	ख	गद्य	तृतीय
7	गुजरात के प्रवासी पक्षी: एक विस्तृत अध्ययन	देवुलपल्ली एनवीएसएसएन मूर्ति	ग	गद्य	प्रथम

पद्य/चित्र/विविध रचनाओं को पुरस्कार

1	चित्र	न्यासा जैन पुत्री- सोनू जैन	क	पद्य/ चित्र/अन्य	प्रथम
2	हाड़ी रानी : सहल कुँवर	विष्णु कुमार सेन	क	पद्य/ चित्र/अन्य	द्वितीय
3	उच्च रिजोल्यूशन विभेदन का सफर : टीईएस से कार्टोसैट सीरीज के संग	जितेंद्र कुमार	क	पद्य/ चित्र/अन्य	तृतीय
4	निसार-विज्ञान का नया सितारा	किशन अपारनाथी	ख	पद्य/ चित्र/अन्य	प्रथम
5	आदित्य एल1-सूर्य का अन्वेषक	नेहा विवाहिती- किशन अपारनाथी	ख	पद्य/ चित्र/अन्य	द्वितीय
6	बाकी रह गई	आशिष सोनी	ख	पद्य/ चित्र/अन्य	तृतीय

राजभाषा गतिविधियां

उपलब्धि

- 30 जून 2025 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति ने सैक के राजभाषा कार्यान्वयन का निरीक्षण किया। निरीक्षण समिति ने सैक की प्लासिव लैब, एमआरएसए स्वच्छ कक्ष और सेडा स्वच्छ कक्ष का भी भ्रमण किया। उन्होंने सैक में किए जा रहे राजभाषा कार्यान्वयन की प्रशंसा की और श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए 'अच्छा' श्रेणी प्रदान करते हुए प्रमाण-पत्र प्रदान किया।

पुरस्कार

- केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् की ओर से आयोजित विविध प्रतियोगिताओं में सैक के कर्मचारियों को निम्नलिखित पुरस्कार प्राप्त हुए-

अखिल भारतीय हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पुरस्कार
1.	श्री दिनेश कुमार अग्रवाल	अखिल भारतीय हिंदी भाषी – प्रथम पुरस्कार – रु 2001/- एवं वेजयंती
2.	श्री अपूर्व प्रजापति	अखिल भारतीय हिंदीतर भाषी – प्रथम पुरस्कार – रु 2001/- एवं वेजयंती
3.	श्री सत्यनारायण धाकड़	अखिल भारतीय हिंदी भाषी – द्वितीय पुरस्कार – रु 1501/- एवं वेजयंती
4.	श्रीमती अर्चना भट्ट	अखिल भारतीय हिंदीतर भाषी - द्वितीय पुरस्कार – रु 1501/- एवं वेजयंती
5.	श्री विष्णु कुमार सेन	अखिल भारतीय हिंदी भाषी - तृतीय पुरस्कार- रु 1001/- एवं वेजयंती

अखिल भारतीय वैज्ञानिक तथा तकनीकी लेख प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पुरस्कार
1.	श्री राजकुमार गुप्ता एवं सुश्री दीपिका वसावा	अखिल भारतीय प्रथम स्थान (आचार्य सत्येन बोस पुरस्कार)– रु 3001/- एवं प्रतीक चिह्न
2.	श्री दिनेश कुमार अग्रवाल	अखिल भारतीय तृतीय पुरस्कार - रु 2001/- एवं प्रतीक चिह्न
3.	श्री देवांग मांकड़	हिंदीतर भाषी पुरस्कार- रु 1501/- एवं प्रतीक चिह्न

प्रकाशन/विमोचन

- 26 जून 2025 को नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित राजभाषा विभाग के स्वर्ण जयंती समारोह के दौरान माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के कर-कमलों से सैक के श्री रितेश शर्मा की पुस्तक "भारत की ऐतिहासिक चंद्रयात्रा : चंद्रयान-3" और श्री राहुल जैन की पुस्तक "अथ संचार उपग्रह कथा" का विमोचन किया गया।

- 30 जून 2025 को संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब तथा अन्य सदस्यों के कर-कमलों से सैक के श्री देवांग मांकड़ की पुस्तक "उपग्रह डेटा का सफर : अंतरिक्ष से आप तक" का विमोचन किया गया।

- 14 सितंबर 2025 को महात्मा मंदिर, गांधीनगर में आयोजित हिंदी दिवस एवं पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के कर-कमलों से सैक के वैज्ञानिकों श्री दिनेश कुमार अग्रवाल एवं श्री शिवेंद्र त्रिपाठी की पुस्तक "अंतरिक्ष मिशनों के इलेक्ट्रॉनिक्स उपतंत्र: निर्माण एवं संयोजन" और श्री अरविंद मिश्रा एवं श्री हिमांशु चौरसिया की पुस्तक "अंतरिक्ष यात्रा: कल्पना से कैनवास तक" का विमोचन किया गया।

- 21 मार्च 2025 को निदेशक, सैक के कर-कमलों से अंतरिक्ष उपयोग केंद्र की हिंदी गृह-पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के 23वें अंक का विमोचन किया गया। गया। पत्रिका की ई-प्रति सैक की इंट्रानेट एवं इंटरनेट साइट पर रखी गई और इसकी प्रतियां इसरो/ अं.वि. के सभी केंद्र/ यूनिटों को प्रेषित की गई तथा सैक राजभाषा पोर्टल पर भी अपलोड की गई।

राजभाषा कार्यशाला

- सैक में प्रत्येक तिमाही के दौरान राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। जनवरी-मार्च 2025 तिमाही के दौरान 28 फरवरी 2025, अप्रैल-जून 2025 तिमाही के दौरान 03 जून 2025 एवं जुलाई-सितंबर 2025 के दौरान 30 जुलाई 2025 एवं 22 अगस्त 2025 को राजभाषा कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में संघ की राजभाषा नीति, नियम, कार्यान्वयन तथा कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने संबंधी सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक

- राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक की 180वीं बैठक 11 मार्च 2025, 181वीं बैठक 22 मई 2025 एवं 182वीं बैठक 20 अगस्त 2025 को आयोजित की गई। निदेशक, सैक की अध्यक्षता में आयोजित इन बैठकों में संबंधित तिमाही के दौरान केंद्र में राजभाषा नीति के अनुपालन की समीक्षा की गई। बैठक में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित चर्चा की गई तथा केंद्र में प्रभावी राजभाषा कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

पूल स्तरीय हिंदी तकनीकी संगोष्ठी

- 19 सितंबर 2025 को भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (पीआरएल) में आयोजित पूल स्तरीय हिंदी तकनीकी संगोष्ठी में सैक के 50 वैज्ञानिकों के तकनीकी आलेखों की मौखिक व फ्लैश टॉक के रूप में प्रस्तुति की गई।

आंतरिक राजभाषा निरीक्षण

- केंद्र में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए शत-प्रतिशत कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने हेतु नामित 37 अनुभागों/प्रभागों का

निरीक्षण कार्य हिंदी कार्यान्वयन समीक्षा समिति के द्वारा संपन्न किया गया। तत्पश्चात् समेकित रिपोर्ट निदेशक महोदय को प्रस्तुत की जाएगी।

हिंदी प्रशिक्षण

- अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत पात्र कर्मचारियों के लिए भाषा, टंकण एवं आशुलिपि प्रशिक्षण आवश्यकतानुसार आयोजित किया जाता है। वर्तमान में 04 कर्मचारी प्रवीण प्रशिक्षण हेतु शेष हैं, जिन्हें आगामी सत्र में नामित किया जाएगा।

विविध प्रोत्साहन योजनाएँ

- सरकारी कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु अं.वि./इसरो की प्रोत्साहन योजना "अंतरिक्ष राजभाषा प्रोत्साहन योजना (सोलिस)" के तहत वर्ष 2024-25 के दौरान लागू विविध प्रोत्साहन के अंतर्गत निम्नलिखित प्रविष्टियां प्राप्त हुईं:
  - वर्ष 2024-25 के दौरान अधिकतर कार्यालयीन काम हिंदी में करने हेतु अंतरिक्ष राजभाषा प्रोत्साहन योजना (सोलिस) के अंतर्गत 116 कर्मचारियों के आवेदन प्राप्त हुए।
  - तकनीकी एवं प्रशासनिक अनुभागों में हिंदी कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष 2024-25 हेतु लागू योजना में 20 अनुभाग/प्रभाग के आवेदन प्राप्त हुए।
  - पुस्तकालय की हिंदी पुस्तकों का पठन एवं समीक्षा लेखन योजना के तहत 03 कर्मचारियों को पुस्तकों की समीक्षा भेजने हेतु पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- 19 फरवरी 2025 को वर्ष 2023-24 के लिए लागू केंद्र की विविध प्रोत्साहन योजनाओं, कक्षा 1-9 और 11 के बच्चों के योग्यता पुरस्कार तथा विश्व हिंदी दिवस की प्रतियोगिताओं के पुरस्कार निदेशक, सैक और समूह प्रधान, सीएमजी के कर-कमलों से वितरित किए गए।

हिंदी माह

- 1-30 सितंबर 2025 के दौरान हिंदी माह का आयोजन किया गया। इस दौरान सैक में कार्यरत कर्मचारियों एवं उनके आश्रित परिवार सदस्यों हेतु विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिंदी माह के दौरान आयोजित विविध प्रतियोगिताओं में सैक के लगभग 1175 कर्मचारियों ने भाग लिया। संपूर्ण माह के दौरान कार्यालय में हिंदी में कार्य करने के लिए लोगों में अलग ही उत्साह नजर आया। पुरस्कार वितरण समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत देवी अहिल्याबाई होल्कर के जीवन पर आधारित भव्य नाटक "लोकमाता" प्रस्तुत किया गया, जिसमें 40 से अधिक कर्मचारियों ने भूमिका निभाई। सांस्कृतिक कार्यक्रम की मुख्य अतिथि उ.प्र. की माननीय राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल रहीं।

वेबसाइट

- सैक की इंटरनेट साइट व्योम पर हिंदी संस्करण नियमित रूप से अद्यतित किया जाता है। सैक राजभाषा पोर्टल पर हिंदी कार्यान्वयन से संबंधित सभी जानकारियां अपलोड की जाती हैं एवं नियमित रूप से उसको अद्यतित किया जाता है।
- केंद्र की अन्य आंतरिक वेबसाइट यथा – पुस्तकालय एवं ज्ञान प्रबंधन अनुप्रयोग, वेदास, मॉसडेक, अक्षयपात्र आदि द्विभाषी में उपलब्ध हैं।

हिंदी दिवस एवं पांचवां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

- सैक की सुश्री नेहा गौड़ और श्री विवेक शर्मा का लेख "नवभारत के निर्माण में सहकारिता की भूमिका : एक ऐतिहासिक विश्लेषण" हिंदी दिवस 2025 के अवसर पर राजभाषा भारती की स्मारिका में प्रकाशित हुआ।
- 14-15 सितंबर 2025 को महात्मा मंदिर, गांधीनगर में आयोजित हिंदी दिवस एवं पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में सैक के 27 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

अन्य गतिविधियाँ

- पदोन्नति तथा भर्ती हेतु आयोजित परीक्षाओं के प्रश्न-पत्रों का हिंदी अनुवाद किया गया।
- धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले दस्तावेजों का हिंदी अनुवाद किया गया।
- प्रभाग/अनुभाग की बैठकों में हिंदी में चर्चा, बैठकों के कार्यवृत्त द्विभाषी बनाए गए, विभिन्न फार्मों पर हिंदी में हस्ताक्षर किए गए। फाइलों के शीर्षकों एवं रजिस्टरों में अधिकतम रूप से हिंदी का प्रयोग किया गया। प्रभाग/अनुभाग में प्रयोग में लाये जाने वाले सभी नेम प्लेट, रबर मुहर, पोस्टर, साइन बोर्ड, पैनल आदि द्विभाषी में बनाए गए।
- राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग से प्राप्त वार्षिक कार्यक्रम 2025-26 सैकनेट के माध्यम से सभी कर्मचारियों में परिचालित किया गया।
- राजभाषा विभाग द्वारा 14-15 सितंबर 2025 के हिंदी दिवस एवं पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान जारी की जाने वाली राजभाषा स्मारिका में प्रकाशन हेतु विचार किए जाने के लिए अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के कर्मचारियों द्वारा लिखे गए 13 लेख अग्रेषित किए गए।
- प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान (आईपीआर) एवं इन्फलिबनेट द्वारा 24-25 जुलाई 2025 को आयोजित "विकसित राष्ट्र की दिशा में सरकारी कार्यालयों की भूमिका" विषय पर हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें सैक के 17 वैज्ञानिकों ने आलेख प्रस्तुत किए।
- स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर श्री निलेश एम. देसाई, निदेशक, सैक ने केंद्र में संपन्न तकनीकी एवं अन्य विविध गतिविधियों का विवरण समाहित करते हुए अपना अभिभाषण हिंदी में दिया।
- भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल), अहमदाबाद द्वारा 30 सितंबर 2025 को आयोजित नगर स्तरीय ऑनलाइन स्वरचित हिंदी कविता लेखन प्रतियोगिता में सैक के 4 कर्मचारियों ने भाग लिया।
- केंद्र के सेवानिवृत होने वाले कार्मिकों के लिए प्रत्येक माह आयोजित होने वाले विदाई समारोह संबंधी सभी कार्य हिंदी में किए गए।
- यूआरएससी द्वारा आयोजित की जा रही अंतर केंद्र हिंदी तकनीकी संगोष्ठी में सैक से लगभग 40 तकनीकी एवं राजभाषा संबंधी आलेख प्रेषित किए गए।
- सैक द्वारा कोवा/कोइन्स के 45 प्रशासन संबंधी मॉड्यूल द्विभाषी तैयार करके डिप्लोय किए जाने हेतु एसडीएससी शार को उपलब्ध करा दिए गए हैं।

पाठकों की कलम से

प्रधान आयुक्त का कार्यालय, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर, अहमदाबाद - दक्षिण
Office of the Principal Commissioner, Central Goods and Service Tax, Ahmedabad South
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर भवन, राजस्व मार्ग, आंबावाड़ी, अहमदाबाद-380 015.
Central Goods and Service Tax Building, Revenue Road, Ambawadi, Ahmedabad–380015
दूरभाष सं./Telephone no. - 079-26300405 ई-मेल/ E-Mail – hindi-cgstahdsouth@gov.in
hindi.section1@gmail.com

ई-ऑफिस द्वारा/ ई-फाइल से

कं.सं.-1677544

फा.सं.-II/39-10/2024-राजभाषा/57

सेवा में,

उप निदेशक (राजभाषा),
अंतरिक्ष उपयोग केंद्र,
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन,
अंतरिक्ष विभाग, अहमदाबाद।

विषय: सैक की गृह-पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के 23वें अंक का प्रेषण- के संबंध में।

महोदय,

कृपया आपके कार्यालय द्वारा भेजे गए ई-मेल, दिनांक: 24.03.2025 का सन्दर्भ ले जिसके माध्यम से अंतरिक्ष उपयोग केंद्र की गृह पत्रिका **'अभिव्यक्ति'** का डिजिटल संस्करण प्राप्त किया गया है।

सर्वप्रथम, गृह पत्रिका **'अभिव्यक्ति'** के 23वें अंक के सफल प्रकाशन, विमोचन एवं वितरण हेतु अनेक शुभकामनाएँ। गृह पत्रिका के बाहरी आवरण में एक अति-लोकप्रिय कार्यक्रम के मनमोहक दृश्य से लेकर अंतर्वस्तु की बहुआयामी विषयक सामग्री तक, हिंदी भाषा को वैश्विक परिदृश्य के साथ जोड़कर बड़े ही सुव्यस्थित रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

पत्रिका में विज्ञान के क्षेत्र की नवीनतम गतिविधियों, व्यक्ति-विशेष से संबंधित अनुभवों के अतिरिक्त ***अपनी हिंदी परखें*** एवं ***सूरज कब दूर गगन से*** जैसे भाग हिंदी भाषा के प्रति पाठकों की रुचि और सुदृढ़ करते हैं। विशेषरूप से पत्रिका में चित्रों के माध्यम से पाठकों को अपने परिवेश के प्रति और सजग बनाने का प्रयास सराहनीय है।

'अभिव्यक्ति' के 23वें अंक में पाठकों की पत्रिका से संबंधित प्रतिक्रिया एवं मंतव्यों का सम्मिश्रण पत्रिका को और अधिक विशेष बनाता है। इस अवसर पर पत्रिका के संपादक मंडल एवं अन्य सहभागियों को बधाई।

मंगलकामनाओं सहित।

भवदीया,

Digitally signed by
Anupama Munjal
Date: 06-05-2025
15:00:31

(अनुपमा मुन्जाल)
सहायक निदेशक (राजभाषा)
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर

भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग
इसरो नोदन कॉम्प्लेक्स (आईपीआरसी)
महेंद्रगिरि पी.ओ., तिरुनेलवेली जिला- 627 133
तमिलनाडु, भारत
दूरभाष : 04637-281900 (प्रचालक)
फैक्स : 04637-281 (एक्स्टेंशन)
फैक्स-प्रशासन : 04637-281618
फैक्स-क्रय : 04637-232666
फैक्स-भंडार : 04637-281567
फैक्स-लेखा : 04637-281547

इसरो isro

Government of India
Department of Space
ISRO Propulsion Complex (IPRC)
Mahendragiri P.O., Tirunelveli District - 627 133
Tamil Nadu, India
Telephone : 04637-281900 (Operator)
Fax : 04637-281 (Extn.)
Fax-Admin : 04637-281618
Fax-Purchase : 04637-232666
Fax-Stores : 04637-281567
Fax-Accounts : 04637-281547

आईपीआरसी/हिंक/IPRC/HC/V[1]/2025

मार्च/March 28, 2025

सेवा में/To
श्रीमती नीलू सेठ/Smt. Neelu Seth,
उप-निदेशक(राभा)/Deputy Director(OL),
राजभाषा अनुभाग/Official Language Section
अंतरिक्ष उपयोग केंद्र/Space Applications Centre,
अंबावाडी विस्तार पी ओ/Ambawadi Vistar P.O.,
जोधपुर, टेकरा/Jodhpur, Tekra,
अहमदाबाद/Ahmedabad - 380 015.

महोदय,

दिनांक 24.03.2025 को आपके ई-मेल के माध्यम से हिंदी गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के 23वीं अंक का डिजिटल संस्करण प्राप्त हुआ। सैक द्वारा राजभाषा क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियाँ अत्यन्त अनुकरणीय है। पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेख व उनसे संबंधित चलचित्र मनमोहक है। पत्रिका में प्रकाशित कविताएं व कहानियाँ प्रेरणावर्धक है।

'अभिव्यक्ति' के संपादकीय मंडल को शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

भवदीय

टी. विजय शेखर

(टी विजय शेखर)
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन Indian Space Research Organisation

---

एन्ट्रिक्स ANTRIX
एन्ट्रिक्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(अंतरिक्ष विभाग के अंतर्गत भारत सरकार की एक कंपनी)
ANTRIX CORPORATION LIMITED
(A Government of India Company Under Department of Space)
सी.आइ.एन. / CIN : U85110KA1992GOI013570

एन्ट्रिक्स कॉर्पोरेट कार्यालय, अन्तरिक्ष भवन परिसर,
न्यू बी. ई. एल. रोड, बेंगलूरु - 560 094. भारत
Antrix Corporate Office, Antariksh Bhavan Campus,
New BEL Road, Bengaluru - 560 094. INDIA
दूरभाष / Phone : + 91 80 2217 8302
फैक्स / Fax : + 91 80 2217 8339 / 2217 8349
वेब / Web : www.antrix.co.in

सं/एन्ट्रिक्स/प्रशा./पत्रिका/रा.भा./22/2025

26 मार्च, 2025

सेवा में,
श्रीमती नीलू सेठ
उप निदेशक, राजभाषा
अंतरिक्ष उपयोग केंद्र
अंबावाड़ी विस्तार डाकघर,
अहमदाबाद-380015

विषय: अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (इसरो), अहमदाबाद की हिन्दी की गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" के 23वें डिजिटल संस्करण की प्राप्ति।

महोदया,

1. कृपया दिनांक 24 मार्च, 2025 के अपने ई-मेल संदेश का संदर्भ लें।
2. उपर्युक्त संदेश के साथ संलग्नित, आपके संस्थान द्वारा प्रकाशित और आपके द्वारा प्रेषित राजभाषा गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" का 23वाँ डिजिटल संस्करण हमें प्राप्त हुआ।
3. विविध विषयों को समाहित कर सृजन, संकलन, संपादन और अभिकल्पन के दृष्टिकोण से यह संस्करण पूर्व अंकों की भाँति रोचक और ज्ञानवर्धक तो है ही, विशिष्ट भी प्रतीत होता है।
4. आवरण-पृष्ठ पर कर्णावती की भव्य अंतर्राष्ट्रीय पुष्प-प्रदर्शनी 2025 और समापन-पृष्ठ पर महाकुंभ 2025 के दिव्य निरुपण पत्रिका की कीर्ति को चार चाँद लगा रहे हैं।
5. इसे 'अभिव्यक्ति की विविधा' कही जाए तो शायद अतिशयोक्ति नहीं होगी।
6. पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित समस्त रचनाएँ पठनीय और ज्ञानवर्धक हैं तथा चित्रकारी नयनाभिराम हैं। आलेख; मुद्रण और साज-सज्जा सराहनीय हैं।
7. आप सबों के सार्थक योगदान की साक्षी 'अभिव्यक्ति-23', संपादकमंडल के समस्त सदस्यों एवं रचनाकारों के सराहनीय योगदान की प्रतिकृति है।

सधन्यवाद, सादर;

भवदीया,

(चित्रा विट्टल)
वरिष्ठ प्रबंधक (का. एवं सा. प्र.)

भारत सरकार/Government of India
अंतरिक्ष विभाग/Department of Space
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन/Indian Space Research Organisation
समानव अंतरिक्ष उड़ान केंद्र/Human Space Flight Centre
बेंगलूरु/Bengaluru – 560094

सं.एच.एस.एफ.सी./रा.भा.का./3.4(3) -2025

दि: 07 मई 2025

प्रिय नीलू,

विषय: अंतरिक्ष उपयोग केंद्र की हिंदी गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति-अंक 23" के ई-संस्करण की प्राप्ति ।

*****

सैक की ग्रह-पत्रिका "अभिव्यक्ति" के तेईसवें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ है । इसके लिए आपका धन्यवाद एवं आपको बहुत-बहुत बधाई ।

पत्रिका के इस अंक में भी हमेशा की भाँति बहुत रोचक व ज्ञानवर्धक सामग्री पढ़ने को मिली। ज्ञान-विज्ञान एवं सामान्य सरोकार के विषयों को शामिल किया गया है। 'गुजरात के प्रवासी पक्षी' बहुत ही रोचक जानकारी प्रदान करता है। कुछ कविताएँ तो बड़ी मार्मिक हैं जैसे 'कल और आज' । वहीं 'ए आई' है तो मुमकिन है" के माध्यम से AI के गुण-दोष बहुत ही सुंदर ढंग से उजागर करती कविता है। "परछाईं" में बड़ा ही मर्म-स्पर्शी चित्रण है। 'चित्र संदेश' के द्वारा दिए गए जीवन में अनुकरणीय संदेश बहुत अच्छा लगा। साथ ही, विविध इसरो गतिविधियों पर ज्ञानवर्धन लेख सटीक जानकारी प्रदान करते हैं। इसके लिए अभिव्यक्ति की पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

राजभाषा हिंदी के विकास पथ में योगदान देती 'अभिव्यक्ति' के सुनहरे भविष्य की शुभकामना के साथ,

आपकी,

डीनू रानी
उप निदेशक (राजभाषा)

सेवा में :

श्रीमती नीलू सेठ
उप निदेशक (राजभाषा)

माँ गंगा आरती दर्शन से जुड़ी एक रोचक घटना

जब भी, मैं किसी नदी और नाव को देखता हूँ, मुझे एक घटना याद आ जाती है।

एक बार, मैं अपने चचेरे भाई की शादी में वाराणसी से लगभग 25 कि.मी. दूर अपने गाँव गया था। शादी में कुछ मेहमान मुंबई और कोलकाता से आये थे। उन सबकी बहुत इच्छा थी कि वे शादी के कार्यक्रम के बाद वाराणसी की प्रसिद्ध 'गंगा आरती' के दर्शन करें। अतः मेजबान होने के नाते, मैंने और मेरे बड़े भाई ने उन सभी को 'गंगा आरती' के दर्शन कराने की योजना बनाई। जिन्हें पता नहीं है, उनकी जानकारी के लिए बता दूँ कि वाराणसी में गंगा आरती एक दैनिक आध्यात्मिक अनुष्ठान है जो गंगा नदी के किनारे, खासकर दशाश्वमेध घाट पर आयोजित होता है। इसमें भक्त, आध्यात्मिक साधक और पर्यटक बड़ी संख्या में शामिल होते हैं।

हम सभी संध्या गंगा आरती दर्शनार्थ घर से निकल गए। हम लोग गंगा के एक किनारे थे और आरती बिल्कुल सामने दूसरे किनारे पर होनी थी। अतः, हमें किसी नाव की मदद से उस पार जाना था। सर्दी (नवम्बर) का महीना और दिन ढल जाने के कारण इस घाट पर बहुत कम नावें दिख रही थीं और उनमें से भी कोई जल्दी उस पार ले जाने और वापिस लाने के लिए तैयार नहीं हो रहा था।

समय बीतता जा रहा था, अँधेरा और सर्दी बढ़ती जा रहे थी। हमें डर लगने लगा कि कहीं गंगा आरती दर्शन छूट ना जाए। किसी तरह, एक नौका वाला हमें आरती में ले जाने और वापिस लाने के लिए तैयार हो गया। हम लोग बहुत खुश हुए लेकिन ये खुशी ज्यादा देर नहीं टिकी। नौका छोटी होने की वजह से, उसमें दस से ज्यादा लोग नहीं बैठ सकते थे जोकि सुरक्षा की दृष्टि से सही भी था। हम सब कुल मिलाकर पंद्रह लोग थे। अब दुविधा यह थी कि किसे नाव में बैठाया जाए और किसे नहीं? हमने पहले सभी मेहमानों को नाव में बैठाकर भेज दिया।

अब हम कुल पाँच मेजबान लोग किसी दूसरी नाव की प्रतीक्षा करने लगे। काफी देर बाद, एक नाव वाला हमको दिखा। लेकिन वह काफी बुजुर्ग और कमजोर दिख रहा था। फिर भी वह हमें उस पार ले जाने और लाने के लिए तैयार था। अब चाहे ये उसकी पैसे के प्रति लालच थी या मज़बूरी, जो इतनी सर्दी एवं अँधेरे में हम लोगों को ले जाने-लाने के लिए तैयार था। खैर, हमारे पास भी कोई विकल्प नहीं था, अतः हम लोग भी तैयार हो गए। कुछ देर बाद हम लोग दूसरे किनारे पहुँच गए। बहुत अच्छे से गंगा आरती दर्शन हुए, बहुत ही दिव्य एवं मनमोहक नज़ारा था।

रात के लगभग नौ बज चुके थे, हम सब लोग अब वापिस जाने की तैयारी करने लगे। सभी मेहमानों को उनकी नाव में बैठाकर पहले भेज दिया गया। फिर हम पाँच लोग भी अपनी नाव में बैठकर चल दिए। असली समस्या अब आने वाली थी। जब हम लोग उस किनारे से इस किनारे आये थे तो नदी के धारा-प्रवाह की दिशा में आये थे लेकिन अब उस किनारे वापिस जाने के लिए नदी के धारा-प्रवाह के विपरीत दिशा में जाना था।

हमारी दोनों नावें, शुरू में सही से अपने गंतव्य स्थल की ओर बढ़ रही थीं किन्तु धीरे-धीरे हमारी नाव पिछड़ने लगी और थोड़ी देर बाद तो रुक ही गयी। नाव वाले ने अपने हाथ खड़े कर दिए और बोला कि पानी का बहाव बहुत तेज है और उसमें अब इतनी ताकत नहीं है कि वो बहाव के विपरीत और अधिक नाव चला सके। इतना बोलकर, वह चुपचाप बैठ गया। हम लोग बहुत घबरा गये कि इतनी रात को और वो भी गंगा नदी के बीच में हम कहाँ जायेंगे?

हमने नौका वाले से बहुत अनुरोध किया किन्तु वो अपनी शारीरिक कमजोरी का हवाला देने लगा। हमारी काफी बहस भी हुई कि जब सामर्थ्य नहीं था तो आखिर लेकर आये ही क्यों? किन्तु सब बहस व्यर्थ थी क्योंकि उसके कान पर जूँ तक नहीं रेंगी। कुछ देर बाद, हमारे मेहमानों के कई फोन कॉल्स हमें आने लगे। वे लोग अपनी नाव से दूसरे किनारे पहुँच चुके थे और हमारा इंतज़ार कर रहे थे। हमने उन्हें अपनी समस्या से अवगत कराया। जैसे-जैसे समय बीत रहा था, सर्दी और अँधेरा बढ़ता जा रहा था।

अब हमें लगने लगा कि अगर इस समस्या से निकलना है तो हमें ही कुछ करना पड़ेगा। हमारे सामने 'करो या मरो' जैसी स्थिति हो गयी थी। अतः बड़े भाई और मैंने नाव को खुद चलाने/खेने का सोचा। हम दोनों भाइयों ने पतवार की मदद से नाव को आगे बढ़ाने की कोशिश की, लेकिन यह जितना आसान लग रहा था उतना था नहीं। कभी मेरे द्वारा बल ज्यादा लग जा रहा था तो कभी भाई के द्वारा, जिससे नाव टेढ़ी-मेढ़ी दिशा में जाने लगती। अंत में, हम दोनों भाइयों ने एक साथ, लगभग समान बल से पतवार चलाना शुरू किया तब जाकर हमारी नाव आगे बढ़ने लगी। आदत नहीं होने से, हम दोनों बहुत जल्द ही थक गये, हमारे हाथों में बहुत दर्द हो रहा था किंतु अब हमारे पास आराम करने का समय नहीं था। किसी तरह हिम्मत करके लगातार पतवार चलाते रहे। धीरे-धीरे, हम लोग अपने गंतव्य स्थल की ओर पहुँचने लगे। हमें किनारे आते देख सभी मेहमानों के चेहरे खुशी से खिल गये। हमें नाव चलाते देखकर उनकी आँखें खुली रह गयीं।

हमें भी खुद पर विश्वास नहीं हो रहा था कि हमने ये कर दिखाया। सभी ने हमें बहुत शाबाशी दी।

आँखों में खुशी और दर्द के आँसू लिए हम लोग अपने घर की ओर चल दिए।

अजय कुमार
तकनीकी अधिकारी डी

अजब - गजब है अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS)

अंतरराष्ट्रीय स्टेशन पृथ्वी की परिक्रमा करने वाला एक विशाल अंतरिक्ष यान है। यह अंतरिक्ष यात्रियों के दल के रहने के लिए एक घर के रूप में कार्य करता है और एक अद्वितीय विज्ञान प्रयोगशाला भी है। यह अंतरिक्ष स्टेशन उन पुर्जों से बना है जिन्हें अंतरिक्ष यात्रियों ने अंतरिक्ष में ही जोड़ा था। यह लगभग 250 मील की औसत ऊँचाई पर पृथ्वी की परिक्रमा करता है। चीनी तियांगोंग अंतरिक्ष स्टेशन (TSS), 2021 में शुरू हुआ और चीन द्वारा संचालित है। यह भी एक बहु-मॉड्यूल स्टेशन है जो अंतरिक्ष में वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रयोगों के लिए बनाया गया है।

अंतरिक्ष स्टेशन कितना पुराना है ?

1984 में अंतरिक्ष स्टेशन बनाने के लिए अमेरिका के राष्ट्रपति रीगन ने मंजूरी दी थी और अमेरिकी कांग्रेस ने इसका बजट तय किया था। अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन का पहला हिस्सा नवंबर 1998 में प्रक्षेपित किया गया था। एक रूसी रॉकेट ने रूसी ज़ार्या नियंत्रण मॉड्यूल प्रक्षेपित किया। लगभग दो हफ़्ते बाद, अंतरिक्ष यान एंडेवर कक्षा में ज़ार्या से मिला। अंतरिक्ष यान अमेरिकी यूनिटी नोड ले जा रहा था। चालक दल ने यूनिटी नोड को ज़ार्या से जोड़ा। स्टेशन के लोगों के रहने के लिए तैयार होने से पहले, अगले दो वर्षों में और हिस्से जोड़े गए। पहला चालक दल 2 नवंबर, 2000 को पहुँचा। तब से लोग अंतरिक्ष स्टेशन पर रह रहे हैं। समय के साथ और हिस्से जोड़े गए हैं। नासा और दुनिया भर के उसके सहयोगियों ने 2011 में अंतरिक्ष स्टेशन का निर्माण पूरा किया।

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के उपयोग:

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन का अंतिम लक्ष्य दीर्घकालिक अंतरिक्ष अन्वेषण को सुगम बनाना और मानवता की भलाई के लिए उपयोगी आविष्कार करना है। यहाँ छह अत्याधुनिक प्रयोगशालाएँ हैं जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट अनुसंधान परियोजनाओं को सक्षम बनाती हैं। सूक्ष्म-गुरुत्वाकर्षण वाले स्थानों में जटिल और परिवर्तनशील प्रयोग आसानी से किए जा सकते हैं। विशेष रूप से चिकित्सा के क्षेत्र में, हम ऐसी क्रांतिकारी अनुसंधान परियोजनाओं के साक्षी बन रहे हैं जो पृथ्वी पर असंभव थीं। अति-गुरुत्वाकर्षण और सूक्ष्म-गुरुत्वाकर्षण पर अध्ययन मानव शरीर पर परग्रही परिस्थितियों के प्रभावों को समझने में मदद करते हैं। इसके अलावा, कई नवीन अंतरिक्ष अनुसंधान परियोजनाएँ हैं जो खगोलीय पिंडों के अध्ययन के लिए डिज़ाइन की गई हैं।

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य:

- यह पाँच अंतरिक्ष एजेंसियों का एक अंतरराष्ट्रीय सहयोग है। पंद्रह देश अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन को नियंत्रित करते हैं।
- नासा के अंतरिक्ष यात्री बिल शेफर्ड और अंतरिक्ष यात्री सर्गेई क्रिकेलेव और यूरी गिडज़ेंको अंतरिक्ष स्टेशन पर रहने वाले पहले मानव थे।
- सात लोगों का एक दल 8 कि.मी./ सेकंड की गति से चलते हुए, लगभग हर 1.5 घंटे में पृथ्वी का चक्कर लगाता है।
- एक दिन में यह स्टेशन पृथ्वी के चारों ओर सोलह परिक्रमाएं पूरी करता है तथा सोलह बार सूर्यास्त और सूर्योदय से गुजरता है।
- स्टेशन का रहने का क्षेत्र छह बेडरूम वाले अपार्टमेंट से भी बड़ा है।
- अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में ऐसा सॉफ्टवेयर लगा है जो लगभग 350,000 सेंसरों की निगरानी करता है तथा स्टेशन और चालक दल के सदस्यों पर नज़र रखता है।
- लगभग पचास कंप्यूटर स्टेशन पर सिस्टम का प्रबंधन करते हैं।
- जमीन पर लगभग 3 मिलियन लाइन के सॉफ्टवेयर कोड, लगभग 1.5 मिलियन लाइन के उड़ान सॉफ्टवेयर कोड की सहायता करते हैं।
- मानव शरीर में मांसपेशियों और हड्डियों के घनत्व में होने वाली कमी को पूरा करने के लिए चालक दल के सदस्य प्रतिदिन कम से कम दो घंटे शारीरिक व्यायाम करते हैं।
- बड़े मॉड्यूल और अंतरिक्ष स्टेशन के अन्य पुर्जे 42 अलग-अलग उड़ानों से लाए गए। 37 पुर्जे अमेरिकी अंतरिक्ष शटलों द्वारा और पाँच रूसी प्रोटॉन/सोयुज़ रॉकेटों द्वारा लाए गए।
- आठ मील लम्बा तार अंतरिक्ष स्टेशन की विद्युत प्रणाली को जोड़ता है।
- 55 फुट लंबे रोबोटिक आर्म कैनेडार्म2 में सात जोड़ और दो हाथ हैं। इसका इस्तेमाल बड़े मॉड्यूल को चलाने, प्रयोग करने और अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में ले जाने के लिए किया जाता है।

- एक समय में आठ अंतरिक्ष यान स्टेशन से जोड़े जा सकते हैं।
- औसतन, एक अंतरिक्ष यान पृथ्वी से प्रक्षेपित होने के चार घंटे बाद अंतरिक्ष स्टेशन पर पहुंचता है।
- अंतरिक्ष स्टेशन के बाहर एक समय में लगभग बीस अनुसंधान पेलोड कार्यरत हो सकते हैं।
- अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन हर 24 घंटे में चंद्रमा तक की दूरी तय करता है।

कैसा होगा हमारा भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन

(Bharatiya Antariksh Station - BAS)

भारत अपना खुद का अंतरिक्ष स्टेशन बना रहा है जिसे "भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन" (Bharatiya Antariksh Station - BAS) के नाम से जाना जाएगा। इसका उद्देश्य वैज्ञानिक अनुसंधान, अंतरिक्ष में रहने की क्षमता का विकास और भविष्य के मानवयुक्त अंतरिक्ष अभियानों के लिए एक मंच प्रदान करना है। यहां भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन के कुछ प्रमुख बिंदु दिए गए हैं:

आकार और संरचना:

- इसका आकार अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) से छोटा होगा। इसकी लंबाई लगभग 27 मीटर और चौड़ाई 20 मीटर होगी, जिसका अनुमानित वजन लगभग 52 टन होगा।
- इसमें पांच मॉड्यूल होंगे जो एक कॉमन बर्थिंग मैकेनिज्म (Common Berthing Mechanism) से जुड़े होंगे। इनमें एक बेस मॉड्यूल (BAS-01), एक कोर-डॉकिंग मॉड्यूल (BAS-02), एक विज्ञान अनुसंधान मॉड्यूल (BAS-03), एक प्रयोगशाला मॉड्यूल (BAS-04), और एक कॉमन वर्किंग मॉड्यूल (BAS-05) शामिल होंगे। इसमें इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन की तरह एक कपोला (Cupola) भी होगा, जो अंतरिक्ष यात्रियों को पृथ्वी का मनोरम दृश्य देखने और निरीक्षण करने में सहायता करेगा।
- क्षमता: यह 3-4 अंतरिक्ष यात्रियों को समायोजित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिसमें थोड़े समय के लिए अधिकतम 6 अंतरिक्ष यात्रियों को रखने की क्षमता होगी।
- शुरुआती मिशनों में 15-20 दिनों के लिए अंतरिक्ष यात्रियों को ठहराने की योजना है।

कक्षा: यह पृथ्वी से लगभग 400-450 कि.मी. की ऊंचाई पर निचली कक्षा (Low Earth Orbit - LEO) में परिक्रमा करेगा। इसका झुकाव (inclination) 51.6 डिग्री होगा, जो इसे संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, जापान और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ESA) सहित सभी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय स्पेस-पोर्ट्स तक पहुंचने योग्य बनाएगा।

एक्सीयम-4 (Axiom-4) एक निजी मानवयुक्त अंतरिक्ष मिशन है जिसे अमेरिकी कंपनी Axiom Space द्वारा आयोजित किया जा रहा है। यह अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) के लिए चौथा निजी अंतरिक्ष यात्री मिशन है। इसे एक्सीयम स्पेस और नासा के सहयोग से स्पेस-एक्स के साथ मिलकर संचालित किया जा रहा है।

हमारे लिए गर्व की बात है कि ग्रुप कैप्टन श्री शुभांशु शुक्ला ने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर 18 दिन रहकर भारत का नाम रोशन कर दिया है।

अंतरिक्ष यात्री श्री शुभांशु शुक्ला से प्रधानमंत्री जी का संवाद

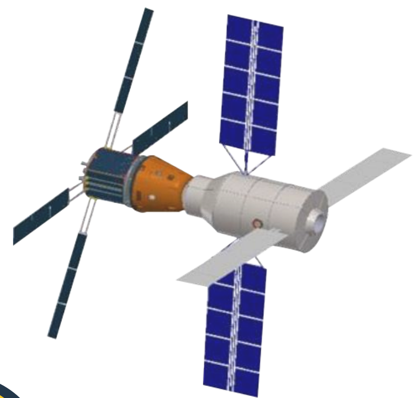

दिनेश कुमार अग्रवाल
वैज्ञा./अभि.-एसजी

गर्मी की छुट्टियों में मेरा पसंदीदा गंतव्य स्थल

गर्मी की छुट्टियों का इंतजार किसको नहीं होता? एक तो अब रोज-रोज विद्यालय आने-जाने का झंझट खत्म, दूसरा अब जितना मन चाहे उतना अपने दोस्तों के साथ खूब खेलो।

अक्सर, हम लोग गर्मी की छुट्टियों में कहीं न कहीं घूमने के लिए जाते हैं लेकिन मुझे अपने दादा-दादी के यहाँ घूमने जाना सबसे अच्छा लगता है।

मेरे दादा-दादी का घर उत्तरप्रदेश में बनारस (वाराणसी) के पास एक छोटे-से गाँव में है।

वहाँ मैं जैसे ही पहुँचता हूँ, आसपास के घरों से मेरे सभी दोस्त तुरंत मेरे पास आ जाते हैं, जिससे मुझे बहुत अच्छा लगता है। हम लोग खूब बातें करते हैं और खूब खेलते हैं।

मैं अपने कुछ खिलौने उन्हें दिखाता हूँ तो वे लोग अपने-अपने कुछ खिलौने मुझे दिखाते हैं।

उन सबके खिलौने कुछ अलग ही रहते हैं, जो दिखने में साधारण, मिट्टी या कपड़ों से खुद से बनाये हुए होते हैं। मुझे उनके खिलौनों से खेलने में बहुत मजा आता है। वे मुझे मिट्टी के खिलौने बनाना भी सिखाते हैं। अपने हाथ से बनाये हुए खिलौने देखकर मैं बहुत खुश होता हूँ और घर में सबको दिखाता हूँ। हम लोग कई तरह के खेल जैसे लुका-छिपी, पुलिस-चोर, गिल्ली-डंडा, टायर रेस, कंचे (मार्बल्स), क्रिकेट, लूडो, इत्यादि खेलते हैं।

दादाजी के घर पर मुझे गाय-भैंस तथा उनके बच्चों के साथ भी खेलने और प्यार करने का मौका मिलता है। मैं उनको अपने हाथ से रोटी, पेड़ के हरे पत्ते तथा हरी-हरी घास खिलाता हूँ। उनको पानी से नहलाता हूँ। दादाजी मुझे अक्सर सुबह और शाम टहलने के लिए और कभी-कभी गंगा स्नान के लिए भी साथ ले जाते हैं।

मेरी प्यारी दादी, अपने घर के आस-पास कई तरह की सब्जियाँ खुद ही उगाती हैं और वो अक्सर उन्हीं सब्जियों की छोटी-छोटी क्यारियों/खेत में ही व्यस्त रहती हैं। मुझे देखते ही, खुश होकर वो मुझे अपने पास खेत में बुला लेती हैं और विभिन्न प्रकार की हरी-ताज़ी सब्जियाँ दिखाती और पूछती हैं कि आज कौन-सी सब्जी खाओगे? मुझे जो भी सब्जी पसंद आती है, वो हम लोग मिलकर तोड़ते हैं। मैं जिन सब्जियों, पेड़-पौधों के बारे में अपनी किताबों में पढ़ता/देखता था, उनको खेत में पैदा होते/बढ़ते हुए देखकर बहुत अच्छा लगता है।

इस तरह सबके साथ हँसते-खेलते मेरी छुट्टियाँ कब बीत जाती है कुछ पता ही नहीं चलता।

इसलिए दादा-दादी का घर मेरा पसंदीदा गंतव्य स्थल है।

श्रेयश गुप्ता
पुत्र – अजय कुमार (तकनीकी अधिकारी-डी)

पेड़ लगाओ-पर्यावरण बचाओ

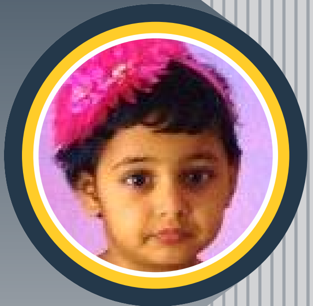

नयोनिका वार्ष्णेय

पुत्री-जितेन्द्र कुमार (वैज्ञा./अभि.-एसएफ)

निशिका मकाणी

पुत्री-क्रिष्मा एस. मकाणी (तकनीकी अधिकारी डी)

मिट्टी के बर्तनों में छिपा स्वास्थ्य का रहस्य

भूमिका

मिट्टी के बर्तनों का उपयोग भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से होता आ रहा है। वैदिक युग में, ये बर्तन न केवल भोजन पकाने के लिए बल्कि उसे शुद्ध और पौष्टिक बनाए रखने के लिए भी उपयोग किए जाते थे। आज, जब प्लास्टिक और धातु के बर्तन स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचा रहे हैं, मिट्टी के बर्तन फिर से लोकप्रिय हो रहे हैं। आइए हम मिट्टी के बर्तनों का इतिहास, उनके स्वास्थ्य लाभ, और आधुनिक जीवन में उनके पुनः प्रयोग के बारे में जानते हैं।

मिट्टी के बर्तनों का ऐतिहासिक ओर सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

भारत में मिट्टी के बर्तनों का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। खुदाई के दौरान सिंधु घाटी सभ्यता (3300-1300 ईसा पूर्व) में मिट्टी के बर्तनों के प्रमाण मिले हैं। वैदिक काल में, इन्हें भोजन पकाने, भंडारण और पूजा-अर्चना के लिए उपयोग किया जाता था। महाभारत और रामायण में भी इनका उल्लेख मिलता है।

प्राचीन काल में, मिट्टी के बर्तन बनाना एक कला थी, और कुम्हारों, शिल्पकारों द्वारा यह परंपरा पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ती रही। हर क्षेत्र की अपनी विशेष शैली थी, जैसे कि राजस्थान की मटकी, उत्तर प्रदेश का कुल्हड़ और बंगाल का टेराकोटा मिट्टी के दीपक, कलश और हवन कुण्ड का उपयोग धार्मिक क्रियाओं में किया जाता रहा है। दीपावली पर मिट्टी के दियों का जलाना और विवाह समारोह में मिट्टी के कलश की पूजा करना इनकी महत्ता को दर्शाता है। भारतीय त्योहारों,जैसे-मकर संक्रांति, छठ पूजा, और गणेश उत्सव में मिट्टी के बर्तनों और मूर्तियों का विशेष स्थान है। भारतीय गाँवों में आज भी कुल्हड़ में चाय और मिट्टी के घड़े से पानी पीने की परंपरा बनी हुई है। ये न केवल स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में भी योगदान देते हैं।

मिट्टी के बर्तनों के उपयोग के लाभ

1. स्वास्थ्य लाभ

मिट्टी के बर्तन प्राकृतिक रूप से विषमुक्त होते हैं। इनमें खाना पकाने से कोई हानिकारक रसायन भोजन में नहीं घुलते। मिट्टी में क्षारीय गुण होता है, जो भोजन की अम्लीयता को संतुलित रखता है और पाचन तंत्र के लिए लाभकारी होता है। मिट्टी के बर्तनों में पकाया गया भोजन हल्का और सुपाच्य होता है।

2. तापमान संतुलन

मिट्टी के बर्तन धीरे-धीरे गर्म होते हैं और धीरे-धीरे ठंडे होते हैं, जिससे खाना सही तापमान पर पकता है और जलने की संभावना कम रहती है।

3. पर्यावरण अनुकूलता

- मिट्टी के बर्तन जैविक होते हैं और पर्यावरण के लिए सुरक्षित हैं।
- इन्हें बनाने में प्लास्टिक और धातु की तुलना में कम ऊर्जा लगती है।
- उपयोग के बाद ये आसानी से प्रकृति में समा जाते हैं।

4. स्वाद और सुगंध में वृद्धि

मिट्टी के बर्तनों में पकाया गया भोजन एक खास प्राकृतिक स्वाद और सुगंध लिए होता है, जो इसे और अधिक स्वादिष्ट बनाता है।

5. बीमारियों से बचाव

- मिट्टी के बर्तनों में खाना बनाने से पेट संबंधी समस्याएँ कम होती हैं।
- इन बर्तनों का उपयोग करने से हृदय रोग, मधुमेह और हाई ब्लड प्रेशर जैसी बीमारियों का खतरा कम होता है।

आधुनिक समय में मिट्टी के बर्तनों की स्थिति

1. भारतीय रसोई में वापसी

- कई मशहूर रेस्टोरेंट और घरों में मिट्टी के बर्तन दोबारा इस्तेमाल किए जाने लगे हैं।
- कुल्हड़ चाय, मिट्टी की हांडी में बिरयानी और दही जमाने के लिए मिट्टी के मटकों की मांग बढ़ रही है।

2. बाजार में बढ़ती लोकप्रियता

- ऑनलाइन शॉपिंग प्लेटफॉर्म और स्थानीय बाजारों में अब मिट्टी के बर्तन आसानी से उपलब्ध हैं।
- पारंपरिक कुम्हारों को रोजगार मिलने लगा है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी बल मिल रहा है।

3. शहरी जीवन में जागरूकता

- स्वास्थ्य विशेषज्ञ और न्यूट्रीशनिस्ट मिट्टी के बर्तनों के उपयोग को बढ़ावा दे रहे हैं।
- कई लोग प्लास्टिक के बर्तनों को त्यागकर इनका प्रयोग कर रहे हैं।

मिट्टी के बर्तनों का सही उपयोग और देखभाल

1. खरीदते समय ध्यान दें

- अच्छी गुणवत्ता वाली मिट्टी से बने बर्तन खरीदें।
- अधिक चमकदार या रासायनिक लेप वाले बर्तनों से बचें।

2. उपयोग से पहले तैयारी

- नए बर्तनों को कुछ घंटों के लिए पानी में भिगोना चाहिए।
- पहले कुछ बार इन्हें धीमी आंच पर ही इस्तेमाल करें।

3. सफाई और रखरखाव

- इन्हें साबुन की जगह नींबू, हल्दी या बेकिंग सोडा से साफ करें।
- धूप में सुखाने से इनकी आयु बढ़ती है।

मिट्टी के बर्तन केवल अतीत की धरोहर नहीं हैं, बल्कि आधुनिक जीवन के लिए एक स्वस्थ और टिकाऊ विकल्प भी हैं।

आइए, हम मिट्टी के बर्तनों की ओर लौटें और एक स्वस्थ एवं प्रदूषण मुक्त जीवनशैली अपनाएँ!

अपारनाथी किशनकुमार मोहनगर
तकनीशियन-एफ

नीरा आर्या : एक अनकही-अनसुनी दास्तां

जेलर आस्कड - "वेयर इज सुभाष?"

शी रिप्लाइड - "ही इज इन माय हार्ट!"

जेलर अगेन आस्कड - "वेयर इज सुभाष?"

शी रिप्लाइड - "ही इज अलाइव इन माय हार्ट..."

गुस्से से तिलमिलाए जेलर ने ब्रेस्ट रिपर से भारत की उस बहादुर बेटी का एक ब्रेस्ट काटने का आर्डर दे दिया।

यह कहानी है भारत की पहली महिला गुप्तचर (जासूस), नीरा आर्या की!

नीरा आर्या, नेताजी सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिंद फौज में 'रानी झांसी रेजीमेंट' की एक बहुत कम उम्र की विश्वसनीय महिला सिपाही थीं। इनके पति सीआईडी इंस्पेक्टर श्रीकांत जयरंजन दास अंग्रेजों के लिए काम करते थे तथा अंग्रेजों के प्रति बहुत निष्ठावान भी थे। ये इनकी दृढ़ इच्छाशक्ति ही थी जिसकी वजह से इन्होंने अंग्रेजों के सामने कई बार जासूसी की और उनमें सफल भी रहीं। इस महिला को भारत की पहली महिला जासूस भी कहा जाता है।

नीरा जब गुप्तचर थीं तब उनको निर्देश था, यदि अंग्रेजों की पकड़ में आ जाएं तो बिना सोचे-समझे स्वयं को गोली मारकर वीरगति प्राप्त कर लें। वे हिंदी, अंग्रेजी और बंगाली के साथ अन्य भारतीय भाषाएं भी बोल लेती थीं। देश को स्वतंत्रता दिलाने का जुनून नीरा आर्या पर इस कदर हावी हो चुका था कि एक दिन अंग्रेजों ने श्रीकांत जयरंजन को नेताजी सुभाषचंद्र बोस को मारने की जिम्मेदारी दी। जयरंजन दास खुफिया तरीके से किसी तरह सुभाषचंद्र बोस के पास जा पहुंचे। वह उन्हें मारने ही वाले थे कि उनकी पत्नी नीरा ने उन्हें पहचान लिया। इससे पहले कि वह नेताजी को अपनी गोली का शिकार बनाते, नीरा ने संगीन निकालकर अपने पति जयरंजन दास के पेट में घोंप दी और उसे मौत के घाट उतार दिया तथा नेताजी को बचा लिया। ऐसा त्याग और समर्पण विरले ही कहीं देखने-सुनने में आता है। नीरा की इस वीरता और त्याग को देखकर नेताजी दंग रह गए और उनको नया नाम 'नागिनी' दिया।

आजाद हिंद फौज के समर्पण के बाद नीरा को पति की हत्या के आरोप में काला पानी की सजा सुनाई गई। वहां उन्हें घोर यातनाएं दी गई। यहां उन्हें एक छोटी सी कोठरी में (पूर्व प्रकाशित सैक हिंदी पत्रिका अंक 18 में "सजा-ए-काला पानी", लेख में विस्तार से वर्णित है), जहां सूर्य की एक किरण भी ना आती हो, लोहे की जंजीरों में बांधकर रखा गया एवं लगातार उनके साथ बदसलूकी की जाती रही।

एक दिन जेलर ने उनसे पूछा, 'अगर तुम यह बता दो कि नेताजी कहां हैं तो हम तुम्हें छोड़ देंगे', लेकिन उन्होंने किसी भी हालत में अपना मुंह नहीं खोला। नेताजी के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए उन पर बर्बर अत्याचार किए गए। लोहे की सलाखों से उनके शरीर को दागा गया, लेकिन वे यातनाएँ सहती रहीं!

नेताजी की मृत्यु प्लेन क्रैश में हुई थी यह बात हर जगह फैल चुकी थी, फिर भी अंग्रेजों को यह विश्वास नहीं था कि नेताजी मर चुके हैं! अंग्रेजों को नेताजी का बहुत डर था इसीलिए अंग्रेज नीरा से पूछते कि सुभाष कहां छिपे हैं? नीरा बोलती थीं, उनकी तो हवाई दुर्घटना में मौत हो गई है, ये बात पूरी दुनिया जानती है। परंतु अंग्रेज सरकार नेताजी की मृत्यु को स्वीकार नहीं कर पा रही थी। नीरा को जानकारी देने के बदले जमानत देने तक का लालच दिया जाता। लेकिन उन्होंने नेताजी या आजाद हिंद फौज के अन्य साथियों के संदर्भ में कभी कुछ नहीं बोला।

अंग्रेजों के जेलर द्वारा बार-बार "नेताजी कहां हैं-कहां हैं" पूछने पर नीरा बोलती थीं कि नेता जी मेरे हृदय में हैं। यह सुनकर एक दिन जेलर ने गुस्से में कहा कि ठीक है हम तुम्हारे दिल को चीरकर निकालकर देखेंगे कि नेताजी कहां हैं?

नमन है देश की इस बहन को, इस बेटी को, इनके साहस एवं बहादुरी को, इनकी सहनशीलता को, इनकी वफादारी को। यह देश यूँ ही महान नहीं कहलाता, देश को आज़ादी दिलाने वालों में पुरुषों के साथ महिलाओं का योगदान कहीं कम नहीं था। इतिहास के पन्ने चुनिंदा नाम ही प्रमुखता से प्रस्तुत करते हैं लेकिन नीरा जैसे अनगिनत लोगों का हमारी स्वतंत्रता में बहुत बड़ा योगदान है।

जितेन्द्र कुमार
वैज्ञा./अभि.-एसएफ

अपोप्सिस क्षुद्रग्रह ; पृथ्वी पर संभावित खतरा

अपोप्सिस क्षुद्रग्रह हमारे सौरमंडल में स्थित एक क्षुद्रग्रह है जो 13 अप्रैल 2029 को पृथ्वी के बहुत करीब से गुजरेगा। पूर्व में इसे पृथ्वी के लिए संभावित खतरा माना जा रहा था हालाँकि वैज्ञानिकों ने अपनी सटीक गणनाओं से यह सुनिश्चित किया है कि ये क्षुद्रग्रह पृथ्वी से नहीं टकराएगा परंतु पृथ्वी के अति निकट (<35000 किमी) से गुजरेगा और उस वक्त इसे पृथ्वी से नंगी आँखों द्वारा भी देखा जा सकेगा। प्रस्तुत लेख में इस क्षुद्रग्रह के बारे में रोचक जानकारी और विश्व की विभिन्न अंतरिक्ष एजेंसियों द्वारा अत्याधुनिक संवेदकों से निरीक्षण की योजना के बारे में विस्तार से बताया गया है।

हमारा सौरमंडल विविधताओं से भरा हुआ है। इसके केंद्र में सूर्य है तथा चारों तरफ आठ ग्रह (बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, अरुण और वरुण) परिक्रमा करते हैं। इसके अलावा हमारे सौरमंडल में बहुत सारे क्षुद्रग्रह हैं जो मुख्यतः क्षुद्रग्रह बेल्ट (main Asteroid belt) में पाए जाते हैं। यह क्षुद्रग्रह बेल्ट मंगल और बृहस्पति की कक्षाओं के बीच है। इनमें से कोई क्षुद्रग्रह किसी निकटतम ग्रह (बृहस्पति, मंगल) की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के प्रभाव में अपनी कक्षा बदल लेता है, तब उस ग्रह के और नजदीक चले जाने की संभावना बढ़ जाती है और कभी कभार उस ग्रह पर गिरने की संभावना भी बढ़ जाती है।

हम पृथ्वीवासियों का सौभाग्य है कि इस क्षुद्रग्रह बेल्ट के निकट बृहस्पति ग्रह है जो पृथ्वी से लगभग 318 गुना भारी है और उसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति भी पृथ्वी से तीन गुना से अधिक है। इसकी वजह से अपनी कक्षा से भटके अधिकांश क्षुद्रग्रह बृहस्पति की तरफ मुड़ जाते हैं और उनके पृथ्वी की तरफ आने की संभावना कम हो जाती है। अन्यथा वर्तमान की अपेक्षा कई गुना अधिक और बड़े क्षुद्रग्रह पृथ्वी से टकराते और संभवतः पृथ्वी पर कभी भी जीवन पनप नहीं पाता। अतः बृहस्पति का होना हम पृथ्वीवासियों के लिए बहुत बड़ा वरदान है। कई पाठकों को विदित भी होगा कि 30 वर्ष पहले तारीख 16 जुलाई 1994 को शूमेकर लेवी नामक अति विशाल क्षुद्रग्रह बृहस्पति से टकराया था।

अपोप्सिस क्षुद्रग्रह इसी क्षुद्रग्रह बेल्ट से निकला है जिसकी खोज वर्ष 2004 में पीक नेशनल वेधशाला (Kitt Peak National Observatory-USA) के वैज्ञानिकों द्वारा की गयी थी। यह क्षुद्रग्रह लगभग 335 मीटर व्यास का है और इसकी बनावट कुछ हद तक मूंगफली के दाने जैसी है और यह पथरीले सिलिकेट पदार्थों और निकल-लोहे के मिश्रण से बना है। इसका द्रव्यमान लगभग 26 बिलियन किलोग्राम है जो अगर पृथ्वी पर गिरे तो करीब एक महाद्वीप जितने क्षेत्रफल को पूर्णतः नष्ट कर सकता है और पृथ्वी पर करीब 1 अरब लोगों की जान जा सकती है।

यह क्षुद्रग्रह 13 अप्रैल 2029 को पृथ्वी के बहुत नजदीक से गुजरेगा। ऐसा अवसर 5 से 10 हजार वर्षों में एक बार आता है, अतः उस वक्त अपोप्सिस क्षुद्रग्रह का विस्तार से अध्ययन किया जा सकता है और क्षुद्रग्रह के कई अनसुलझे रहस्यों को समझा जा सकता है। इसके लिए यूरोपियन अंतरिक्ष एजेंसी रामसिस (Ramses : Rapid Apophis Mission for Space Safety) मिशन के प्रक्षेपण की योजना बना रही है। यह मिशन अपोप्सिस क्षुद्रग्रह के बहुत नजदीक से गुजरेगा और क्षुद्रग्रह के बारे में कई नई जानकारियां एकत्र करेगा। रामसिस में कई उपकरण और संवेदक लगाये जाएंगे जो क्षुद्रग्रह की सतह के तापमान, सतही बनावट, खनिज, बर्फ और उसके मूलकों की उपस्थिति, घूर्णन गति, लौह और अन्य तत्वों की उपस्थिति, सूक्ष्म वातावरण इत्यादि का विस्तार से अध्ययन करेंगे और संभवतः इसरो भी प्राप्त आंकड़ों का अध्ययन करेगा। आशा है कि इस मिशन से प्राप्त जानकारी ब्रह्मांड और पृथ्वी पर जीवन संबंधित अनसुलझे रहस्यों को सुलझाने में मदद करेगी और हम पृथ्वीवासी भविष्य में किसी और क्षुद्रग्रह के खतरे से निपटने की रूपरेखा बना सकेंगे।

डॉ. हरीश सेठ
वैज्ञा./अभि.-एसजी

16 जनवरी 2025 को भारत अंतरिक्ष में दो उपग्रहों को डॉक करने वाला चौथा देश बन गया। इससे पहले यह प्रौद्योगिकी केवल अमरीका, रूस और चीन के पास ही थी। भारत ने **स्पेडेक्स** के सफल प्रयोग के साथ इस विशिष्ट क्लब में शामिल होकर अपना नाम दर्ज कराया है।

स्पेडेक्स के दोनों उपग्रह (SDX01 और SDX02) 30 दिसंबर, 2024 को पीएसएलवी- सी 6 0 द्वारा एसडीएससी, शार से ~470 कि.मी. की वृत्ताकार कक्षा में 55° के झुकाव पर प्रमोचित किये गए थे। शुरुआत में वे थोड़ी दूरी पर अलग-अलग कक्षा में छोड़े गए, ताकि बाद में एक-दूसरे से मिलने की प्रक्रिया को नियंत्रित तरीके से शुरू किया जा सके।

अंतरिक्ष डॉकिंग प्रयोग (**SP**ace **D**ocking **EX**periment) का उद्देश्य दो छोटे उपग्रहों (~220 Kg) का उपयोग करके अंतरिक्ष यानों के मिलन, डॉकिंग और अनडॉकिंग के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करना और उसका प्रदर्शन करना है।

क्यों चाहिए डॉकिंग-अनडॉकिंग?

यह तकनीक हमारे भविष्य के अंतरिक्ष कार्यक्रमों जैसे चंद्रयान-4 (Moon sample return), भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (BAS), चंद्रमा पर गगनयात्री को ले जाना आदि के लिए बहुत आवश्यक है और स्पेडेक्स उसी दिशा में एक छोटा-सा कदम है। स्पेस-डॉकिंग का महत्व भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन और अन्य समानव अंतरिक्ष अभियानों में इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि इससे सामान, ईंधन व उपकरणों का आदान-प्रदान, अंतरिक्षयात्रियों की आवाजाही और लंबी अवधि के मिशनों में मरम्मत का काम संभव होता है।

क्या है स्पेस-डॉकिंग?

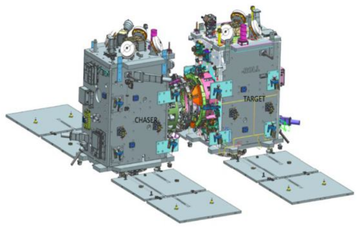

जब दो स्पेसक्राफ्ट अंतरिक्ष में एक-दूसरे से जुड़ते हैं तो इसे स्पेस डॉकिंग कहते हैं। मतलब, दो अंतरिक्ष यान अपनी कक्षा में घूमते हुए धीरे-धीरे एक दूसरे के पास आते हैं, फिर सावधानी से आपस में गले मिलते हैं और जुड़कर एक हो जाते हैं। इसको इस तरह से सोच सकते हैं कि **दो चलती हुई कारें आपस में जुड़ने की कोशिश करें**। अंतर बस यह है कि अंतरिक्ष में न कोई सड़क है, न गाइड लाइन और न ही गलती की कोई गुंजाइश। इसमें एक अंतर यह भी है कि चूँकि अंतरिक्ष यान वृत्ताकार कक्षा में घूम रहे हैं, इनकी गति में कोई भी परिवर्तन इनकी कक्षा को भी बदल देगा। मतलब चलती हुई कार अपनी लेन भी बदल देगी। इसीलिए इस काम में सावधानी, सटीक गणना और समय बहुत मायने रखता है।

कैसे हुई यह डॉकिंग?

पीएसएलवी रॉकेट ने दोनों अंतरिक्ष यानों को ~470 कि.मी. की वृत्ताकार कक्षा में स्थापित किया। शुरुआत में वे थोड़ी दूरी पर अलग-अलग कक्षा में तैर रहे थे, ताकि बाद में एक-दूसरे से मिलने की प्रक्रिया को नियंत्रित तरीके से शुरू किया जा सके।

सबसे पहले दोनों अंतरिक्ष यानों को एक-दूसरे के पास लाते हैं। यह इतना सरल भी नहीं है, क्योंकि गणनाओं में थोड़ी भी गलती हुई तो ये आपस में टकरा भी सकते हैं। इसके लिए अति सटीक उड़ान

(super precise flying) की आवश्यकता होती है, जिसमें यान की स्थिति को बदलने और समायोजित करने के लिए विशेष संवेदकों और थ्रस्टरों का प्रयोग करते हैं।

पहला चरण था **"Rendezvous"** यानी दोनों यानों का एक-दूसरे की कक्षा में प्रवेश। इस दौरान SDX01 ने अपने थ्रस्टर्स से छोटे-छोटे इम्पल्स देकर धीरे-धीरे SDX02 से दूरी घटाई।

Rendezvous के बाद **"Approach"** यानी पोर्ट अलाइनमेंट शुरू हुआ। इसमें लेज़र रेंज फाइन्डर और प्रोक्सिमिटी सेंसरों की मदद से दूरी को मिलीमीटर तक मापा गया, और रिलेटिव वेलोसिटी को लगभग 10 मि.मी./सेकेंड तक घटाया गया।

एलाइनमेंट पूरा होने पर दोनों यानों के डॉकिंग पोर्ट्स ने संपर्क स्थापित किया। स्वदेशी भारतीय डॉकिंग सिस्टम (BDS) ने हैच को लॉक कर दिया, जिससे दोनों यान एक ठोस यूनिट में बदल गए- बिलकुल लीगो ब्लॉक्स की तरह!

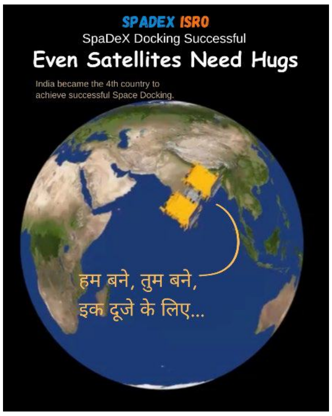

इस पूरी प्रक्रिया में इंटर-सैटेलाइट कम्युनिकेशन लिंक ने निरंतर डेटा आदान-प्रदान किया। दोनों यान आपस में दिशा और गति की जानकारी शेयर करते रहे। डॉकिंग के बाद SDX02 ने SDX01 को बिजली ट्रांसफर भी की।

चुनौती:

स्पेस डॉकिंग की सबसे बड़ी चुनौती माइक्रोग्रैविटी में सही दिशा-निर्देशन, थ्रस्टर कंट्रोल और कम ईंधन में काम पूरा करना है। अंतरिक्षयान के छोटे-से झटके भी पूरे ऑपरेशन को असफल कर सकते हैं, इसलिए इसरो ने कई ग्राउंड ट्रायल्स और सिमुलेशन किए।

स्पेडेक्स की सफलता ने साबित कर दिया कि भारत नवाचार में पीछे नहीं है। अब हम गगनयान मानव मिशन, चंद्रयान-4 मिशन और भविष्य के भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन के लिए तैयारियों में एक महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ चुके हैं।

कुछ दर्द बयां नहीं होते, पर दुःख तो दे जाते हैं,
चेहरे पर होती है हँसी, पर दिल में गम होते हैं।

चिल्ला-चिल्ला के बताने का मन तो करता है,
पर खामोशी से शब्दों को निगलना पड़ता है।

दो आंखों के पीछे छलकता बांध हरा-भरा सा है,
पर सूखी जमीं पर आंसुओं का अकाल हो जाता है।

सुनते किसी के शब्द, तो सुना है घाव भर जाते हैं,
और धीरे-धीरे दीवारों के कान भी गायब हो जाते हैं।

कहते हैं छूने से भी दर्द कहीं दूर चला जाता है,
स्पर्श का वो संवेदन अब समझ में आता है।

नासूर बन जाते हैं कुछ दर्द, जिसकी दवा नहीं होती,
'आश' इतना समझ, बिना दर्द कोई जिंदगी नहीं होती।

आशिष सोनी
वैज्ञा./अभि.-एसएफ

उम्मीद है आपको डॉकिंग का कांसेप्ट सरल भाषा में समझा पाया हूँ। और जानकारी के लिए इस लिंक पर देखें:

https://www.isro.gov.in/mission SpaDeX.html

सीखते रहिये, सिखाते रहिये।

राहुल जैन
वैज्ञा./अभि.-एसजी

हिंद की माटी में जन्मा लाल,
नाम है जिसका शुभांशु बेमिसाल।
दिन में बुनता सपनों के उजले फेरे,
रात में गिनता तारों के उज्ज्वल डेरे,
लकीरें खींचीं जहाँ क्षितिज भी थमे,
आसमान से आगे सपनों के घेरे।

भारत की धड़कन, इसरो की शान,
उसने पकड़ी विज्ञान की कमान।
नन्हा था जब, आँखों में अंगार जगा,
तभी ठान लिया, नभ का हर द्वार छुएगा।
भारत का गौरव ऊँचा रखा
विश्वपटल पर फिर इक बार भारत का नाम लिखा,
इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन की सैर करी,
नई-नई वहां तकनीकें सीखीं
देशभक्ति का जज़्बा वहाँ ले गया,
हर भारतवासी का सिर गर्व से ऊंचा किया।

जहाँ तारे हैं, वहाँ अब हिंद की छाप है,
ज्ञान-विज्ञान में अग्रणी भारतिंद है।
जिसने भी सोचा भारत तो बहुत पीछे है,
देखो, अब अंतरिक्ष में भी हम बहुत आगे हैं।

डॉ. विक्रम साराभाई का था सपना,
हर भारतीय देखे अंतरिक्ष अपना।
आज वो सपना हो रहा साकार,
जब शुभांशु जैसे बनते हैं आधार।

इसरो की छलांग, अब चाँद के पार,
सूरज को भी छूकर, अब नई राह पर जाने को तैयार।
मंगलयान से आदित्य तक का अभियान,
दुनिया कर रही है भारत को प्रणाम।

वैज्ञानिकों की मेहनत रंग लाई,
धरती से अंतरिक्ष की अब दूरी घटाई।
हर बच्चे को दिखा दी राह,
तुम भी छू सकते हो अंतरिक्ष का आकाश।

अपना भी इक अंतरिक्ष स्टेशन बनाएंगे,
अपना तिरंगा उस पर फहराएंगे।

जय हो इसरो, जय हो विज्ञान,
जय हो भारत का सच्चा सम्मान।
नभ से ऊँचा उड़ता स्वाभिमान,
हिंद के वीरों को सौ-सौ प्रणाम।

प्रीति अग्रवाल
विवाहिती- दिनेश कुमार अग्रवाल (वैज्ञा./अभि.-एसजी)

दु:ख क्या रोना-धोना

चला पता कि पापा का मेनिस्कस हो गया है टियर,
धीमा पड़ गया उनके लॉन टेनिस खेल का गियर।

घुटना जिसका आकार लगभग हेमी-स्फियर,
लिगामेंट भी है बिलकुल उसके रियर।

सर्जरी करा ली, बिना कोई फियर,
पर दूर न हुआ दर्द का एटमोस्फियर।

शुरू की फिजियोथेरपी जो घर से हमारे नियर,
वहां के थेरापिस्ट भी हैं, अच्छे और सुपिरियर।

धीरे-धीरे जायेगा दर्द, लेट्स एन्जॉय एंड चियर,
दु:ख क्या रोना-धोना, वी विल सून ओवरकम डियर।

हनी सोनी
पुत्री-आशिष सोनी (वैज्ञा./अभि.-एसएफ)

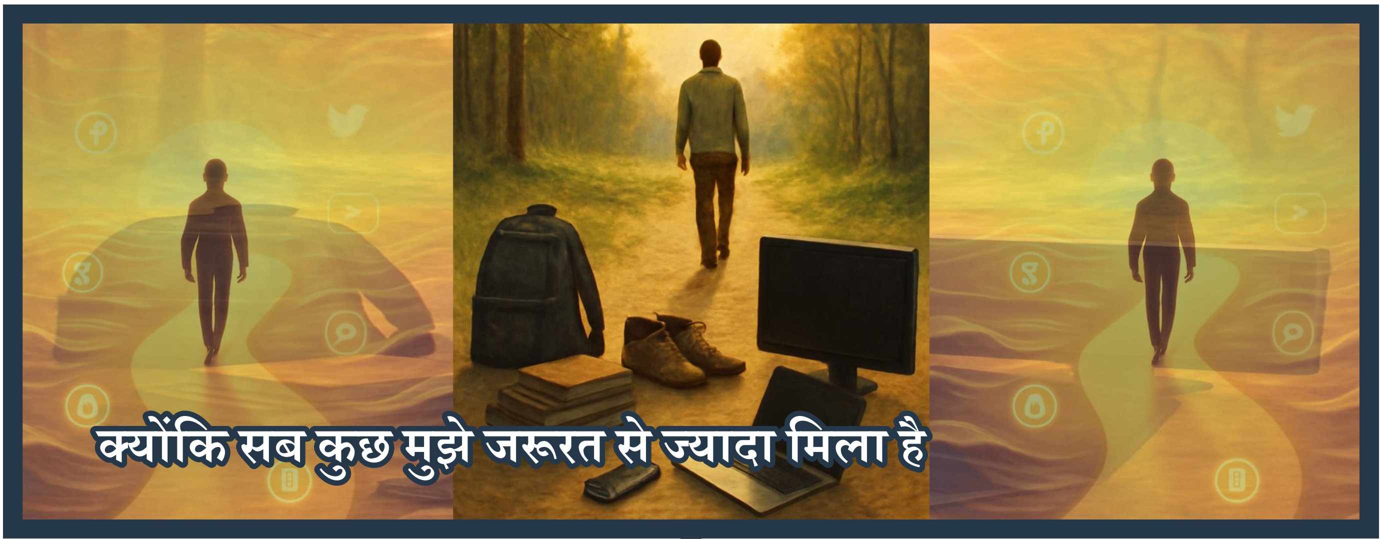

क्योंकि सब कुछ मुझे जरूरत से ज्यादा मिला है

मैं शायद ज्यादा संतुष्ट होती
मगर मैं नहीं हूँ
क्योंकि सब कुछ मुझे जरूरत से ज्यादा मिला है

लहलहाते खेतों में मस्ती से घूमती
आम के पेड़ों से फल तोड़ के झूमती
मोबाइल और टीवी में गर्मी की छुट्टियाँ ना बीतती
और कानों पर मोटे चश्मे की डंडियाँ ना होती
फेसबुक और इन्स्टाग्राम पर नहीं,
मैं दोस्तों की टोली में ऑनलाइन रहती

मैं शायद ज्यादा स्वस्थ होती
मगर मैं नहीं हूँ
क्योंकि टेक्नोलॉजी की वैक्सीन का डोज़,
मुझे जरूरत से ज्यादा मिला है

चेहरे पर अनुभव की झुर्रियाँ होती
पर साफ उजली चमक भी होती
रसायनों से अपने दागों को ना भरती
ना व्यर्थ में नए रोगों को आमंत्रण देती
खुशबूदार लुभावने कोस्मेटिक्स से नहीं,
मुल्तानी मिट्टी के लेप से खुद को निखारती

मैं शायद ज्यादा सुंदर होती
मगर मैं नहीं हूँ
क्योंकि दिखावे के मुखौटे को लगाने का फितूर,
मुझे जरूरत से ज्यादा मिला है

मैं शायद खादी का कपड़ा ही कातती
और विदेशी कपड़ों के पीछे ना भागती
स्वदेशी पहनावे में छुपे संस्कारों को पहचानती
और विदेशी ब्रैंड्स के प्रलोभन में ना आती

मैं शायद ज्यादा सरल होती
मगर मैं नहीं हूँ
क्योंकि पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुसरण करने का पागलपन,
मुझे जरूरत से ज्यादा मिला है

कड़कती धूप में मीलों चलती
पर वायु में प्रदुषण का अंश मात्र भी ना छोड़ती
गर्मी से बचने के लिए एयर-कंडीशनर चला कर
ग्लोबल-वार्मिंग को और ना बढ़ाती
सृष्टि के पालने को अपने लिए ही नहीं,
अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी बचाती

मैं शायद प्रकृति माँ की प्यारी बेटी होती
मगर मैं नहीं हूँ
क्योंकि अपने जीवन को आराम दायक बनाने का जुनून,
मुझे जरूरत से ज्यादा मिला है

चिड़िया की तरह एक छोटे से घोंसले में रहती
एक से दूसरा, दूसरे से तीसरा घर खरीदने की होड़ में ना दौड़ती
जितनी जरूरत है बस उतना ही संचय करती
न्यूनतम संसाधनों में जीती और जीने की प्रेरणा देती
पृथ्वी सिर्फ मानव जाति की ही नहीं,
सबकी है इस बात को समझती

मैं शायद मिनिमलिस्टिक जीवन-शैली की प्रचारक होती
मगर मैं नहीं हूँ
क्योंकि खुद को सर्वश्रेष्ठ प्रजाति समझने का गुरूर,
मुझे जरूरत से ज्यादा मिला है

समिधा जैन
वैज्ञा./अभि.-एसएफ

अग्नि सुरक्षा: सुरक्षित जीवन की आधारशिला

सुरक्षा का परिचय

सुरक्षा मानव जीवन के कल्याण और अस्तित्व का मूल आधार है। यह एक ऐसा तंत्र है जो समाज को भयमुक्त होकर जीने, काम करने और विकास करने की अनुमति देता है। सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं में से अग्नि सुरक्षा (Fire Safety) का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। मानव सभ्यता के विकास में सहायक रही अग्नि, अनियंत्रित होने पर विनाश का कारण भी बन सकती है। आग लगने की घटनाएं न केवल जीवन हानि करती हैं, बल्कि संपत्ति, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था को भी गंभीर नुकसान पहुँचाती हैं। इसलिए अग्नि सुरक्षा केवल एक कानूनी आवश्यकता नहीं, बल्कि एक सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी भी है।

रोकथाम (Prevention): पहली और सबसे अहम रक्षा पंक्ति

अग्नि सुरक्षा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू **रोकथाम** (Prevention) है। आग की अधिकांश घटनाएं लापरवाही, अनजाने में हुई गलतियों या सुरक्षा मानकों के अभाव के कारण होती हैं। कुछ मुख्य रोकथाम उपाय इस प्रकार हैं:

- **साफ-सुथरी व्यवस्था:** ज्वलनशील कचरे को हटाकर कार्यस्थल या घर को व्यवस्थित रखना।
- **ज्वलनशील पदार्थों का सुरक्षित उपयोग और भंडारण।**
- **विद्युत सुरक्षा:** तारों, प्लग और उपकरणों का नियमित निरीक्षण और रखरखाव।
- **प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम:** आग लगने पर क्या करें, इसके लिए समय-समय पर ड्रिल और प्रशिक्षण।
- **भवन निर्माण के मानकों का पालन:** अग्निरोधी सामग्रियों और डिजाइनों का प्रयोग।

थोड़े से सचेत प्रयास से बड़ी दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है।

आग के प्रकार

आग को उसके ईंधन के प्रकार के अनुसार श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

- **कक्षा A**: लकड़ी, कपड़ा, कागज, प्लास्टिक जैसी सामान्य ज्वलनशील वस्तुएं।
- **कक्षा B:** पेट्रोल, डीजल, शराब, पेंट आदि ज्वलनशील द्रव्यों से उत्पन्न आग।
- **कक्षा C:** एलपीजी, प्रोपेन, मिथेन जैसे ज्वलनशील गैसों से उत्पन्न आग।
- **कक्षा D:** मैग्नीशियम, टाइटेनियम जैसी ज्वलनशील धातुओं से उत्पन्न आग।
- **कक्षा K/F:** रसोई के तेल और वसा से उत्पन्न आग।

इसके अतिरिक्त, **विद्युत आग** भी एक विशेष श्रेणी मानी जाती है, जिसमें विद्युत उपकरणों की खराबी से आग लगती है। लेकिन इस श्रेणी को उपरोक्त सूची से हटा दिया गया है क्योंकि अगर आग बुझाने से पहले विद्युत को बंद कर देंगे तो वह आग कक्षा A, B, C एवं D की श्रेणी में ही आ जाती है और उस आग को उस श्रेणी के हिसाब से बुझाया जा सकता है।

आग के प्रकार की सही पहचान करना आवश्यक है ताकि उपयुक्त तरीके से उसे बुझाया जा सके।

अग्निशामक यंत्रों के प्रकार

प्रत्येक प्रकार की आग के लिए उपयुक्त अग्निशामक यंत्र का प्रयोग करना जरूरी है:

- **जल आधारित अग्निशामक:** केवल कक्षा A की आग के लिए (लाल रंग का पट्टा)
- **फोम आधारित अग्निशामक:** कक्षा A और B की आग के लिए **उपयुक्त** (पीले रंग का पट्टा)
- **ड्राई केमिकल पाउडर अग्निशामक:** कक्षा A, B और C की आग के लिए (नीले रंग का पट्टा)

- **कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) अग्निशामक:** कक्षा B और विद्युत आग के लिए **(काले रंग का पट्टा)**
- **वेट केमिकल अग्निशामक:** कक्षा K/F की आग के लिए (खासकर रसोई में)
- **विशेष धातु अग्निशामक:** कक्षा D की आग के लिए

गलत अग्निशामक का प्रयोग आग को और बढ़ा सकता है, इसलिए अग्निशामक यंत्रों का सही ज्ञान और प्रशिक्षण आवश्यक है।

Type (Fire → / Extinguisher ↓)	CLASS A Combustible materials (e.g. paper & wood)	CLASS B Flammable liquids (e.g. paint & petrol)	CLASS C Flammable gases (e.g. butane and methane)	CLASS D Flammable metals (e.g. lithium & potassium)	Electrical Electrical equipment (e.g. computers & generators)	CLASS F Deep fat fryers (e.g. chip pans)	Comments
Water	✓	✗	✗	✗	✗	✗	Do not use on liquid or electric fires
Foam	✓	✓	✗	✗	✗	✗	Not suited to domestic use
Dry Powder	✓	✓	✓	✓	✓	✗	Can be used safely up to 1000 volts
CO2	✗	✓	✗	✗	✓	✗	Safe on both high and low voltage
Wet Chemical	✓	✗	✗	✗	✗	✓	Use on extremely high temperatures

पिछले दस वर्षों में प्रमुख अग्नि दुर्घटनाएँ

पिछले दशक में कई भीषण अग्नि दुर्घटनाएँ हुईं, जो हमें आग की भयावहता और सुरक्षा उपायों की आवश्यकता का एहसास कराती हैं:

- 2015 – वलपराइसो, चिली: जंगलों में लगी भीषण आग ने 2500 से अधिक घर नष्ट कर दिए।
- 2018 – कैंप फायर, कैलीफ़ोर्निया: कैलीफ़ोर्निया की अब तक की सबसे विनाशकारी जंगल आग।
- 2019 – नोट्रे-डेम कैथेड्रल, पेरिस: ऐतिहासिक धरोहर को आग से भारी क्षति पहुँची।
- 2019 – दिल्ली फैक्ट्री अग्निकांड: खराब भंडारण और निकास मार्गों के अभाव से 40 से अधिक श्रमिकों की मौत।
- 2020 – ऑस्ट्रेलियाई जंगल की आग: करोड़ों एकड़ जंगल जलकर राख हो गए, बहुत सारे पशु-पक्षी प्राण गंवा बैठे और जान-माल का नुकसान भी हुआ।
- 2021 – कोविड-19 अस्पतालों में आग: भारत, रूस और इराक में कई अस्पताल आग की घटनाओं से प्रभावित हुए।
- 2025 - कैलीफ़ोर्निया के जंगल में लगी आग।
- हर साल पटाखे बनाने वाली अनेक जगहों पर आग से जान-माल का नुकसान

इन घटनाओं से यह स्पष्ट होता है कि अग्नि सुरक्षा को कभी भी हल्के में नहीं लेना चाहिए।

इनके अलावा, विमानन क्षेत्र में भी आग संबंधी दुर्घटनाएं हुई हैं जैसे टोरंटो में विमान उतरने के बाद उल्टा होने और जापान में लैंडिंग के दौरान आग लगना इत्यादि। गौर करने वाली बात है कि इन दुर्घटनाओं में किसी की जान नहीं गयी और सभी यात्रियों को सुरक्षित निकाला गया क्योंकि वहां के लोग अग्निशमन के मोक ड्रिल, आपातकाल और एस.ओ.पी (SOP) बहुत गंभीरता से लेते हैं तथा उसका अनुसरण करते हैं।

बाल-बाल बचना (Near Miss) ऐसा घटनाओं की रोकथाम

नियर मिस वे घटनाएँ हैं जहाँ दुर्घटना होते-होते रह जाती है। यदि इन्हें गंभीरता से लिया जाए, तो बड़ी दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है:

- नियमित सुरक्षा निरीक्षण: संभावित खतरों की पहचान करना।
- खुला रिपोर्टिंग सिस्टम: कर्मचारियों को असुरक्षित परिस्थितियों की रिपोर्टिंग के लिए प्रोत्साहित करना।
- घटनाओं का विश्लेषण और सुधारात्मक कार्यवाही।
- आपातकालीन ड्रिल और प्रशिक्षण: वास्तविक स्थिति में शीघ्र प्रतिक्रिया के लिए अभ्यास।
- प्रौद्योगिकी का उपयोग: स्मार्ट सेंसर और अलार्म सिस्टम का प्रयोग।

निकट चूक पर ध्यान देना भविष्य की बड़ी आपदाओं को टालने का प्रभावी तरीका है।

अग्नि सुरक्षा का भविष्य: 2025 से 2035 तक का रोडमैप

आने वाले दशक में अग्नि सुरक्षा को और मजबूत बनाने के लिए कई कदम उठाए जाने चाहिए:

- स्मार्ट अग्नि पहचान और शमन प्रणाली: AI और IoT आधारित तकनीकों का प्रयोग।
- सतत और अग्निरोधी निर्माण सामग्री: पर्यावरण के अनुकूल और आग से सुरक्षित निर्माण।
- जन जागरूकता अभियान: स्कूलों, कॉलेजों और कार्यालयों में नियमित प्रशिक्षण।
- डेटा आधारित नीतियाँ: पुरानी घटनाओं से सीखकर नए सुरक्षा मानक बनाना।
- तेज आपातकालीन प्रतिक्रिया: ड्रोन और रोबोट के माध्यम से तेजी से बचाव कार्य।
- वैश्विक सहयोग: अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फायर फाइटिंग तकनीकों और अनुभवों को साझा करना।
- ग्रीन फायर मैनेजमेंट: प्राकृतिक जंगलों में नियंत्रित ज्वलन और संरक्षण के उपाय।

आने वाला समय अग्नि सुरक्षा में तकनीक, नीति और समाज के सम्मिलित प्रयासों का युग होगा।

निष्कर्ष

अग्नि सुरक्षा एक सामूहिक जिम्मेदारी है, जिसे केवल कानून या नियमों से नहीं, बल्कि हर व्यक्ति के भीतर जागरूकता और सतर्कता से ही सुनिश्चित किया जा सकता है। आग के प्रकारों की समझ, उपयुक्त अग्निशामक यंत्रों का प्रयोग, पूर्व की दुर्घटनाओं से शिक्षा, और निकट चूक घटनाओं को गंभीरता से लेना, यह सब हमारी सुरक्षा संस्कृति का हिस्सा बनना चाहिए। यदि हम आज से सतर्क हो जाएं, तो भविष्य को सुरक्षित और समृद्ध बना सकते हैं।

देवुलपल्ली एनवीएसएसएन मूर्ति
वैज्ञा./अभि.-एसएफ

सैटलाइट का जादू – एक अद्भुत कहानी

सुहानी रात थी। आसमान एकदम साफ था और तारे ऐसे टिमटिमा रहे थे जैसे किसी ने गहरी नीली-काली चादर पर हीरे टाँक दिए हों। ठंडी हवा चल रही थी, अपने दादाजी-दादीजी के साथ छुट्टियां बिताने गाँव आए रिया और अर्जुन अपनी छत पर दरी बिछाकर लेटे हुए थे।

अर्जुन: रिया, यहाँ गाँव में कितना सुहाना मौसम है, क्या तुझे पता है कि ऊपर ये तारे तो चमकते हैं, लेकिन टीवी में जो मौसम की जानकारी आती है, वो कहाँ से आती है ?

रिया: नहीं अर्जुन, और जब मम्मी गूगल मैप्स खोलती हैं तो वो भी कार को खुद-ब-खुद रास्ता बता देता है। वो कैसे होता है? क्या वो सब आसमान के तारों से ही आता है?

अर्जुन: वही तो आश्चर्य की बात है रिया कि ये सब अपने आप कहाँ से और कैसे आता है?

इतनी ही देर में दादाजी छत पर आ गए, बच्चों की बातें उनके कानों में पड़ चुकी थीं।

दादाजी: क्या बातें हो रही हैं बच्चों?

रिया (हँसकर): दादाजी, हम बात कर रहे थे कि आसमान में जो तारे हैं, क्या उन्हीं से हमें इंटरनेट और मौसम की खबरें मिलती हैं?

दादाजी (मुस्कराते हुए): नहीं बेटा, तारे तो सूर्य जैसे बहुत दूर होते हैं। लेकिन हाँ, कुछ चीज़ें जो तारे जैसी दिखती हैं, वे हमारी बनाई हुई हैं, उन्हें कहते हैं सैटेलाइट। चलो, आज मैं तुम्हें 'सैटेलाइट के जादू' के बारे में बताता हूँ, एक कहानी जो अंतरिक्ष से शुरू होकर हमारे घर तक आती है।

रिया और अर्जुन (एक साथ खुशी से): अरे वाह दादाजी, मजा आ जायेगा, जल्दी सुनाइए न।

दादाजी : बच्चों जैसा कि तुम लोग जानते ही हो कि हमारी पृथ्वी बहुत विशाल है और उसमें बहुत से रहस्य, संभावनाएं छुपी हुई हैं जो हमेशा से ही हमारे लिए आकर्षण और आश्चर्य का विषय रही हैं। इसलिए बहुत समय पहले, वैज्ञानिकों ने सोचा कि अगर धरती के ऊपर एक मशीन घूमती रहे और वो धरती की तस्वीरें, मौसम की जानकारी और सिग्नल भेजे, तो काम बहुत आसान हो जाएगा। उन्होंने बहुत मेहनत से उसे बनाया और उसे आज हम सैटलाइट कहते हैं, वैज्ञानिकों ने रॉकेट बनाये और उनके ज़रिए सैटलाइट्स को धरती की कक्षा में भेजना शुरू किया।

धीरे-धीरे ये सैटलाइट हमारे जीवन का हिस्सा बन गए, पर बात यहीं खत्म नहीं हुई। इन सैटेलाइट्स के लिए बनाई गई तकनीकों ने कई और नए आविष्कारों को जन्म दिया। इन्हें कहते हैं - स्पिन-ऑफ टेक्नोलॉजीज़।"

रिया: यह तो बहुत रोचक है दादाजी, आगे बताइए न।

दादाजी: तुम्हें याद है जब पिछले महीने बारिश का अलर्ट आया था और स्कूल बंद कर दिया गया था?

अर्जुन: हाँ! और पापा ने छत से पानी की निकासी पहले ही साफ करवा ली थी।

दादाजी: वो अलर्ट सैटलाइट्स की मदद से ही आया था। ये सैटलाइट बादलों की गतिविधियों को ट्रैक करते हैं और मौसम वैज्ञानिकों को जानकारी भेजते हैं, जिससे समय पर चेतावनी दी जा सकती है। इसके साथ ही समुद्र किनारे बहुत बड़ा तूफ़ान आया था।

रिया: हाँ दादाजी और हम सब कितने डरे हुए थे कि क्या होगा, लोगों को कैसे बचायेंगे?

दादाजी: पर सब आसानी से समय पर संभल गया न, न कोई जनहानि हुई और न ही माल सामान का ज्यादा नुकसान, वो भी

समय रहते इन सेटलाइट्स से मिली जानकारी के कारण संभव हो पाया।

अब सोचो, जहाँ अस्पताल नहीं हैं, वहाँ डॉक्टर कैसे पहुँचें? वहां सैटलाइट संचार तकनीक के ज़रिए डॉक्टर और मरीज वीडियो कॉल पर जुड़ सकते हैं, इसे कहते हैं टेलीमेडिसिन। इतना ही नहीं, सैटलाइट्स में इस्तेमाल हुई इमेजिंग तकनीक अब कैंसर, ब्रेन और हार्ट की बीमारियाँ पहचानने के लिए भी इस्तेमाल हो रही है।

अर्जुन: यह तो हमारे लिए वरदान है दादाजी।

दादाजी: हाँ, यही नहीं किसानों को भी सैटलाइट्स ने बहुत तकनीकी सहारा दिया है। ऊपर से ली गई तस्वीरें उन्हें बताती हैं कि फसल की हालत क्या है, मिट्टी कैसी है और कहाँ कितना पानी चाहिए, कब कौन-सी फसल बोनी चाहिए।

रिया: मतलब सैटलाइट तो किसान अंकल की भी मदद करता है?

दादाजी: बिलकुल! इससे फसल की पैदावार बढ़ती है और पानी की बचत होती है। अब जो तुम बोल रही थीं न तुम्हारे गूगल मैप्स की, उसमें जो नीला तीर रास्ता दिखाता है, वो भी जीपीएस नामक सैटलाइट सिस्टम से जुड़ा है। इससे तुम रास्ता नहीं भूलते और गाड़ियाँ, ट्रक, हवाई जहाज़ सभी, सही समय पर सही जगह पहुँचते हैं। तुम्हारे पिज्जा बर्गर वगैरह की डिलीवरी कंपनियाँ भी जीपीएस से अपने पार्सल को ट्रैक करती हैं (हँसते हुए)।

सैटलाइट्स समंदर में जहाज़ों को ट्रैक करने में मदद करते हैं। इससे जहाज़ों की सुरक्षा होती है और मुसीबत में समय पर मदद पहुँचाई जा सकती है।

पहले अपने गाँव में इंटरनेट तो क्या फोन की भी सुविधा नहीं थी, ऐसे ही सैकड़ों गाँव हमारे देश में थे, पर आज जहाँ मोबाइल टावर नहीं पहुँचते, वहाँ सैटलाइट से इंटरनेट पहुँचाया जाता है। इससे अब लगभग हर दूर-दराज के गाँव में भी बच्चे ऑनलाइन पढ़ सकते हैं, किसान मंडियों के रेट जान सकते हैं, मौसम की जानकारी लेते हैं और अपना सामान पूरे विश्व में बेच सकते हैं।

रिया: ये तो बहुत ही सुविधाजनक है दादाजी।

दादाजी: वही तो, कई चीजें जो हमने केवल अंतरिक्ष के लिए बनाई या सोची थीं वो अब हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में बहुत काम आ रही हैं।

अर्जुन: वो कैसे दादाजी?

दादाजी : वैज्ञानिकों ने सैटलाइट बनाने के लिए हल्की लेकिन मज़बूत सामग्री बनाई थी। अब वही सामग्री प्लेन, कार, साइकल और हेलमेट जैसी चीज़ों में इस्तेमाल हो रही है। इसे कहते हैं स्मार्ट मटीरियल। पहले सोलर पैनल सिर्फ सैटलाइट्स को बिजली देने के लिए बने थे। लेकिन अब वे घरों की छतों पर लगते हैं और सूरज की रोशनी से बिजली बनाते हैं।

दादाजी: बच्चों, देखा तुमने, कैसे एक तकनीक जो सिर्फ अंतरिक्ष के लिए बनाई गई थी, आज खेत, अस्पताल, स्कूल, सड़क और घरों में काम आ रही है। विज्ञान जब कुछ बनाता है, तो उसका असर पूरी दुनिया पर होता है।

रिया (मुस्कराते हुए): दादाजी, ये सैटलाइट तो असली सुपर हीरो निकली!

दादाजी (हँसते हुए): बिलकुल! और मुझे यकीन है कि एक दिन तुम भी ऐसे सुपर हीरो वाले आविष्कार कर सकते हो। सैटलाइट तकनीक ने न सिर्फ अंतरिक्ष विज्ञान को आगे बढ़ाया, बल्कि उसके स्पिन-ऑफ आविष्कारों ने हमारी ज़िंदगी को आसान, सुरक्षित और बेहतर बना दिया। बेटा यह कहानी केवल एक कहानी नहीं है यह हमें यह बताती है कि एक छोटा सा वैज्ञानिक प्रयास भी बड़े सामाजिक परिवर्तन की नींव रख सकता है और हमारे जीवन को बहुत सुगम बना सकता है।

प्रीति अग्रवाल
विवाहिती- दिनेश कुमार अग्रवाल (वैज्ञा./अभि.-एसजी)

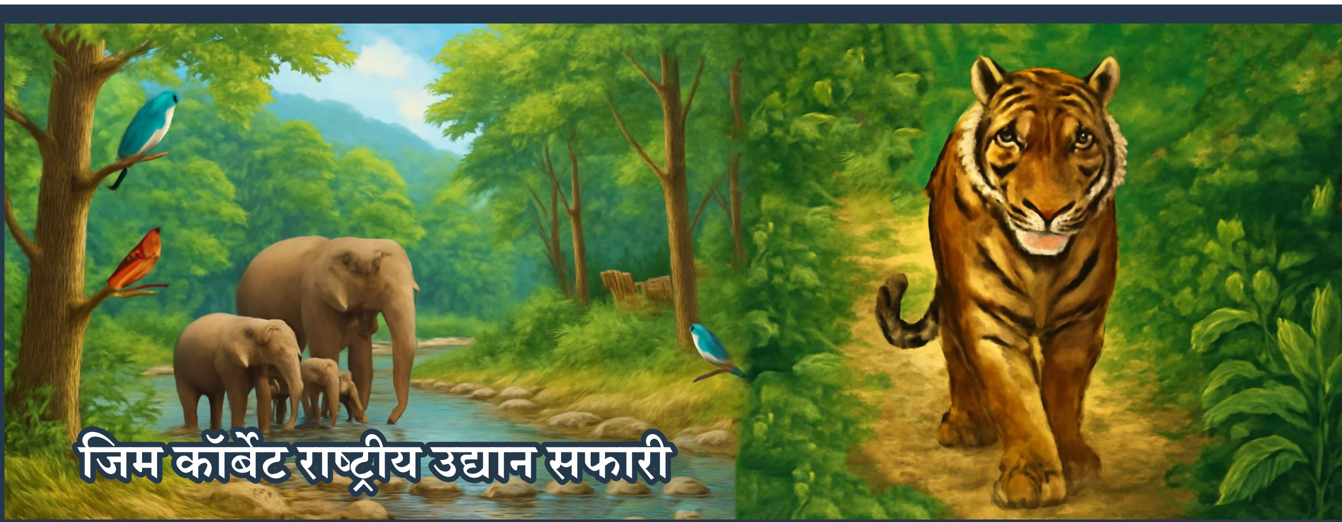

जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान सफारी

जिम कॉर्बेट भारत का पहला राष्ट्रीय उद्यान है, जिसकी स्थापना सन् 1936 में हुई थी। यह भारत के उत्तराखंड राज्य में स्थित है और अपनी प्राकृतिक सुंदरता, विविध वन्यजीव, और संरक्षण प्रयासों के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। इस उद्यान का नाम प्रसिद्ध ब्रिटिश शिकारी और प्राकृतिक प्रेमी जेम्स वॉल्टर कॉर्बेट (Jim Corbett) के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने इस क्षेत्र के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह उद्यान न केवल भारत में वन्यजीव संरक्षण का एक प्रतीक है, बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी अद्भुत जैव विविधता के कारण प्रसिद्ध है। हम नवंबर में सफारी के लिए गये थे। हमने सात लोगों के लिए एक जीप बुक की थी जो हमें जंगल में चार घंटे घुमाने वाली थी। हमें ढेला क्षेत्र की अनुमति मिली थी। दोपहर को खाना खाने के बाद जंगल में गये। यह काफी घना जंगल था।

जिम कॉर्बेट का नाम इस क्षेत्र के संरक्षण के साथ ही जुड़ा हुआ है। उन्होंने अपने जीवन के दौरान इस क्षेत्र में बहुत मेहनत की और वन्यजीव संरक्षण के लिए अपनी जान तक दे दी। उनका मानना था कि वन्यजीवों का संरक्षण मानव जीवन का भी अभिन्न अंग है। उनके प्रयासों ने इस क्षेत्र को वनों और वन्यजीवों के संरक्षण का मॉडल बना दिया। हमने जिम कॉर्बेट म्यूजियम देखा जहाँ से हमें काफी जानकारी मिली।

जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान उत्तराखंड के नैनीताल, अल्मोड़ा, पौड़ी और रुद्रप्रयाग जिलों में स्थित है। यह लगभग 520 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसमें जंगल, नदियाँ, झरने और प्राकृतिक जल स्रोत शामिल हैं। यह उद्यान हिमालय की तराई में स्थित है, जो इसे विशेष बनाता है।

उद्यान की जलवायु समशीतोष्ण है, जिसमें गर्मियों में तापमान 30 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है, जबकि सर्दियों में यह शून्य से नीचे गिर सकता है। मानसून के दौरान यह क्षेत्र अत्यंत हरा-भरा हो जाता है, और भारी वर्षा के कारण यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता और भी बढ़ जाती है। वर्षा का मौसम जुलाई से सितंबर तक रहता है, जो वन्यजीवों के जीवन चक्र के लिए महत्वपूर्ण है।

जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान में कई संरचनाएँ और टूरिस्ट सुविधाएँ हैं। इसमें मुख्य रूप से रिसोर्ट, जिप्सी ट्रिप्स, झूला, ट्री हाउस आदि शामिल हैं, जो पर्यटकों को जंगल का अनुभव कराते हैं। इन संरचनाओं का निर्माण पर्यटकों के आराम और वन्यजीव संरक्षण के बीच संतुलन बनाने के लिए किया गया है। यहाँ प्रवेश करने के लिए धारी, जिम कॉर्बेट और रामनगर द्वार जैसे विभिन्न प्रवेश द्वार हैं।

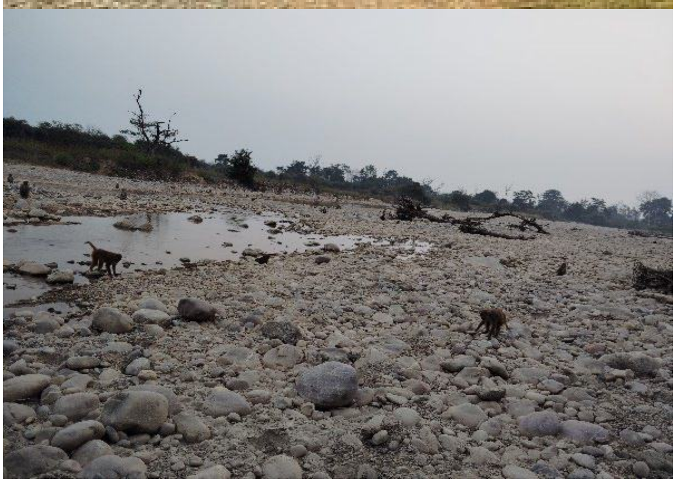

जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान अपने विविध वन्यजीव प्रजातियों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ बाघ, हाथी, तेंदुआ, हिरण, जंगली कुत्ता, भालू, चीतल, बारहसिंगा, और कई प्रकार के पक्षी पाए जाते हैं। यह उद्यान बाघ संरक्षण के लिए भारत सरकार का एक प्रमुख केंद्र है, और यहाँ बाघों की आबादी का संरक्षण किया जाता है। हमने ज्यादातर यहाँ सांभर, चीतल, मोर, बन्दर देखे।

यह उद्यान भारत के बाघ संरक्षण कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण भाग है। यहाँ बाघों की संख्या बढ़ रही है, और यह क्षेत्र बाघों के लिए सुरक्षित आवास प्रदान करता है। बाघों की सुरक्षा के लिए कई परियोजनाएँ चलाई जाती हैं, जैसे टाइगर रिजर्व योजना।

यहाँ तेंदुए भी बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। तेंदुए जंगलों में छुपकर रहते हैं और अपनी चतुराई से शिकार करते हैं। जिम कॉर्बेट में भारतीय हाथी भी पाए जाते हैं। ये अपने सामाजिक जीवन के लिए जाने जाते हैं और जंगल में शिकारियों से रक्षा में मदद करते हैं। यह उद्यान विभिन्न प्रजातियों के जंगली कुत्ते, भालू, और अन्य स्तनधारी प्रजातियों का घर है। ये सभी वन्यजीवों के पारिस्थितिक तंत्र का हिस्सा हैं। यह क्षेत्र पक्षियों का स्वर्ग है। यहाँ 650 से अधिक पक्षी प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें बुलबुल, मैना, मोर, हंस, बगुला, और विभिन्न प्रवासी पक्षी शामिल हैं। यह पक्षी जीवन पर्यटकों और पक्षी प्रेमियों के लिए आकर्षण का केंद्र है।

जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान में कई संकटग्रस्त प्रजातियाँ हैं। इनके संरक्षण के लिए यहाँ विशेष प्रयास किए जाते हैं। बाघ, हाथी, और चीतल जैसी प्रजातियाँ इस क्षेत्र की विशेष पहचान हैं। इसके अलावा, यहाँ कुछ दुर्लभ प्रजातियाँ भी पाई जाती हैं, जैसे गैंडा, मोर और अनेक प्रकार के पक्षी। इनकी सुरक्षा के लिए केंद्र और राज्य सरकार मिलकर प्रयास कर रहे हैं।

जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान भारत का एक प्रमुख पर्यटक स्थल है। यहाँ हर साल लाखों पर्यटक प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने आते हैं। जंगल सफारी, बाघ देखना, पक्षी दर्शन, और प्रकृति प्रेमियों के लिए यहाँ अनेक गतिविधियाँ उपलब्ध हैं। इन गतिविधियों से स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी लाभ होता है, लेकिन साथ ही वन्यजीवों का संरक्षण भी जरूरी है।

पर्यटन के दौरान पर्यटकों को जागरूकता अभियानों के माध्यम से वन्यजीव संरक्षण के महत्व के बारे में भी जानकारी दी जाती है। सरकार और स्वयंसेवी संगठन मिलकर यहाँ पर्यावरण संरक्षण के कार्यक्रम चलाते हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य वन्यजीवों का संरक्षण करना और उनके प्राकृतिक आवास को सुरक्षित रखना है। जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान का संरक्षण एक सतत प्रक्रिया है। आने वाले वर्षों में और अधिक जागरूकता अभियान, अनुसंधान, और संरक्षण प्रयास जरूरी हैं। पर्यावरणीय शिक्षा, स्थानीय समुदायों की भागीदारी और तकनीकी उपकरणों का प्रभावी उपयोग ही इस क्षेत्र को सुरक्षित बनाने का आधार है। सरकार और नागरिक समाज मिलकर इस प्रयास में हैं कि जिम कॉर्बेट जैसे विश्व धरोहर स्थलों का संरक्षण किया जा सके।

जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान न केवल भारत का बल्कि विश्व का एक अनमोल खजाना है। इसकी प्राकृतिक सुंदरता, जैव विविधता, और संरक्षण के प्रयास इसे विशेष बनाते हैं। यह उद्यान हमें सिखाता है कि वन्यजीवों का संरक्षण हमारे जीवन का अनिवार्य हिस्सा है। हमें अपनी पृथ्वी को स्वच्छ, सुरक्षित और हरियाली से भरपूर बनाने के लिए सतत प्रयास करने चाहिए। संरक्षण के प्रयासों में प्रत्येक का योगदान जरूरी है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इस अद्भुत प्राकृतिक विरासत का आनंद ले सकें।

डॉ. वैशाली उमराणिया
वैज्ञा./अभि.-एसडी

हमारी कहानी - मुहावरों की ज़ुबानी

हमारा नाम तो है 'मधु', पर हम अपने नाम के बिल्कुल विपरीत ठहरे जिद्दी और अड़ियल जिसे इस युग का हिटलर कहा जाना गलत न होगा। हर बात में अपनी ही जिद, अपनी ही बात मनवाना और फिर किसी दूसरे के 'फटे में टांग अड़ाने' का पुराना शौक। घर के दूसरे सभी सदस्यों से एकदम हटकर हमारा अपना अलग ही रोब होता था। घर के शेष सदस्यों का व्यवहार 'स्वभाव में पूरब तो हम पश्चिम'। मेरा गुस्सैल स्वभाव देखकर नाम उन्होंने मधु इसलिए रख दिया होगा कि शायद नाम का असर स्वभाव में आ जाए; पर अपन भी ठहरे 'चिकने घड़े', जिस पर भला कभी पानी भी ठहरता है। वो लोग अपनी कोशिशों में लगे थे और हम थे कि 'अपनी ही मस्ती में जिये जा रहे' थे। एक बात तो थी कि जब भगवान अक्ल बाँट रहे थे, तो हम वहीं थे, और जनाब सबसे आगे खड़े थे, बड़ी झोली फैलाए, तभी हमें लगता है; अरे लगता ही नहीं पूरा यकीन है कि हम काफी....... समझ गये न। भाई समझ देखिए हम 'अपने मुंह मियां मिट्ठू' नहीं बन रहे हैं वैसे भी जो बात सच है वो सच ही है। वैसे तो आप भी काफी समझदार मालूम होते हैं। माफी चाहते हैं जो आपको नहीं देखा। कहीं हमारे बाद दूसरा नंबर आपका ही तो नहीं था? क्या......? नाराज मत होइए जनाब! दरअसल हम ढेर सारी अक्ल पाकर 'खुशी से फूल कर कुप्पा हो गये' पर हमने पीछे मुड़कर देखा ही नहीं कि और कौन-कौन वहाँ है? जनाब, आप बड़े किस्मत वाले हैं जो हमने आपसे क्षमायाचना कर ली, नहीं तो ट्रंप भी तरसता है कि हम कब उससे माफी मांगे और इस बेचारे को हमसे ही क्षमायाचना करने से फुर्सत नहीं मिलती। भाई ये हम 'ख्याली पुलाव नहीं पका रहे हैं', आपको अपने कुछ राज बता रहे हैं। हां तो भाई हम तो बचपन से ही 'गुल-खिलाने' लगे थे, आखिर 'पूत के पाँव पालने' में नजर आ ही जाते हैं और हमारे घर वाले हिंदी साहित्य के सभी नौ के नौ रसों का हमारे कारण स्वाद चख चुके थे। ये तो उनका सौभाग्य था, जो हमारे जैसा विलक्षण व्यक्तित्व उनके घर में ही था। पर जैसे 'घर की मुर्गी दाल बराबर' होती है वैसे ही उनकी नजरों में हम - जिद्दी, गुस्सैल वगैरह-वगैरह थे। अब ऐसा है कि हमें अपनी तारीफ के लिए शब्द ही नहीं मिल रहे हैं जो वो हमारे लिए कहते थे। खैर जाने दो, फिर कभी......।

एक बात और थी- घर में क्या बाहर भी हम उतने ही (कु)ख्यात हो चुके थे कि गलती कोई दूसरा करता और 'बलि का बकरा' बनते हम। हम हमेशा सोचते कि शैतानी करने के बाद 'नौ दो ग्यारह हो जाएंगे' पर क्या करें नादान ठहरे, हमेशा 'रंगे हाथ पकड़े जाते'। फिर पापा हमारी ऐसी खातिर करते कि हमें 'नानी याद आ जाती'। खैर हम भी कुछ कम न थे। आखिर शरारत और हमारा तो 'चोली-दामन का साथ' था; परन्तु घरवालों ने भी 'कमर कस ली' थी कि हमें सुधारकर ही छोड़ेंगे। शायद वे भूल गये थे कि 'भैंस के आगे बीन बजाने' से कोई फायदा नहीं। शायद घरवालों ने 'आशा का दामन थाम' रखा था कि कभी न कभी तो 'सेर को सवा सेर' मिलेगा और हम थे कि नित नये कारनामों को अंजाम देने में प्रसन्नता का अनुभव करते। अब आप ये मत समझिए कि हम हमेशा ही अक्खड़ थे। हम पढ़ाई में अव्वल और शिक्षकों के चहेते भी थे। पर ये भी तो सच है कि 'एक बुराई हजारों अच्छाइयों पर पानी फेर देती है'। बात बात पर झूठ बोलना तो हमारा प्रिय शगल था। सुना था कि 'झूठ बोले कौवा काटे'। कभी-कभी थोड़ा डर भी लगता था, हां भाई मुझे भी, पर फिर अगले ही पल लगता कि आने दो काले कौवे को, उससे भी 'दो-दो हाथ कर लेंगे'। हमारी एक मित्र मण्डली भी थी। सब कहते तो थे हमें पाँच पांडव, पर हम काम कौरवों जैसा करते और शकुनि मामा ..... हां भाई हम ही हुआ

करते थे। हम युवा हो चले थे और साथ ही हमारी शैतानियाँ भी। दूसरों को 'उल्लू बनाना' तो हमारे 'बाएं हाथ का खेल' था। एक सीधी सी लड़की थी, जिससे हम हमेशा 'खार खाए' रहते। पता नहीं क्यों उसे हमेशा 'नीचा दिखाने' का प्रयास करते और खूब मजा लेते। न जाने वो कौन-सी मिट्टी की बनी थी कि उस पर तो कुछ असर ही नहीं होता था और हम नये-नये तरीके तलाशने में जुट जाते।

एक बार हॉस्टल में रात को उसे डराने की योजना बनाई। हम सफेद चादर ओढ़ कर पेड़ पर चढ़कर बैठ गये और हमारी बाकी सहेलियां उसको बातचीत में लगाकर पेड़ के नीचे ले आईं। हम उसको भूत बनकर डराने का सोच ही रहे थे कि अचानक हमारा संतुलन बिगड़ा और हम टपक गये नीचे। हमारी तथाकथित सहेलियाँ तो हमें दर्द से कराहता छोड़कर घबराकर भाग गईं किन्तु उसी लड़की ने दो-तीन अन्य लड़कियों की मदद से सहारा देकर हमें अपने कमरे तक पहुंचाया और वार्डन से शिकायत करने के बदले इलाज करवाया। उसके व्यवहार से हम थे चकित और सोच में पड़ गये। उस घटना ने तो हमारे मस्तिष्क को झिंझोड़कर रख दिया।

आखिरकार हम सुधरने के मार्ग पर आगे बढ़े। घरवालों ने कहा कि बेटा 'जब जागो तभी सवेरा' समझो। हमने भी 'उनकी बात गांठ बांध ली' और तय किया कि सब शरारतें व जिद छोड़कर हम भी अच्छे बनेंगे।

सच मानिये हमने उस पर अमल करना शुरू कर दिया है। आखिर किसी ने सच ही कहा है 'सुबह का भूला शाम को घर वापस आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते'। आप भी सहमत हैं न मुझसे।

दीप्ति अग्रवाल
पुत्री: दिनेश कुमार अग्रवाल (वैज्ञा./अभि.-एसजी)

क्या है राजस्थान?

सुनहरे रेतीले समंदर का दीदार हो जहाँ, वो है मेरा राजस्थान...

ऊँटों की चाल और मन को लुभाती लोकगीतों की धुन है जहाँ,
वो है मेरा राजस्थान...

पराक्रमी वीर योद्धाओं की शौर्यगाथा है जिसका मान सम्मान।
वो है मेरा राजस्थान...

जिस प्रदेश के गढ़ और किले हैं उसका मुकुट।
वो है मेरा राजस्थान...

अरावली की गोद में बसा हरियाली का प्रांगण है जहाँ।
वो है मेरा राजस्थान...

सरिस्का, रणथंभौर जैसे वन अभ्यारण्यों में बाघ की दहाड़ है जहाँ,
वो है मेरा राजस्थान...

दाल-बाटी चूरमा, मीठे में घेवर और फीणी का स्वाद लाजवाब,
वो है मेरा राजस्थान...

जहाँ मेलों और त्योहारों की सदा रहती है बहार।
वो है मेरा राजस्थान...

जहां पगड़ी का मान और घूंघट का हो सम्मान।
वो है मेरा राजस्थान...

रीति-रिवाज और परंपरा है जिसकी शान।
वो है मेरा राजस्थान...

पधारो म्हारे देस की प्रथा में है अतिथियों के दिल जीतने का अंदाज।
वो है मेरा राजस्थान...

यशश जैन
वैज्ञा./अभि.-एससी

संगीत: सुरों का सफर, हर आम ज़िंदगी के लिए खास!

क्या आपने कभी सोचा है कि जब आप अपने पसंदीदा गाने सुनते हैं, तो आपकी थकान पल भर में कैसे दूर हो जाती है? या किसी उदासी में एक धुन कैसे आपकी हमसफर बन जाती है? संगीत सिर्फ आवाज़ों का मेल नहीं, यह भावनाओं का दरिया है, जो हमारी ज़िंदगी के हर पल में समाया हुआ है। फिर भी, जब बात आती है खुद संगीत सीखने की, तो हम में से कई "आम आदमी" झिझक और संकोच के पर्दे के पीछे छिप जाते हैं। हम सोचते हैं, "मुझसे नहीं होगा," "मेरी आवाज़ अच्छी नहीं," "मुझे क्या मिलेगा?"

इस लेख का उद्देश्य आपको इन्हीं संकोचों से बाहर निकालकर, संगीत की दुनिया में एक नया कदम रखने के लिए प्रेरित करना है।

संगीत के आम जीवन में अद्भुत फ़ायदे

संगीत सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि इसके कई ऐसे फ़ायदे हैं जो हमारे रोज़मर्रा के जीवन को बेहतर बनाते हैं:

1. तनाव और चिंता कम करता है: व्यस्त जीवनशैली में तनाव एक कड़वी सच्चाई है। संगीत सुनना या बजाना एंडोर्फिन (खुशी के हार्मोन) रिलीज़ करता है, जो तनाव को कम करने और मन को शांत करने में मदद करता है। यह एक थेरेपी की तरह काम करता है।
2. मूड बेहतर बनाता है: एक उदास दिन में भी, एक मनपसंद धुन या गीत आपको तरोताज़ा कर सकता है। संगीत हमें ऊर्जा देता है, निराशा से बाहर निकालता है और हम में सकारात्मकता भरता है।
3. याददाश्त और एकाग्रता बढ़ाता है: संगीत सीखने से मस्तिष्क के वे हिस्से सक्रिय होते हैं जो याददाश्त और एकाग्रता के लिए ज़िम्मेदार हैं। चाहे आप कोई नया वाद्य यंत्र सीखें या गीत के बोल याद करें, आपका दिमाग नई चुनौतियों से गुज़रता है, जिससे उसकी क्षमता बढ़ती है।
4. रचनात्मकता को बढ़ावा देता है: संगीत आपकी रचनात्मकता को जगाता है। जब आप अपनी धुनें बनाते हैं या किसी गीत में अपनी भावनाएँ जोड़ते हैं, तो यह आपके अंदर के कलाकार को बाहर लाता है।
5. आत्मविश्वास बढ़ाता है: जब आप कोई नया कौशल सीखते हैं और उसमें थोड़ा भी माहिर होते हैं, तो यह आपके आत्मविश्वास को बढ़ाता है। दूसरों के सामने एक छोटा सा प्रदर्शन भी आपको सशक्त महसूस करा सकता है।
6. सामाजिक जुड़ाव: संगीत आपको नए लोगों से जुड़ने का मौका देता है। आप संगीत समूहों में शामिल हो सकते हैं,
7. आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यम: कई बार हम अपनी भावनाएँ शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाते। संगीत आपको अपनी खुशी, दुख, प्यार या गुस्सा बिना बोले ज़ाहिर करने का एक शक्तिशाली माध्यम देता है।

कैसे करें संगीत के सफर की शुरुआत?

संगीत सीखने की शुरुआत उतनी मुश्किल नहीं, जितनी हम समझते हैं। यहाँ कुछ आसान तरीक़े दिए गए हैं:

1. अपनी रुचि पहचानें: सबसे पहले तय करें कि आप किस तरह के संगीत या वाद्य यंत्र की तरफ़ आकर्षित हैं। क्या आपको गाना पसंद है? या गिटार, कीबोर्ड, तबला, बाँसुरी जैसा कोई वाद्य यंत्र? अपनी पसंद से शुरुआत करने से उत्साह बना रहता है।
2. छोटे लक्ष्य तय करें: शुरुआत में ही किसी बड़े कलाकार जैसा बनने का सपना न देखें। पहले एक गाना सीखना, या किसी वाद्य यंत्र के कुछ सुर बजाना, जैसे छोटे लक्ष्य तय करें।
3. ऑनलाइन सीखें या ऑफ़लाइन: आज के समय में सीखना बहुत आसान है। YouTube पर अनगिनत ट्यूटोरियल उपलब्ध हैं। आप ऑनलाइन कोर्स कर सकते हैं या अपने आसपास किसी संगीत शिक्षक से संपर्क कर सकते हैं। अपनी सुविधा के अनुसार रास्ता चुनें।
4. नियमित अभ्यास: रोज़ाना 15-20 मिनट का अभ्यास भी बहुत फ़ायदेमंद होता है। निरंतरता महत्वपूर्ण है। ज़रूरी नहीं कि आप घंटों बैठें, लेकिन रोज़ थोड़ा समय ज़रूर दें।

5. प्रयोग करें और मज़े करें: शुरुआत में गलतियाँ होंगी, घबराएँ नहीं। संगीत एक यात्रा है, कोई दौड़ नहीं। नए सुरों, तालों और धुनों के साथ प्रयोग करें। सबसे ज़रूरी है प्रक्रिया का आनंद लेना।

झिझक और संकोच को कैसे खत्म करें और हिम्मत जुटाएँ?

यह सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। हम में से कई लोग अपनी अंदरूनी आवाज़ के डर से ही रुक जाते हैं।

1. "मैं अच्छा नहीं हूँ" का डर छोड़ें, हर कोई कहीं न कहीं से शुरुआत करता है। कोई भी जन्म से गायक या वादक नहीं होता। याद रखें, आप पेशेवर बनने के लिए नहीं सीख रहे हैं, बल्कि अपने लिए, अपनी खुशी के लिए सीख रहे हैं।

2. परफेक्ट होने की चाह छोड़ें: संगीत में परफेक्शन से ज़्यादा ज़रूरी है एक्सप्रेशन (अभिव्यक्ति)। आपकी भावनाएँ आपके सुरों में बोलेंगी, फिर चाहे वे कितने भी कच्चे क्यों न हों। गलतियाँ स्वाभाविक हैं, उनसे सीखें।

3. दूसरों की राय को हावी न होने दें: हो सकता है कोई कहे कि "इस उम्र में क्या सीखोगे?" या "तुम्हारी आवाज़ अच्छी नहीं है।" ऐसे विचारों को अनसुना करें। यह आपकी यात्रा है, और इसमें दूसरे क्या सोचते हैं, यह मायने नहीं रखता।

4. छोटी शुरुआत करें: अगर आपको गाने में झिझक है, तो पहले बाथरूम सिंगर बनें! फिर अपने पसंदीदा गाने गुनगुनाएँ। वाद्य यंत्र में, पहले सिर्फ़ नोट्स बजाएँ, फिर धीरे-धीरे धुनें।

5. समूह में शामिल हों: अगर अकेले सीखने में झिझक हो रही है, तो किसी शुरुआती संगीत समूह में शामिल हों। जब आप देखते हैं कि आपके जैसे और भी लोग सीख रहे हैं, तो हिम्मत मिलती है।

संगीत: एक जीवनशैली

संगीत को अपनी जीवनशैली का हिस्सा बनाएँ। चाहे सुबह की शुरुआत हल्के संगीत से हो, या शाम को कुछ धुनें बजाकर दिनभर की थकान मिटाना हो। याद रखें, हर "आम आदमी" के अंदर एक कलाकार छिपा होता है। उसे जगाने की हिम्मत करें, अपनी झिझक को तोड़ें और सुरों के इस अद्भुत सफर पर निकल पड़ें।

डॉ. नित्यप्रिया श्रीवास्तव
विवाहिती-मोहित आनन्द (वैज्ञा./अभि.-एसएफ)

चलो फिर से बीते ज़माने में जाएँ

चलो फिर से बीते ज़माने में जाएं।
चलो फिर से बीते ज़माने में जाएं,
नया न करें कुछ पुराना सजाएं।

विकसित हुई हैं अब तकनीकी बहुत ही,
समय का भी पहिया, फिर उल्टा घुमाएं।
जो सूनी पड़ीं हैं वो गाँव की गलियाँ,
चलो फिर वहाँ गिल्ली डंडा चलाएं।

बहुत सो लिए बंद कमरों में छुपके,
चलो खुले आँगन में फिर से चारपाई बिछाएं।
वो चूल्हे, मिट्टी, वो पीतल के बर्तन
चलो उनमें फिर से खुशियाँ पकाएं।

चलो वक्त का पहिया उल्टा घुमाएं,
नया न करें कुछ पुराना सजाएं।
थमी सी पड़ी हैं शीतल नदी की तरंगें,
चलो फिर से उनमें छलाँग लगाएं।

वो रिमझिम बरसती बारिश में भीगें,
चलो फिर से कागज़ की नौका बनाएं।
नया न करें कुछ पुराना सजाएं,
समय का ये पहिया, फिर उल्टा घुमाएं।

छोड़ें ट्विटर, फेसबुक, वाट्सएप को,
चलो फिर से नुक्कड़ नाटक कराएं।
यंत्रों की तरंगों से बहुत गुम हुए हैं परिंदे,
चलो उन परिंदों की फिर से संख्या बढ़ाएं।

चलो फिर से बीते ज़माने में जाएं,
नया न करें कुछ पुराना सजाएं।
बहुत थक चुके हैं व्यस्तता भरी जिंदगी से,
चलो संग मित्रों के गप्पें लड़ाएं।

कुछ सुनें बात उनकी कुछ अपनी सुनाएं।
खाली पड़ी वृक्षों की डालियाँ,
चलो फिर उन पर रस्सी, डंडों का झूला बनाएं।

चलो फिर से बीते ज़माने में जाएं,
नया न करें कुछ पुराना सजाएं।

अंजना सिंह
विवाहिती-सुनील सिंह (तकनीकी अधिकारी-डी)

मूवी पहचानो

दर्शाये गए चित्र की मदद से हिंदी चलचित्र मूवी के नाम पहचानिए।

1	2	3	4
	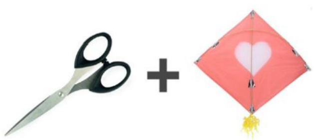		
5	6	7	8
9	10	11	12
13	14	15	16
17	18	19	20

प्रिंस सोनी
पुत्र-आशिष सोनी (वैज्ञा./अभि.-एसएफ)

ऊष्मा की कुछ रोचक बातें

1. सौर किरणें पृथ्वी को तो गर्म कर देती हैं, जबकि अंतरिक्ष में से गुजरने के बावजूद भी अंतरिक्ष अत्यधिक ठंडा होता है। ऐसा क्यों ?

सौर किरणें सूर्य के भीतर नाभिकीय अभिक्रियाओं के कारण उत्सर्जित विद्युत चुम्बकीय विकिरण होते हैं। ये दृश्य, अवरक्त और पराबैंगनी विकिरणों या किरणों के रूप में पृथ्वी तक पहुंचते हैं। इन विकिरणों को अंतरिक्ष में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचने के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं होती है, इसलिए ये अंतरिक्ष के निर्वात में से होकर पृथ्वी की सतह तक पहुंच जाते हैं। अंतरिक्ष में इन किरणों की उपस्थिति के बावजूद भी अंतरिक्ष अत्यधिक ठंडा होता है। अंतरिक्ष का औसत तापमान 2.7 केल्विन अर्थात् -270.3 डिग्री सेल्सियस होता है जबकि पृथ्वी की सतह का औसत तापमान लगभग 15 डिग्री सेल्सियस होता है। इन किरणों का स्वयं का कोई तापमान नहीं होता है क्योंकि ये किरणें किसी पदार्थ के कणों के रूप में नहीं होती हैं, लेकिन ये अपने साथ ऊर्जा ले जाती हैं। तापमान किसी पदार्थ का ही हो सकता है, क्योंकि तापमान किसी पदार्थ के अणु और परमाणुओं की औसत गतिज ऊर्जा का एक माप होता है। इसलिए तापमान की अनुभूति के लिए पदार्थ की उपस्थिति आवश्यक होती है, पदार्थ ठोस, द्रव या गैस में से किसी भी अवस्था में मौजूद हो सकता है। जब ये किरणें किसी पदार्थ के सूक्ष्म कणों पर गिरती हैं तब पदार्थ के सूक्ष्म कण उन किरणों को अवशोषित कर विद्युत चुंबकीय ऊर्जा को कणों की गतिज ऊर्जा में रूपांतरित कर देते हैं, उसी गतिज ऊर्जा को हम तापमान के रूप में देखते हैं। अंतरिक्ष में अणु और परमाणुओं की उपस्थिति तो होती है लेकिन वह पृथ्वी के वातावरण की तुलना में नगण्य होती है। पृथ्वी के वायुमंडल में एक घन सेंटीमीटर में लगभग 2.5 अरब अणु होते हैं, जबकि अंतरिक्ष में औसतन एक घन सेंटीमीटर में लगभग एक अणु या परमाणु होता है। पृथ्वी के वायुमंडल में अणुओं की अधिक संख्या के कारण यह एक घना माध्यम हो जाता है। अंतरिक्ष में अणुओं की अत्यल्प मात्रा के कारण अणु बहुत दूर-दूर होते हैं, इसलिए अंतरिक्ष को निर्वात माना जाता है। तापमान किसी एक अणु या परमाणु के लिए परिभाषित नहीं हो सकता है, क्योंकि तापमान पदार्थ के सूक्ष्म कणों की गतिज ऊर्जा का सांख्यिकीय औसत होता है। इसलिए तापमान के लिए बड़ी संख्या में सूक्ष्म कणों अर्थात घने माध्यम की उपस्थिति आवश्यक होती है। किसी एक परमाणु के लिए हम वेग या संवेग परिभाषित कर सकते हैं, तापमान नहीं माप सकते हैं। अंतरिक्ष में बहुत ही कम संख्या में सूक्ष्म कणों के कारण वहां ऊष्मा ऊर्जा की मात्रा भी बहुत कम होती है। इसलिए अंतरिक्ष का तापमान शून्य के बजाय 2.7 केल्विन होता है जो पृथ्वी के वायुमंडल के तापमान की तुलना में बहुत ही कम है।

पृथ्वी पर मिट्टी, वायु तथा जल जैसे पदार्थ प्रचुर मात्रा में मौजूद होते हैं। जब सूर्य की किरणें इन पदार्थों पर गिरती हैं तो ये उन किरणों को अवशोषित कर लेते हैं। अवशोषित करने पर इन किरणों की ऊर्जा पृथ्वी के वातावरण में उपस्थित कणों की गतिज ऊर्जा में बदल जाती है जिसे हम तापमान के रूप में महसूस करते हैं। इसलिए हमें दिन के समय सूर्य के सामने गर्मी महसूस होती है और रात ठंडी लगती है।

इसी कारण से हमारे द्वारा अंतरिक्ष में भेजे गए उपग्रहों के जिन बाहरी हिस्सों पर सौर या पृथ्वी से परावर्तित या उत्सर्जित विकिरण गिरते हैं वे गर्म हो जाते हैं; जबकि अन्य बाहरी ठंडे हिस्से अंतरिक्ष के प्रभाव के कारण अत्यधिक ठंडे हो जाते हैं।

इसी तरह जब हम वायुयान में खिड़की के पास बैठकर यात्रा कर रहे होते हैं तो हमारे ऊपर सीधा सूर्य का प्रकाश गिरने से हमें अधिक तापमान लगता है; जबकि उसी समय वायुयान का बाहरी वातावरण अत्यंत ठंडा होता है। वायुयान के उड़ने की ऊंचाई पर हवा का घनत्व बहुत कम होने का कारण सूर्य की किरणों को अवशोषित करने के लिए कम अणु उपलब्ध होते हैं, इसलिए उड़ान के दौरान वायुयान का बाहर का तापमान बहुत कम होता है।

हमारे घरों में उपयोग किया जाने वाला माइक्रोवेव ओवन भी एक इसी तरह का उदाहरण है। हम इस ओवन में जब कोई खाद्य पदार्थ रखते हैं तो वह खाद्य पदार्थ गर्म हो जाता है लेकिन माइक्रोवेव में उपस्थित हवा तथा जिस पात्र में खाद्य पदार्थ रखा जाता है, वे गर्म नहीं होते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि माइक्रोवेव में निकलने वाले विकिरण केवल पदार्थ में उपस्थित जल के अणुओं द्वारा ही अवशोषित किये जाते हैं। ये विकिरण जल के अणुओं के कंपन को बहुत अधिक बढ़ा देते हैं, इन अणुओं और खाद्य पदार्थ के अणुओं के मध्य घर्षण के कारण कंपन ऊर्जा, ऊष्मा ऊर्जा में रूपांतरित हो जाती है, जिससे खाद्य पदार्थ का तापमान बढ़ जाता है। इस प्रकार खाद्य पदार्थ तो गरम हो जाता है,लेकिन ओवन में उपस्थित हवा ठंडी ही रहती है।

कमलेश कुमार बराया
वैज्ञा./अभि.-एसजी

जीवन में कुछ यात्राएं केवल दूरी तय करने का माध्यम नहीं होतीं, वे आत्मा को छू जाती हैं। जनवरी 2020 का पहला सप्ताह हमारे जीवन में वही एक यादगार अध्याय बनकर आया, जब हमने अहमदाबाद से अंडमान की ओर एक रोमांचक यात्रा की, जो न सिर्फ समुद्र की गहराइयों से होकर गुजरी, बल्कि हमारे दिल के कोनों तक उतर गई।

हम पाँच लोग थे- मैं, मेरे पति, तीन साल की नन्ही बेटी और मेरे सास-ससुर। यह यात्रा बहुत खास इसलिए भी थी, क्योंकि यह मेरे सास-ससुर और बेटी की पहली हवाई यात्रा थी और हमारी पहली दूरस्थ यात्रा भी। गाँव के साधारण परिवेश से निकलकर पहली बार वे विमान में बैठे थे। जब विमान ने रनवे से उड़ान भरी और खिड़की से बादलों का दरिया नजर आया, उनके चेहरों पर जो आश्चर्य और खुशी थी, उसे शब्दों में बयान करना कठिन है।

यह इनके ऑफिस द्वारा दी गई एलटीसी योजना के अंतर्गत हमारा पहला लंबा टूर था, और मन में रोमांच की लहरें उसी पल से दौड़ रही थीं जब हमने टिकट बुक किया था। जैसे-जैसे पोर्ट ब्लेयर का हवाई अड्डा नज़दीक आया, दिल की धड़कनें तेज होती गईं। विमान से बाहर निकलते ही ठंडी समुद्री हवा ने हमारा स्वागत किया। एक अलग ही ताजगी थी वहां की हवा में नमी से लिपटी खुशबू जो सीधे दिल में उतर जाए।

पोर्ट ब्लेयर – इतिहास और प्राकृतिक सौंदर्य का संगम:

अंडमान की राजधानी पोर्ट ब्लेयर बहुत ही शांत, साफ़ और सुव्यवस्थित शहर है। यहाँ की सड़कों पर कम यातायात तथा दोनों ओर की हरियाली ने मन मोह लिया। होटल से निकलने के बाद हमारा पहला पड़ाव था **सेल्यूलर जेल** – एक ऐसा स्थान जहाँ कदम रखते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। भारत के स्वतंत्रता सेनानियों ने यहाँ "काला पानी" की सजा भुगती थी। जैसे ही हमने उसकी दीवारों को छूआ, लगा मानो वीरता की कहानियाँ फुसफुसा रही हों। शाम को सेल्यूलर जेल में दिखाया गया **लाइट और साउंड शो** एक अद्भुत अनुभव था। पृष्ठभूमि में ओम पुरी की आवाज़ में जब शहीदों की दास्तान सुनाई गई, तो आँखें नम हो गईं।

पोर्ट ब्लेयर में ही हमने **समुद्रिका संग्रहालय** और **एन्थ्रोपोलोजिकल संग्रहालय** भी देखे, जहाँ अंडमान की आदिवासी संस्कृति, समुद्री जीवन और इतिहास को बेहद रोचक ढंग से दर्शाया गया है। हमारी बेटी को वहाँ के रंग-बिरंगे मछलियों के मॉडल और आदिवासी नृत्य की झलकियाँ बहुत पसंद आईं।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वीप (रॉस आइलैंड)– एक खामोश ऐतिहासिक टापू :

अगले दिन हमने **रॉस आइलैंड** की ओर रुख किया। कभी अंग्रेजों का प्रशासनिक केंद्र रहा यह द्वीप अब खंडहरों का शहर बन गया है। पेड़ों की जड़ों ने पुरानी इमारतों को ऐसे जकड़ लिया है जैसे प्रकृति ने उन्हें अपने आगोश में ले लिया हो। यहाँ का चर्च, ऑफिसर्स क्वार्टर, बेकरी सभी वीरान होकर भी कहानियाँ कहते हैं। हर कदम पर इतिहास बिखरा पड़ा है।

नॉर्थ-बे आइलैंड– साहसिक जल क्रीड़ाओं का रोमांच

रॉस आइलैंड के सामने ही **नॉर्थ-बे आइलैंड** है, जहाँ हमने पहली बार स्नॉर्कलिंग का अनुभव किया। समुद्र की सतह के नीचे की दुनिया इतनी रंगीन, इतनी जीवंत हो सकती है, इसका अंदाजा हमें नहीं था। रंग-बिरंगी मछलियों के बीच हमारी बेटी ने भी छोटी-छोटी लहरों से खेलकर खूब आनंद लिया।

स्वराज द्वीप (हेवलोक आइलैंड) – सफेद रेत और नीला समंदर

अगली सुबह हम एक खूबसूरत क्रूज़ के जरिए **हेवलोक आइलैंड** पहुँचे। यह सफर ही अपने-आप में एक रोमांच था—नीले समंदर में चलते हुए जब सूरज की किरणें लहरों पर पड़ती थीं, तो वो दृश्य मंत्रमुग्ध कर देने वाला होता।

हेवलोक का सबसे प्रसिद्ध स्थान है **राधानगर बीच**, जिसे एशिया के सबसे सुंदर समुद्रतटों में गिना जाता है। जैसे ही हम वहाँ पहुँचे, रेत की सफेदी और समुद्र की गहराई ने हमें अपनी बाहों में भर लिया। वहाँ बिताए वो कुछ घंटे जैसे सपनों की दुनिया से थे। हम सबने समुद्र में पैर डालकर लहरों को महसूस किया, बालू से घर बनाए और जीवन के सबसे सुंदर पल कैमरे में नहीं, दिल

में कैद किए।

तिरंगा हिल और चिड़िया टापू – प्राकृतिक छटा का चरम

पोर्ट ब्लेयर लौटकर हम पहुँचे **तिरंगा हिल**, जहाँ से पूरा शहर और समुद्र दूर-दूर तक नजर आता है। वहां लगा विशाल तिरंगा हवा में लहराता हुआ हमें गर्व से भर देता है। इसके बाद शाम को हम **चिड़िया टापू** गए, जहाँ सूर्यास्त का दृश्य अविस्मरणीय था। वहाँ की अमराई में बैठकर हमने सूरज को समुद्र में डूबते देखा, मानो प्रकृति ने रंगों से कैनवास भर दिया हो।

वंडूर बीच – शांति और सुकून

यात्रा के अंतिम चरण में हम पहुँचे **वंडूर बीच**, जो अपेक्षाकृत शांत और कम भीड़भाड़ वाला है। यहाँ सिर्फ लहरों की आवाज़ थी, पक्षियों की चहचहाहट, खारे पानी के मगरमच्छ और हमारे भीतर की शांति। माँ-पिता वहीं एक पेड़ के नीचे बैठकर देर तक समंदर को निहारते रहे, उनके चेहरे पर संतोष और आनंद साफ़ झलक रहा था।

भोजन और ठहराव का अनुभव

खाने की बात करें तो ज्यादातर जगहों पर **सादा पंजाबी खाना** मिला- सब्ज़ी, रोटी, दाल, चावल। लेकिन समुद्र की ठंडी हवा में और दिनभर की थकान के बाद वो साधारण खाना भी बेहद स्वादिष्ट लगता था।

हमने पोर्ट ब्लेयर में लोकल बाजारों में घूमकर कुछ हस्तशिल्प खरीदे-सीप से बनी चीज़ें, अंडमान की खास लकड़ी के खिलौने और कुछ हाथ के बने शोपीस।

विदाई का पल – दिल भारी, आँखें नम

जैसे ही यात्रा का अंतिम दिन आया, मन भारी हो गया। माँ-पिता बार-बार कहते रहे कि "ऐसी जगह जिंदगी में पहली बार देखी है"। उनकी आँखों में जो संतोष और आनंद था, वही हमारी यात्रा की असली पूँजी थी।

जब विमान पोर्ट ब्लेयर से उड़ान भर रहा था, तो खिड़की से नीचे फैले विशाल नीले समंदर को देखकर दिल भर आया। यह यात्रा केवल स्थलों की नहीं थी, यह यात्रा थी **रिश्तों के और भी करीब आने की, स्वयं को जानने की**, और उस संसार को देखने की, जो अब तक केवल तस्वीरों में देखा था।

इस यात्रा ने हमें सिखाया कि ज़िन्दगी में सबसे बड़ी दौलत अनुभव होते हैं। अंडमान यात्रा न केवल हमें प्राकृतिक सौंदर्य से भर गई, बल्कि उसने हमें यह भी सिखाया कि जीवन के सबसे खूबसूरत पल वो होते हैं जो अपने प्रियजनों के साथ बिताए जाते हैं और इस अवसर के लिए हम अपने विभाग का तहे दिल से आभार मानते हैं, जिन्होंने हमें यह अनमोल अनुभव दिया।

प्रीति सेन
विवाहिती-विष्णु कुमार सेन (तकनीशियन-एफ)

वह तीसरी बार माँ बनने वाली थी। उसकी सास ने तो भविष्यवाणी भी कर दी थी: "इस बार तो लड़का ही होगा।"

हालाँकि, उसके पति ने लिंग निर्धारण कराने पर जोर दिया। उसने इस बार इनकार नहीं किया। पिछली बार किये गये इनकार और उसके बाद की पीड़ा उसके दिल को एक टीस दे गई। उसे याद आ गया कि पति ने कितनी सरलता से उसे नवजात बालिका के साथ उसके पिता के घर छोड़ दिया था! उसके पिता द्वारा पालन-पोषण भत्ता देने का वादा किए जाने के बाद ही पति परमेश्वर माँ और बच्ची को लेने पधारे थे।

इसलिए, उसने फैसला कर ही लिया था... इस बार कोई प्रतिरोध नहीं। वह सोनोग्राफी के लिए पास के एक शहर में गई थी। क्या उसे परिणाम पहले से पता था? जांच ने पुष्टि की कि उसकी कोख में एक कन्या भ्रूण पल रहा था। उसका पति इस बार एक और दिन भी बरबाद नहीं करना चाहता था, इसलिए वह उसे एक ऐसे डॉक्टर के पास ले गया, जो भ्रूण गिराने में विशेषज्ञ था।

डॉक्टर ने उससे सभी परीक्षण रिपोर्ट माँगे जो वे लेकर आये थे। उसने डॉक्टर की मेज पर रिपोर्ट से भरा एक पॉलीथीन बैग रखा।

बैग पर बड़े अक्षरों में "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" लिखा था। बैग पर बनी स्थानीय महिला मंत्री की तस्वीर, मानो उसकी ओर देखकर मुस्कुरा रही थी। इस बार उसकी दृढ़ता उन आँसुओं पर विजयी हुई जो उसकी सूखी आँखों से कभी बाहर का रास्ता नहीं खोज सके!

देवांग एम मांकड
वैज्ञा./अभि.-एसजी

सोशल मीडिया का पक्ष एवं विपक्ष

प्रस्तावना: आधुनिक युग में सोशल मीडिया प्रत्येक मानव के जीवन में एक बड़ी भूमिका निभा रहा है। इसके माध्यम से हम किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा विश्व के किसी भी कोने में निवास कर रहे अपने प्रियजनों से संपर्क सकते हैं। सोशल मीडिया बहुत ही सशक्त एवं आकर्षक माध्यम है और इसका प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर उनकी व्यक्तिगत सोच के आधार पर पड़ता है। आज सोशल मीडिया के बिना जीवन की कल्पना करना असंभव है। जिस प्रकार मानव जीवन के दो पहलू होते हैं कभी सुख तो कभी दुःख, ठीक उसी प्रकार सोशल मीडिया के भी दो पहलू हैं एक पक्ष अथवा सकारात्मक प्रभाव, दूसरा विपक्ष अथवा नकारात्मक प्रभाव। यह व्यक्ति के अपने व्यक्तिगत स्वभाव पर निर्भर करता है कि वह सकारात्मक प्रभाव के अंतर्गत आता है या नकारात्मक प्रभाव के अंतर्गत। सोशल मीडिया एक विशाल सागर की तरह है, यह हम पर निर्भर करता है कि हमें उस सागर से रत्न ग्रहण करने हैं या खारा जल।

सोशल मीडिया का तात्पर्य: सोशल मीडिया एक अंग्रेजी शब्द है जिसका हिंदी भाषा में तात्पर्य है सामाजिक माध्यम अर्थात सोशल मीडिया के द्वारा लोग एक-दूसरे से जुड़ते हैं, संवाद करते हैं और आपस में संपर्क में रहते हैं। अरस्तू ने कहा था-" मानव एक सामाजिक पशु है।" बिना समाज के मानव अस्तित्व की कल्पना करना ठीक उसी प्रकार है जैसे बिना पूँछ के पशु की। मानव सही अर्थों में मानव तभी है जब वह समाज के प्रत्येक वर्ग से जुड़कर रहता है। आधुनिक युग में मानव का आपस में जुड़ने का माध्यम ही सोशल मीडिया कहलाता है। सोशल मीडिया को दूसरी तरह से इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है-" इंटरनेट पर जनसंचार के लिए प्रयोग होने वाले वे माध्यम जिनके द्वारा लोग जानकारी, विचार और वीडियो जैसी तमाम सामग्री को साझा करते हैं"। सोशल मीडिया के उदहारण हैं - फ़ेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, टेलीग्राम, व्हाट्सऐप इत्यादि।

सोशल मीडिया का पक्ष: सोशल मीडिया का पक्ष प्रस्तुत करने का तात्पर्य है कि सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभावों की विस्तृत चर्चा की जाए। सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित हैं :

- **सूचना एवं संचार का माध्यम:** सोशल मीडिया वह त्वरित एवं सुलभ माध्यम है जिसके द्वारा हमको अपने राष्ट्र एवं विश्व की समग्र जानकारी कुछ ही पलों में उपलब्ध हो जाती है। सोशल मीडिया के द्वारा हम अपने स्वजनों से केवल बातचीत ही नहीं कर सकते अपितु उनको वीडियो कॉल के द्वारा देख भी सकते हैं।

- **शिक्षा एवं जागरुकता:** सोशल मीडिया के द्वारा वर्तमान युग का युवा ऑनलाइन क्लास, शैक्षणिक वीडियो और अन्य शैक्षणिक सामग्री के माध्यम से अध्ययन कर सकता है। सोशल मीडिया आधुनिक काल में समाज में जागरुकता फैलाने का त्वरित एवं सुलभ माध्यम है वो चाहे स्वच्छता हो या भ्रष्टाचार या सरकार की नीतियों का जन-जन में प्रसार करना।

- **व्यापार एवं रोजगार:** सोशल मीडिया लघु एवं उच्च दोनों प्रकार के व्यापारियों को अवसर प्रदान करता है। आज व्यापारी ऑनलाइन व्यापार से जुड़ रहे हैं और अपने व्यापार को विस्तृत बना रहे हैं। बेरोजगारी आधुनिक समय की एक बड़ी समस्या है जो सोशल मीडिया के द्वारा सुलझ सकती है। लिंक्ड-इन जैसे प्लेटफॉर्म द्वारा युवाओं को निजी संस्थाओं में रोजगार के अवसर मिलते हैं। सरकारी संस्थाओं में जाने के लिए सोशल मीडिया से अध्ययन में पर्याप्त सहयोग मिलता है।

- **मनोरंजन का साधन:** सोशल मीडिया पर वीडियो, गेम्स एवं अन्य रोचक सामग्री उपलब्ध होती है, जो मानव मात्र के मनोरंजन हेतु अच्छा साधन है।

सोशल मीडिया का विपक्ष: सोशल मीडिया का विपक्ष प्रस्तुत करने का तात्पर्य है कि सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों की विस्तृत चर्चा की जाए। सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित हैं :

- **समय का दुरुपयोग:** सोशल मीडिया पर आवश्यकता से अधिक समय बिताने पर व्यक्ति अपने काम पर उचित ध्यान नहीं दे पाते हैं। इससे कार्य की गुणवत्ता कम होती है। विद्यार्थी समय बर्बाद करते हैं जिससे उनको अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो पाती है।

- **गोपनीयता का उल्लंघन:** आज के समय व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत जानकारी सोशल मीडिया पर बिना सोचे-समझे साझा कर देता है। इससे कई बार व्यक्तिगत जानकारी का अनधिकृत प्रकटीकरण हो जाता है और आपकी व्यक्तिगत जानकारी का गलत उपयोग हो सकता है।

- **गलत सूचना एवं जानकारी:** सोशल मीडिया पर गलत सूचनाएँ एवं जानकारी अग्नि की तरह अति तीव्र गति से प्रसारित होती हैं जो समाज में भ्रम एवं अशांति उत्पन्न करती हैं। व्यक्ति को अपने स्तर पर अच्छे से जांच करके ही सूचनाएँ सोशल मीडिया से ग्रहण करना चाहिए।

- **मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव:** सोशल मीडिया की लत से समाज में तनाव, चिंता एवं आत्मसम्मान की कमी जैसी भयावह समस्याएं दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही हैं।

- **साइबर अपराध एवं बुलिंग:** सोशल मीडिया पर साइबर अपराध एवं ऑनलाइन दादागिरी (ट्रोलिंग) के मामलों की वजह से कई लोग जागरुकता की कमी होने से मानसिक रूप से अत्यंत परेशान हो जाते हैं। दिन प्रतिदिन ऑनलाइन ठगी के मामले बढ़ते ही जा रहे हैं। अतः साइबर अपराध के बारे में सही जागरूकता भी आज के समय में अत्यंत आवश्यक है।

उपसंहार: सोशल मीडिया एक ऐसा साधन है जिसका उपयोग यदि सही तरीके से किया जाए तो यह हमारे जीवन की बेहतरी के लिए काम करता है परन्तु यदि इसका दुरुपयोग किया जाए तो यह हमारे जीवन में कई जटिल समस्याएं भी उत्पन्न कर सकता है। आधुनिक समय में व्यक्ति विशेष को सोशल मीडिया का सीमित एवं सकारात्मक उपयोग करना चाहिए ताकि वह इसके लाभों से अधिक से अधिक लाभ उठा सके एवं नुकसान से स्वयं को बचा सके। सोशल मीडिया की तुलना दोधारी तलवार से कर सकते हैं। जिस प्रकार तलवार का उपयोग व्यक्ति स्वयं की रक्षा के लिए भी कर सकता है और किसी दूसरे को नुकसान पहुंचाने के लिए भी कर सकता है। यह उस व्यक्ति पर ही निर्भर करता है कि वह तलवार का सदुपयोग करे या दुरूपयोग करे, उसी प्रकार सोशल मीडिया का सदुपयोग या दुरुपयोग भी व्यक्ति विशेष पर ही निर्भर करता है। हमें जन-जन तक समाज में सोशल मीडिया के पक्ष एवं विपक्ष के बारे में जागरुकता प्रसारित करनी होगी जिससे सोशल मीडिया का सही तरीके से उपयोग किया जा सके।

राजकुमार गुप्ता
वैज्ञा./अभि.-एसडी

ऐ मोबाइल तेरा पेट कितना बड़ा?

ऐ मोबाइल तेरा पेट कितना बड़ा?
न जाने क्या-क्या खा के तू बढ़ा
आते ही लैंडलाइन और पेजर खा गया
इलेक्ट्रॉनिक कैलकुलेटर भी पचा गया

आगे तूने अलार्म घड़ी को खाया
वॉकमैन का भी बाजा बजाया
तेरा पेट अब भी नहीं भरा था
तेरे अंदर का शैतान जगा था

तेरा पेट अब और बड़ा हुआ
धीरे-धीरे तूने मनुष्य को छुआ
तू अब स्मार्ट बन गया है
सब के घर में घर कर गया है
तेरी हिम्मत बढ़ती जा रही है
और मनुष्य की शांति घटती जा रही है

पहले मनुष्य तेरा इस्तेमाल करता था
अब तू उसका इस्तेमाल करता है
तुझमें कॉन्टेक्ट भरपूर हो चले हैं
पर मनुष्य से मनुष्य दूर हो गए
तेरा प्रभाव इतना छा गया है
कि साक्षर भी अब अंगूठा लगा रहा है
'विवेक' न जाने वह दिन कब आएगा
जब मनुष्य इस मोबाइल पर विजय पाएगा

विवेक पाण्डेय
वैज्ञा./अभि.-एसएफ

ऑफिस डेस्क पर एक हरा भरा उपवन

हमारा जीवन 24 घंटों का होता है। इसमें से औसतन 8 घंटे नींद में, 1-2 घंटे यात्रा में, और 8-9 घंटे काम पर बीतते हैं। घर पर बिताने का वास्तविक समय भी अक्सर अन्य गतिविधियों के कारण कम हो जाता है । यह स्पष्ट है कि जागते और सक्रिय रहते हुए हमारा अधिकतम समय ऑफिस में ही बीतता है, चाहे हम प्रयोगशाला में काम कर रहे हों या अपने डेस्क पर।

हमारा ऑफिस सिर्फ एक कार्यस्थल से कहीं अधिक है। यह एक ऐसा वातावरण है जहाँ हम सहकर्मियों के साथ समय बिताते हैं, कॉफी ब्रेक पर बातें करते हैं, जहाँ हमें नए प्रोजेक्ट्स के लिए बेहतरीन विचार आते हैं, और यह आगंतुकों का स्वागत करने का भी स्थान है। ऐसे में, क्यों न अपने कार्यस्थल को अधिक सुखद और स्वस्थ बनाना हमारी प्राथमिकता हो?

ऑफिस रूम गार्डनिंग, जिसमें कार्यक्षेत्र में पौधों को शामिल करना शामिल है, एक नया और तेजी से बढ़ता चलन है। यह हरित ऑफिस पहल व्यक्तिगत स्तर पर आपकी डेस्क पर कुछ छोटे पौधे रखकर शुरू की जा सकती है। प्रकृति के संपर्क में रहकर काम करने के कई फायदे हैं, जिन्हें कई अध्ययनों से भी सिद्ध किया गया है। आइए, इसके कुछ अद्भुत लाभों पर विस्तार से नज़र डालें:

सौंदर्य में वृद्धि: आँखों को सुकून देता एक हरा-भरा माहौल

क्या आपने कभी सोचा है कि एक नीरस क्यूबिकल या कम रोशनी वाला कमरा कितना उबाऊ लग सकता है? कुछ प्राकृतिक हरियाली का समावेश कमरे के सौंदर्य में चार चाँद लगा देता है। ये छोटे पौधे न केवल आपके कार्यक्षेत्र को अधिक आकर्षक बनाते हैं, बल्कि एक ताज़गी भरा और जीवंत वातावरण भी तैयार करते हैं। यह आपके मूड को तुरंत बेहतर कर सकता है और काम को अधिक आनंददायक बना सकता है।

वायु गुणवत्ता में सुधार: साँस लेने हेतु ताज़ी हवा

विशेष रूप से बंद जगहों पर जहाँ हवा का प्रवाह कम होता है, वहाँ की हवा अक्सर प्रदूषित और बासी महसूस होती है। मनी प्लांट, स्नेक प्लांट, जेड प्लांट, पीस लिली जैसे पौधे हवा से हानिकारक गैसों (जैसे फॉर्मल्डिहाइड और बेंजीन) को अवशोषित करने और ऑक्सीजन छोड़ने में माहिर होते हैं। कल्पना कीजिए, अपनी डेस्क पर ही एक छोटा-सा प्राकृतिक वायु शोधक! यह निश्चित रूप से आपके स्वास्थ्य और ऊर्जा के स्तर में सुधार करेगा।

उत्पादकता और एकाग्रता में वृद्धि: बेहतर काम, बेहतर परिणाम

यह सिर्फ एक धारणा नहीं है; अध्ययनों से पता चला है कि पौधों की उपस्थिति संज्ञानात्मक कार्यक्षमता को बढ़ा सकती है। इसका सीधा अर्थ है कि आपकी एकाग्रता, याददाश्त और किसी भी कार्य को करने की क्षमता में सुधार होता है। हरे-भरे पौधे आपके कार्यक्षेत्र को अधिक आरामदायक और आमंत्रित महसूस करा सकते हैं, जिससे मनोबल में वृद्धि होती है और स्वाभाविक रूप से उत्पादकता बढ़ती है। जब मन शांत और केंद्रित होता है, तो अच्छे विचार आसानी से आते हैं।

तनाव में कमी: प्रकृति प्रदत्त शांति का अनुभव

प्रकृति का हमेशा से ही मन पर शांत प्रभाव रहा है। ऑफिस में पौधे रखने से तनाव और चिंता का स्तर कम करने में मदद मिलती है। पौधों की हरियाली और उनके साथ जुड़ाव एक शांत वातावरण बनाता है, जो काम के दबाव को झेलने में सहायक होता है। भले ही आप किसी बंद जगह में हों, एक छोटा-सा पौधा आपको एक पल के लिए प्रकृति से जुड़ने का मौका देता है, जिससे मन को शांति मिलती है।

तो, आप किस बात का इंतज़ार कर रहे हैं?

अपनी डेस्क के एक छोटे से हिस्से को, हरे-भरे उपवन में बदलने के लिए आपको बहुत कुछ करने की ज़रूरत नहीं है। बस एक या दो छोटे, आसानी से देखभाल किए जा सकने वाले पौधे चुनें। यह "ग्रीन ऑफिस" पहल न केवल आपके व्यक्तिगत कार्यक्षेत्र को बेहतर बनाएगी, बल्कि संभवतः पूरे कार्य वातावरण को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगी। यह एक छोटा कदम है, लेकिन आपके समग्र स्वास्थ्य, खुशी और उत्पादकता के लिए इसके बड़े फायदे हो सकते हैं। आज ही प्रकृति के इस छोटे से टुकड़े को अपनी डेस्क पर लाएँ और इसके अनमोल लाभों का अनुभव करें!

अत्रिश मुखर्जी
वैज्ञा./अभि.-एसएफ

मीडिया साक्षरता की आवश्यकता

वर्तमान में सभी लोग किसी ना किसी स्क्रीन के सामने बैठे हैं, चाहे वो कंप्यूटर की हो या मोबाइल की। आज हमारी आँख खुलते ही स्मार्टफोन हमारे हाथ में होता है। देखते ही देखते हम ख़बरों, वीडियो और सोशल मीडिया पोस्ट्स के सागर में गोता लगाने लगते हैं। व्हाट्सऐप पर कोई "अहम जानकारी" आती है, फेसबुक पर दोस्तों की तस्वीरें दिखती हैं, और इंस्टाग्राम पर नई रील्स का सिलसिला चलता रहता है। शाम को टीवी पर गरमागरम बहसें देखते हैं साथ ही, अखबार की मोटी-मोटी सुर्खियाँ पढ़ते हैं। ऊपर दर्शाये गए सभी माध्यम सूचना/मनोरंजन के माध्यम हैं। इन्हीं सब माध्यमों को मिलाकर मीडिया बनता है। मीडियम का बहुवचन ही मीडिया कहलाता है।

आज भारत में इंटरनेट इस्तेमाल करने वालों की संख्या 85 करोड़ से ज्यादा हो चुकी है। शहरों के साथ-साथ गांवों में भी लोग स्मार्टफोन से जुड़ चुके हैं। लेकिन, जानकारी जितनी तेजी से फैलती है, उतनी ही तेजी से अफवाहें, झूठी खबरें, भावनात्मक उकसावे और नफरत भरे संदेश भी फैलते हैं। कभी-कभी सोशल मीडिया पर किसी वायरल वीडियो से हिंसा भड़क उठती है, तो कभी गलत स्वास्थ्य जानकारी से लोग दवाओं या इलाज के बारे में भ्रमित हो जाते हैं। हम आज अपना अधिकतर कार्य मोबाइल के जरिये करते हैं और लगभग 24 घंटे ऑनलाइन रहते हैं। हमारी सारी व्यक्तिगत जानकारी हमारे मोबाइल में होती है जिसके जरिये कोई भी हमारे साथ फ्रॉड कर सकता है, फेक खबर भेजकर हमें आर्थिक और सामाजिक नुकसान पहुंचा सकता है। इससे बचने के लिये हमारे पास एक मात्र उपाय मीडिया साक्षरता है।

मीडिया से मिल रही सूचनाओं एवं मनोरंजन में से कितनी बातें सच हैं, कितनी अफवाहें, और कितनी सिर्फ किसी की अपनी सोच हैं? क्या हम हर बात को उसकी असलियत तक समझ पाते हैं? इन्हीं सवालों के जवाब हमें यह मीडिया साक्षरता देती है। मीडिया साक्षरता का मतलब है कि मीडिया में जो कुछ भी दिखाया, बताया और फैलाया जा रहा है, उसे समझने, परखने और सोच-समझकर उसका उपयोग करने की क्षमता। मीडिया साक्षरता हमें झूठी सूचनाओं से बचाव करने, सही जानकारी को पहचानने और एक जागरुक नागरिक की तरह सूचना का उपयोग करना सिखाती है।

हमारी शिक्षा व्यवस्था में अभी तक मीडिया साक्षरता को उतनी गंभीरता से शामिल नहीं किया गया है। स्कूल और कॉलेजों में इसे अलग विषय की तरह नहीं पढ़ाया जाता, जबकि यह आज पूरी दुनिया के लिये आवश्यक बन चुका है। अगर कोई तरुण सूचना तकनीक का इस्तेमाल करना सीखता है, तो उसे यह भी सीखना चाहिए कि वह उस सूचना तकनीक में फैली जानकारी को कैसे समझे और उसका सही उपयोग करे। मीडिया साक्षरता को ठीक से समझने और इसे सभी तक पहुंचाने के लिये शिक्षण संस्थानों में "डिजिटल नागरिकता", "सूचना की जांच", और "सोशल मीडिया समझ" जैसे विषयों को पाठ्यक्रमों में शामिल करना चाहिए।

भारत सरकार ने भी इस दिशा में पहल की है-जैसे पीआईबी फैक्ट चेक सेवा, साइबर सुरक्षा अभियान और डिजिटल साक्षरता प्रोग्राम। लेकिन ये अभी काफी नहीं हैं। ज़रूरत है एक ऐसी व्यापक नीति की जो न सिर्फ शहरों, बल्कि गांवों में भी मीडिया साक्षरता को लेकर जागरुकता फैलाए। यह नीति आम जनता, ग्रामीणों, महिलाओं और बच्चों तक अनिवार्य रूप से पहुंचनी चाहिए।

सरकार के साथ-साथ समाज की भी भूमिका अहम है। माता-पिता अपने बच्चों को सिखाएं कि हर चीज जो मोबाइल में दिखती है, वो सही नहीं होती। शिक्षक बच्चों में सोचने और सवाल करने की आदत डालें। मीडिया संस्थानों को भी जिम्मेदारी से काम करना चाहिए और सिर्फ टीआरपी की दौड़ में न भागें। साथ ही सोशल मीडिया कंपनियों को अपने प्लेटफॉर्म को ज़िम्मेदारी से चलाना होगा।

इन सभी प्रयासों को अब सिर्फ अभियान तक सीमित न रखकर, एक स्थायी कार्यक्रम का रूप देना होगा। मीडिया साक्षरता को केवल एक विशेष ज्ञान नहीं, बल्कि हर नागरिक का अधिकार और आवश्यकता माना जाना चाहिए। अंत में यही कहा जा सकता है कि आज सिर्फ पढ़ना-लिखना ही काफी नहीं है, हमें सोचना, समझना, और सवाल करना भी आना चाहिए। एक मीडिया साक्षर नागरिक न सिर्फ खुद को सुरक्षित रखता है, बल्कि समाज को भी भ्रम, नफरत और अफवाहों से बचाता है। यही आज के भारत की सबसे बड़ी जरूरत है।

दीप चन्द्र
सामाजिक अनुसंधान अधिकारी-सी

सौजन्य: आरती सोनी
(विवाहिती: आशिष सोनी,
वैज्ञा./अभि.-एसएफ)

वर्ग पहेली

नोट- पाठक वर्ग से वर्ग पहेली के उत्तर आमंत्रित हैं, कृपया अपने उत्तर दिनांक 31.12.2025 तक hindicell@sac.isro.gov.in पर भेजें। सर्वप्रथम सभी सही उत्तर भेजने वाले एक प्रतिभागी को पुरस्कृत किया जाएगा।

- राजभाषा अनुभाग

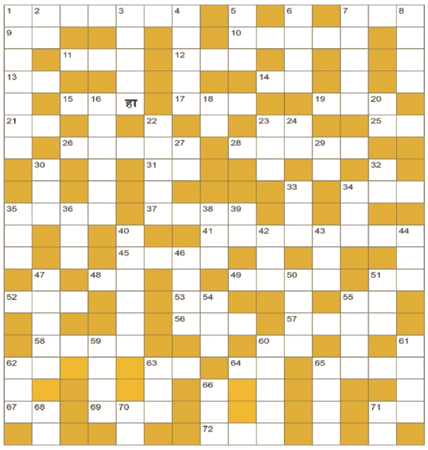

1	2			3		4		5		6		7		8
9								10						
		11				12								
13									14					
		15	16	हा		17	18				19		20	
21					22				23	24			25	
		26				27		28			29			
	30				31								32	
										33		34		
35		36			37		38	39						
				40			41		42		43			44
				45		46								
	47		48					49		50			51	
52						53	54					55		
						56				57				
	58		59						60					61
62					63			64			65			
							66							
67	68		69	70									71	
							72							

क्रम	बाएं से दाएं	शब्द संख्या
1.	चल छैयां छैयां गाना इस अभिनेत्री पर फिल्माया गया है	(4,3)
7.	अनिल कपूर, अमृता सिंह की एक फिल्म का नाम, श्रीमान	(3)
9.	___ गगन के तले, धरती का प्यार पले, ___ नितिन मुकेश	(2)
10.	हिंदी फिल्मों में मां के स्टीरियोटाइप रोल के लिए प्रसिद्ध	(3,2)
11.	करीना-करिश्मा कपूर की मां	(3)
12.	गीत गाता चल फिल्म की अभिनेत्री, कमल हसन की तलाकशुदा पत्नी	(3)
13.	शाहरुख, काजोल, रानी की फिल्म का गाना ___ मिल गया	(2)
14.	राजकुमार, जाह्नवी कपूर अभिनीत फिल्म, मि. एंड मिसेज ___	(2)
15.	तब्बू की बड़ी बहन तथा शबाना आज़मी की भतीजी	(3)
17.	____ फिल्म इंडस्ट्री को कॉलिवुड कहा जाता है	(3)
19.	अक्षय खन्ना के पिता, सैफ अली खान की फ़िल्म एजंट ___	(3)
21.	मेघना गुलज़ार की माता का नाम	(2)
23.	एक अभिनेता, ___ पाटेकर	(2)
25.	आमिर, अनिल, मनीषा कोइराला अभिनीत एक फ़िल्म का नाम	(2)
26.	इन्हें ट्रेजडी क्वीन के नाम से भी जाना जाता है	(2,3)
28.	क्रिकेट गर्ल ऑफ इंडिया, सास भी कभी बहू थी की मोना	(3,2)
31.	शम्मी कपूर, रणधीर कपूर की एक फ़िल्म, ___ भांजा	(2)
34.	आमिर खान, करीना कपूर की एक फ़िल्म, खोज	(3)
35.	इस अभिनेत्री का असली नाम उमादेवी है	(4)
37.	ऋषि कपूर की पत्नी का नाम	(2,2)
41.	गोविंदा, जया प्रदा, ऋषि कपूर, अनिता राज अभिनीत 1988 की एक फ़िल्म	(2,2,1,3)
45.	प्रियंका चोपड़ा अभिनीत भारतीय बॉक्सर की कहानी दर्शाती फ़िल्म	(2,2)
48.	अक्षय कुमार और अरशद वारसी की फ़िल्म, ___ एल एल बी	(2)
49.	सैफ, दीपिका, अमिताभ अभिनीत फिल्म आरक्षण का समानार्थी शब्द	(4)
51.	ये ___ मस्तानी मदहोश किये जाय, आजा ___ होने आई	(2)
52.	___ देवगन, काजोल के पति का नाम	(3)
53.	___ यमन पर आधारित गाना, चंदन सा बदन, चंचल चितवन	(2)
55.	रणबीर कपूर, अर्जुन रामपाल, जैक्लीन अभिनीत फिल्म का नाम	(2)
56.	हिंदी फिल्मों के प्रसिद्ध संगीतकार, ___ मोहन	(3)
57.	अमोल ___, गोलमाल फ़िल्म के राम और लक्ष्मण	(4)
58.	जो जीता वही सिकंदर की एक अभिनेत्री	(4)
60.	विवेक ओबेरॉय, अजय देवगन अभिनीत फिल्म, समय	(2)
62.	उदय चोपड़ा अभिनीत फिल्म मेरे ___ की शादी है, दोस्त	(2)
63.	___ मैं और एक तू, दोनों मिले इस तरह	(2)
64.	एक अभिनेता एवं कॉमेडियन, ___ असरानी	(2)
65.	संजीव कुमार, लीना चंदावरकर अभिनीत फिल्म का नाम	(4)
67.	चिट्ठी आई है गाना इस फ़िल्म से है	(2)
69.	आमिर खान, ग्रेसी सिंह अभिनीत फिल्म	(3)
71.	कमल हसन अभिनीत पुष्पक एक ____ फ़िल्म है, मूक	(2)
72.	मणि रत्नम दिग्दर्शित अभिषेक, ऐश्वर्या अभिनीत फिल्म का नाम, लंकेश	(3)

क्रम	ऊपर से नीचे	शब्द संख्या
1.	मूल नेपाल की, सौदागर फ़िल्म की अभिनेत्री	(3,4)
2.	ये ___ रंग कब मुझे छोड़ेगा	(2)
3.	धार्मिक फिल्मों की मशहूर अभिनेत्री जिसने जय संतोषी मां में संतोषी माता का चरित्र निभाया, अनुग्रह	(3,2)
4.	आधुनिक युग में स्वयंवर रचाने वाली अभिनेत्री	(2,3)
5.	गैंगस्टर अबु सलेम की भूतपूर्व प्रेमिका, ___ बेदी	(3)
6.	फ़िल्म निर्देशक केतन मेहता की पत्नी, माया मेमसाब	(4)
7.	दिलीप कुमार की पत्नी	(3,2)
8.	धर्मेन्द्र, हेमा मालिनी, रीना रॉय अभिनीत फ़िल्म, विद्रोह	(4)
16.	बड़े मियां छोटे मियां में गोविंदा की हीरोइन	(3,3)
18.	1975 में जया भादुड़ी द्वारा अभिनीत फिल्म का नाम	(2)
20.	___ मारो ___, मिट जाए गम	(2)
22.	ड्रीम गर्ल	(2,3)
23.	श्री 420 की माया, हिंदी फिल्मों की प्रसिद्ध खलनायिका	(3)
24.	अभिनेता और तेलुगु फ़िल्म निर्माता, ___ रोहित, स्लोगन	(2)
27.	मैंने प्यार किया में सलमान की मां, ___ लागू	(2)
29.	करीना कपूर का निकनेम	(2)
30.	जय संतोषी मां और परदेसी जैसी फिल्मों की प्रसिद्ध अभिनेत्री, ___ कौशल, वन, अरण्य, जंगल	(3)
32.	आयुष्मान खुराना, यामी गौतम, भूमि पेडणेकर की एक फ़िल्म	(2)
33.	नाना पाटेकर, माधुरी दीक्षित अभिनीत एक फ़िल्म, आघात	(3)
34.	सन 1958 की राजेन्द्र कुमार अभिनीत फिल्म, डिवोर्स	(3)
35.	दिल के ____ करके मुस्कुरा के चल दिये	(3)
36.	अमिताभ बच्चन अभिनीत फिल्म, बॉम्बे ___ ___	(1,2)
38.	रोहित शेट्टी दिग्दर्शित, अजय देवगन अभिनीत फिल्म, शेर	(3)
39.	___ करम अपना करेंगे ए वतन तेरे लिए	(2)
40.	अनिल कपूर, अमृता सिंह, पंकज कपूर, अमजद खान अभिनीत फिल्म	(3,1,2)
42.	गोविंदा, मीनाक्षी शेषाद्री अभिनीत फिल्म, परिजन, कुटुंब	(3)
43.	अक्षय कुमार, सैफ अली खान अभिनीत फिल्म, दाम, मूल्य	(3)
44.	खुदगर्ज़, हत्या, इल्ज़ाम जैसी फिल्मों में गोविंदा की हीरोइन	(3)
46.	अमिताभ बच्चन, नाना पाटेकर अभिनीत एक एक्शन प्रधान फ़िल्म, हाहाकार	(4)
47.	भारतीय सिनेमा के शो-मैन	(2,3)
50.	एक भारतीय अभिनेता जिन्होंने बॉलीवुड में ज्यादातर स्टंट फिल्मों जैसे पारसमणि, कोबरा गर्ल इत्यादि में काम किया	(4)
51.	मैं ___ बदनाम, मैं ___ तो नहीं	(3)
54.	सनी देओल, अमीषा अभिनीत एक फ़िल्म, ___ एक प्रेम कथा	(3)
55.	फरहान अख्तर, अर्जुन रामपाल, प्राची देसाई अभिनीत फिल्म	(2,2)
59.	कितनी खूबसूरत ये तस्वीर है, इस गाने की फ़िल्म का नाम	(4)
60.	सुभाष घई दिग्दर्शित शत्रुघ्न सिंहा, अजित अभिनीत फ़िल्म	(5)
61.	सन् 1988 में अमिताभ की एक रद्द फ़िल्म का नाम, शानदार	(4)
62.	अमजद खान और अमिताभ अभिनीत फिल्म का नाम, दोस्ती	(3)
63.	अक्षय कुमार, मधु, अमरीश पुरी की एक फ़िल्म, घोषणा	(3)
65.	___ दिल की धड़कन, लताजी द्वारा गाया हुआ गाना, उन्मत्त	(4)
66.	बैजू ____, भारत भूषण अभिनीत फिल्म	(3)
68.	अमिताभ, दारा सिंह, अमृता सिंह अभिनीत फिल्म, वीर पुरुष	(2)
70.	हर दिल जो प्यार करेगा, वो ___ गाएगा, गीत	(2)
71.	अक्षय कुमार अभिनीत गोल्ड फ़िल्म की हीरोइन, ___ रॉय	(2)

वियतनाम के मध्य भाग में स्थित होई एन (Hoi An) एक ऐसा प्राचीन नगर है, जो समय के साथ चलने के बजाय, समय को अपने भीतर सहेज कर बैठा है। आधुनिक शहरों की भीड़-भाड़ से अलग, होई एन का आकर्षण इसकी शांति, प्राचीन स्थापत्य संरचनाओं, काई से ढके घरों और लालटेन से जगमगाती सड़कों में निहित है। यह नगर वियतनाम की उन जगहों में से एक है जहाँ इतिहास, संस्कृति, वास्तुकला और पारंपरिक जीवनशैली आज भी जीवित रूप में देखी जा सकती है। सन् 1999 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया होई एन, पर्यटकों को एक अद्भुत सांस्कृतिक यात्रा का अनुभव कराता है।

इतिहास की झलक

अपने ऐतिहासिक महत्व और स्थापत्य शैली की वजह से होई एन एक अद्भुत शहर है। होई एन का इतिहास 15वीं से 19वीं सदी के बीच का है जब यह एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय बंदरगाह शहर हुआ करता था। जापान, चीन, भारत और यूरोप के व्यापारी यहाँ सामान खरीदने-बेचने आया करते थे। इस व्यापारिक गतिविधि का असर आज भी शहर की वास्तुकला, खानपान, परंपराओं और धार्मिक स्थलों में देखा जा सकता है। एक समय था जब इसे "फाइफो" नाम से भी जाना जाता था।

यह नगर विशेष रूप से जापानी और चीनी समुदायों के लिए महत्वपूर्ण था। जापानी लोगों ने यहाँ जापानी कवर ब्रिज (Japanese Covered Bridge) का निर्माण किया, जो आज होई एन की पहचान बन चुका है। इसके अलावा, चीनी व्यापारियों ने कई कम्युनिटी हॉल (Assembly Halls) और मंदिर बनाए जो आज भी सांस्कृतिक विरासत के रूप में सुरक्षित हैं।

स्थापत्य और शहरी स्वरूप

यहाँ के प्राचीन घर सदियों से अपनी मूल स्थापत्य कला की सुंदरता को संजोए हुए हैं। होई एन की गलियाँ संकरी और वाहनमुक्त हैं। यहाँ की इमारतें लकड़ी से बनी हुई हैं, जिनकी छतें टाइलों से ढकी होती हैं और दीवारों पर पीले रंग का प्रभावशाली प्रयोग किया गया है। पूरी नगरी में चीनी, जापानी और फ्रांसीसी वास्तुकला का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

नगर के केंद्र में स्थित जापानी कवर ब्रिज (Chùa Cau) 17 वीं सदी में बना एक लकड़ी का पुल है, जो जापानी और वियतनामी वास्तुकला का सुंदर मिश्रण है। इसके दोनों ओर शेर और बंदर की नक्काशीदार मूर्तियाँ हैं, जिन्हें शुभ संकेत माना जाता है।

टैन क्य का पुराना घर, होई एन की सबसे लोकप्रिय और उल्लेखनीय ऐतिहासिक इमारतों में से एक है, यह घर 18वीं सदी के एक व्यापारी का घर है, जिसके अंदर आज भी फर्नीचर और प्राचीन वस्तुएँ मौजूद हैं। अगर आप घर के इतिहास और वहाँ रहने वाले परिवार के बारे में और जानना चाहते हैं, तो आप घर का गाइडेड टूर ले सकते हैं।

संस्कृति और त्योहार

होई एन की सबसे खास बात यहाँ की संस्कृति और पारंपरिक जीवनशैली है। हर माह की पूर्णिमा को यहाँ "लैंटर्न फेस्टिवल" मनाया जाता है, जिसमें पूरा शहर रोशनी से जगमगा उठता है। गलियों और नदियों के किनारे रंग-बिरंगे कागज के लैंटर्न जलाए जाते हैं, लोग मोमबत्तियाँ जलाकर मनोकामनाएं माँगते हैं और संगीत तथा लोक-नृत्य का आयोजन होता है।

होई एन सिटी की नदी पर चलती सैकड़ों नावों और जलती लालटेनों की रोशनी से पूरा शहर जीवंत-सा लगता है। इसी अद्भुत नजारे को देखने के लिए हर साल लाखों पर्यटक आते हैं। इस नगर में हस्तशिल्प, सिल्क, लकड़ी के सामान, मिट्टी के बर्तन और पारंपरिक पोशाकें बहुत प्रसिद्ध हैं। यहाँ के बाज़ारों में चलना किसी संग्रहालय में घूमने जैसा लगता है, जहाँ हर वस्तु

एक कहानी कहती है।

खानपान की विविधता

होई एन का खानपान भी उतना ही विविध और स्वादिष्ट है। यहाँ का पारंपरिक व्यंजन काओ लाऊ– मोटे चावल के नूडल्स, जड़ी-बूटियाँ और भुना हुआ पोर्क बहुत लोकप्रिय है। इसके अलावा बान्ह मी (वियतनामी सैंडविच), व्हाईट रोस डंपलिंग्स और होई एन चिकन राइस भी स्थानीय और विदेशी पर्यटकों के बीच प्रसिद्ध हैं।

शहर में कई कुकिंग क्लासेस भी हैं, जहाँ पर्यटक वियतनामी खाना बनाना सीख सकते हैं, जो एक अनोखा अनुभव होता है।

होई एन के प्राचीन शहर में आकर्षक कैफ़े की भरमार है। पारंपरिक चीनी शैली के चायघरों और देहाती कॉफ़ी हाउस से लेकर आधुनिक कैफ़े तक, यहाँ आपको कई तरह के कैफ़े मिलेंगे। शहर में अलग-अलग स्टाइल वाली अनगिनत कॉफ़ी शॉप हैं। बाहरी और आंतरिक सज्जा के अद्भुत डिज़ाइन के कारण, हर कॉफ़ी शॉप होई एन प्राचीन शहर की एक अनूठी विशेषता है और हर साल बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करती है। न केवल इनका मेनू विविध है, बल्कि ये कॉफ़ी शॉप सैकड़ों खूबसूरत तस्वीरें लेने के लिए बेहतरीन बैकग्राउंड भी प्रदान करती हैं।

आधुनिकता में लिपटा पुरातन नगर

दिन हो या रात, होई एन फोटोग्राफरों के लिए एक स्वप्नलोक है। दिन में, रंग-बिरंगी पुरानी फ्रांसीसी वास्तुकला और खचाखच भरे बाज़ारों की सड़कों पर टहलें। रात में जगमगाती लालटेनों से शहर की ऊर्जा में बदलाव का आनंद लें।

प्राचीन शहर को देखने का सबसे अच्छा तरीका पैदल चलना है, हालाँकि, साइकिल चलाना भी गलियों में घूमने का एक बेहतरीन तरीका है। अगर आप आराम से बैठना और सब कुछ निहारना पसंद करते हैं, तो यहाँ साइक्लो-रिक्शा भी किराए पर उपलब्ध हैं।

अपनी प्राचीन वास्तुकला, पक्की सड़कों और रंग-बिरंगे लालटेनों से सजी विशिष्ट पीली दुकानों के सामने, होई एन को वियतनाम की सबसे खूबसूरत जगहों में से एक माना जाता है, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। 1999 से यूनेस्को की विश्व सांस्कृतिक विरासत स्थल, होई एन को 2021 में विश्व यात्रा पुरस्कारों में एशिया का अग्रणी सांस्कृतिक शहर घोषित किया गया था।

होई एन – एक अनुभव

हालांकि होई एन अब एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल बन चुका है, फिर भी यहाँ की पारंपरिक आत्मा सुरक्षित है। यहाँ आधुनिकता का स्पर्श तो है, लेकिन वो मूल संस्कृति को नष्ट नहीं करता। बिजली के तारों की जगह अब भी हाथ से बनाए गए लैंप झूलते हैं, और बड़ी गाड़ियों की जगह साइकिलें और पैदल चलने वाले लोग अधिक दिखते हैं।

होई एन प्राचीन नगर केवल एक ऐतिहासिक स्थल नहीं, बल्कि एक संवेदनात्मक अनुभव है। यह जगह उन लोगों के लिए आदर्श है जो शांति, संस्कृति, और जीवन की सादगी की तलाश में हैं। यहाँ की हर गली, हर दीवार, हर लैंटर्न और हर व्यंजन एक कहानी सुनाता है वियतनाम की, इसके लोगों की और समय के साथ उनकी जद्दोजहद की।

अपने समृद्ध इतिहास, जीवंत संस्कृति और अद्भुत प्राकृतिक सुंदरता के मनमोहक मिश्रण के साथ होई एन ने दुनिया भर के यात्रियों का दिल जीता है, यह अद्भुत शहर दुनिया भर के घुमक्कड़ों की पसंदीदा जगहों में से एक है।

आरती जोशी
पुस्तकालय अधिकारी-सी

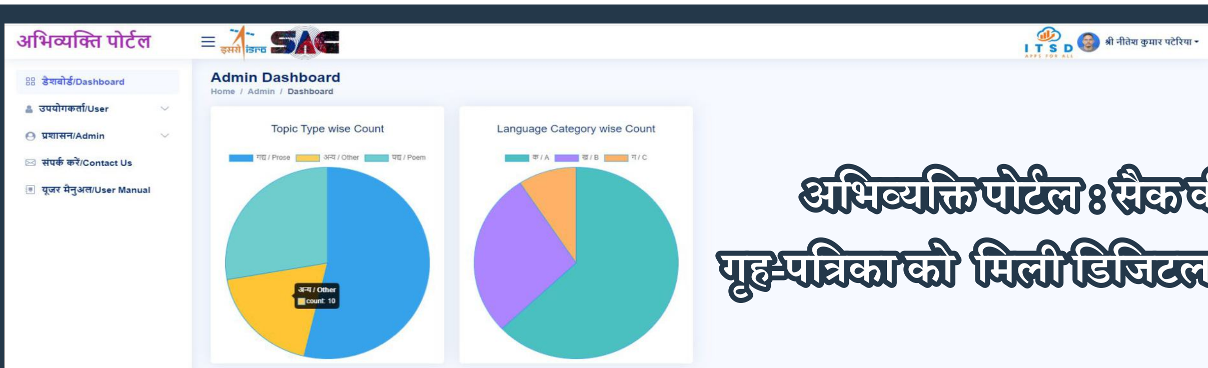

अभिव्यक्ति पोर्टल : सैक की गृह-पत्रिका को मिली डिजिटल उड़ान

अभिव्यक्ति पोर्टल एक अभूतपूर्व नयी वेब एप्लिकेशन है, जिसे हमारे केंद्र की गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के लिए हिंदी रचनाओं को एकत्र करने, समीक्षा करने और प्रकाशित करने की पूरी प्रक्रिया को सुव्यवस्थित और डिजिटल बनाने के लिए डिजाइन किया गया है। यह अभिनव मंच दक्षता और पहुंच में एक महत्वपूर्ण सिद्धि है, जो हमारे रचनाकारों और हमारी संपादकीय टीम दोनों के लिए एक सरल प्रक्रिया का वादा करती है।

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र की गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' में शामिल की जाने वाली रचनाओं की गुणवत्ता को आकर्षक बनाए रखने के लिए इसमें प्रकाशित रचनाओं के लेखों को पुरस्कृत किया जाता है। सालों से हमारी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के लिए हिंदी लेखों, कविताओं और अन्य रचनात्मक कृतियों को प्रस्तुत और समीक्षा करने की प्रक्रिया काफी हद तक मैन्युअल थी। इससे श्रम एवं समय अधिक लगता था। इन चुनौतियों का समाधान करने, प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर एक मजबूत और उपयोगकर्ता के अनुकूल प्रणाली बनाने के लिए अभिव्यक्ति पोर्टल विकसित किया गया है।

अभिव्यक्ति पोर्टल क्या है?

अभिव्यक्ति पोर्टल प्रारंभिक प्रस्तुति से लेकर अंतिम प्रकाशन निर्णय तक हर चरण को कवर करते हुए एक व्यापक समाधान प्रदान करता है:

- **सरल प्रस्तुति :** रचनाकार अब अपनी हिंदी प्रविष्टियों को सीधे एक सुरक्षित ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से आसानी से अपलोड कर सकते हैं। अब हार्डकॉपी या ईमेल अटैचमेंट की आवश्यकता नहीं रहेगी, जिससे प्रक्रिया तेज और अधिक सुविधाजनक हो जाएगी।

- **सुव्यवस्थित समीक्षा प्रक्रिया:** हमारी संपादकीय टीम को एक केंद्रीकृत डैशबोर्ड मिलेगा, जहां वे सभी प्रस्तुत प्रविष्टियों को देख सकते हैं। यह मंच कुशल समीक्षा, एनोटेशन और सहयोग की सुविधा प्रदान करता है, जिससे प्रत्येक प्रस्तुति का गहन और सुसंगत मूल्यांकन सुनिश्चित होता है।

- **स्पष्ट स्वीकृति/अस्वीकृति:** अभिव्यक्ति पोर्टल प्रविष्टियों को स्वीकार या अस्वीकार करने के लिए एक पारदर्शी तंत्र प्रदान करता है, जिसमें रचनाकारों को प्रतिक्रिया प्रदान करने के विकल्प भी शामिल हैं। यह पारदर्शिता हमारी पत्रिका के लिए उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री बनाए रखने में मदद करती है।

- **केंद्रीकृत रिकॉर्ड रखना:** सभी प्रस्तुतियाँ, समीक्षाएं और निर्णय सिस्टम के भीतर सुरक्षित रूप से संग्रहीत किए जाते हैं, जिससे एक व्यापक और आसानी से सुलभ रिकॉर्ड बनता है। यह रुझानों और प्रदर्शन को ट्रैक करने में भी सहायता करता है।

डिजिटलीकरण के लाभ

अभिव्यक्ति पोर्टल से अनेक लाभ हैं:

- **बढ़ी हुई दक्षता:** कई मैन्युअल कार्यों को स्वचालित करके, अभिव्यक्ति पोर्टल प्रस्तुति, प्रबंधन व समीक्षा के लिए आवश्यक समय और प्रयास को काफी कम कर देगा।

- **बढ़ी हुई सटीकता:** डिजिटलीकरण मानवीय त्रुटि के जोखिम को कम करता है, यह सुनिश्चित करता है कि प्रविष्टियों का सही ढंग से वर्गीकरण, समीक्षा और संशोधन किया जाए।

- **बेहतर पहुंच:** रचनाकार अपनी प्रविष्टि कभी भी, कहीं से भी जमा कर सकते हैं, जिससे हमारी पत्रिका में योगदान देना आसान हो जाता है।

- **अधिक पारदर्शिता:** अभिव्यक्ति की स्पष्ट कार्यप्रवाह और रिकॉर्ड-कीपिंग क्षमताएं संपादकीय प्रक्रिया में पारदर्शिता को बढ़ावा देती हैं।

- **संधारणीय कार्यकुशलता:** कागज-आधारित प्रक्रियाओं को न्यूनतम करना पर्यावरणीय संधारणीयता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता के अनुरूप है।

हमें विश्वास है कि अभिव्यक्ति पोर्टल हमारी गृह पत्रिका के लिए हिंदी सामग्री को प्रबंधित करने के तरीके को बदल देगा, जिससे इसमें शामिल सभी लोगों को अधिक कुशल, सुलभ और आकर्षक अनुभव मिलेगा। हम अपने सभी रचनाकारों को इस नए मंच का प्रयोग कर इसके द्वारा लाए गए अंतर का अनुभव करने की आशा करते हैं।

नीतेश कुमार पटैरिया
वैज्ञा./अभि.-एससी

रतन लाल लववंशी
वैज्ञा./अभि.-एसएफ

थोड़ा हँस लें!

एक बार गाँव के एक सज्जन को अपनी बकरी को शहर ले जाना था। जब वो बकरी को लेकर बस में चढ़ने लगे तो कंडक्टर ने ले जाने से मना कर दिया।

पर उनको तो शहर जाना ही था।

अगले दिन बकरी को बुर्का पहना दिया और कंडक्टर को बताया कि ये मेरी नानी हैं। बुढ़ापे के कारण झुक गयी हैं और थोड़ी चलने में भी दिक्कत है। उन्हें बस में बैठा लिया गया।

कुछ देर बाद बकरी ने पॉटी कर दी।

तभी पास बैठा बच्चा चिल्लाया, अंकल! आपकी नानी की रुद्राक्ष की माला टूट गयी।

टीचर ने एक छात्र से पूछा, बेटा 'दर्दनाक' का मतलब बताओ?

बच्चे ने कहा- सर, जब हमारे सर में दर्द होता है तो उसे सरदर्द, पेट में दर्द तो पेटदर्द उसी तरह हमारी नाक के दर्द को 'दर्दनाक' कहते हैं।

एक बार एक तगड़ा-चौड़ा पहलवान बस में चढ़ा। कंडक्टर ने उससे टिकट लेने के लिए कहा 'भाई-साहब! टिकट, पहलवान भारी आवाज़ में बोला-'हम टिकट नहीं लेते'। डर के मारे उसने कुछ नहीं कहा, पर पहलवान की बात उसने अपने दिल पर ले ली। उसने जिम जाकर बहुत मेहनत की, पसीना बहाया और पाँच-छह महीनों में वो भी पहलवान की तरह खूब लंबा-चौड़ा हो गया। इन पाँच-छह महीनों में भी वो पहलवान पूछने पर भी टिकट नहीं लेता, हमेशा यही कहता कि हम टिकट नहीं लेते। अब इस हालिया लंबे-चौड़े हुए कंडक्टर ने टिकट के लिए कहा-'भाई! टिकट ले ले'! पहलवान वही बोला-'हम टिकट नहीं लेते'। कंडक्टर छाती फुलाते हुए बोला-क्यों नहीं लेगा बे? पहलवान बोला-पास बनवा रखा है पास।

मंत्रम वार्ष्णेय
पुत्र-जितेन्द्र कुमार (वैज्ञा./अभि.-एसएफ)

अभिव्यक्ति अंक 23 वर्ग पहेली के उत्तर

1 द	2 र	मि	3 या	4 न		5 प्रे	6 र	7 क		8 मा	ध्य	9 मि	10 क	
11 गा	ज		12 पि	त	13 र		14 जा	न	15 व	र		16 त	पि	17 श
बा		18 स	त		19 ह	20 ज		21 क	म		22 आ		23 ला	ल
ज		त्का		24 ज	मा	न	25 त		26 न	27 ग	र			
	28 पा	र	29 स		न		30 ह	31 त		जा			32 आ	33 ज
34 पि	ता		35 ह	वा		36 श	त	क		37 न	मा	38 ना		त
	39 ल	40 ह	र		41 प	र		री		न		42 र	43 त	न
44 आ	लो	क		45 ज	र		46 स	ब	47 क		48 आ	द	र	
49 का	क		50 स	मा	चा	51 र		52 न	रा	ध	म		53 की	र्ति
		54 आ	प	दा		55 फू	ल		ग्रे		द		ब	
56 बा		57 वा	न	र		च		58 सौ		59 अ	नी	60 श		61 ए
62 प	रा	ग			63 ट	क्क	64 र			नं		ल		ह
		म		65 खु		66 र	ज	67 क		त		68 भ	69 रो	सा
70 प्र	71 सू	न	72 जो	शी			73 त	वा	री	ख			74 व	न
75 सं	त		र		76 रा	ज़		य		77 स	र	78 का	र	
ग		79 अ	दा	ल	त		80 दा	द		ब		री		
	81 अ		र		रा		ता		82 ता	र		83 ग	ल	84 त
85 ल	ख	86 न			87 नी	88 त		89 आ		90 दा	द	र		ल
91 लि	बा	स		92 पा		93 म	नु	भा	94 क	र			95 से	वा
96 त	र		97 आ	स		स		98 र	मी		99 ब	रा	ब	र

कुछ तो लोग कहेंगे

किशोर कुमार जी का गाया हुआ एक गीत है "कुछ तो लोग कहेंगे" जो 1972 में प्रदर्शित फिल्म 'अमर प्रेम' की एक अमर रचना है, जिसे आनंद बक्षी जी ने लिखा था और आर.डी. बर्मन जी ने संगीतबद्ध किया था। प्रतिभाशाली गायक श्री किशोर कुमार के गीत "कुछ तो लोग कहेंगे" को एक उत्कृष्ट कृति के रूप में स्वीकार किया गया है जो युग और शैली की सीमाओं को पार करती है। यह गीत वर्तमान में भी उतनी ही प्रासंगिकता रखता है जितनी 53 साल पहले थी।

यह गीत न केवल एक प्रेम गीत है, बल्कि यह समाज की आलोचनाओं, नकारात्मक राय, आख्यान और व्यक्तिगत स्वतंत्रता, सेल्फ लव और सेल्फ रेस्पेक्ट के बीच संतुलन स्थापित करने की प्रेरणा भी देता है।

अगर आप पहली पंक्ति की ओर ध्यान दें तो लिखा गया है कि, "कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना। छोड़ो, बेकार की बातों में कहीं, बीत न जाए रैना।" ये पंक्तियाँ हमें समझाना चाहती हैं कि समाज की आलोचनाएं, राय और अफवाहें अनगिनत हैं। उनसे विचलित होना या उन पर जरूरत से ज्यादा मंथन करना पूर्णतः व्यर्थ है। हमें अपनी राह पर चलते हुए इन सब निरर्थक बातों को नजरअंदाज करने की कोशिश करनी चाहिए। ध्यान से सुनने पर ये गीत एक दार्शनिक आधारशिला के रूप में उभरता है। ये पंक्ति केवल एक अवलोकन नहीं है, बल्कि हमारे द्वारा लिए गए व्यक्तिगत निर्णय और समाज द्वारा हमारे निर्णयों पर की गई आलोचना पर एक गहरी टिप्पणी है।

हमें उन आख्यानों की गहन जांच करने के लिए आमंत्रित किया जा रहा है, जिन पर हम ध्यान देते हैं, चिंतन-मनन करते हैं और कभी-कभी तो एक्शन भी लेते हैं। जिन लोगों के हम आस-पास रहते हैं, जिन्हें हम अपनी नियति को आकार देने की अनुमति देते हैं, जिनकी बात हम सुनते हैं, जिनके ओपिनियन/राय हमारे लिए मायने रखते हैं, क्या वो लोग, जो आपने चुने हैं, क्या उनकी राय हमेशा सटीक, सत्य में लिपटी, बिना किसी पक्षपात के होती हैं? यह हमें सोचने पर मजबूर करता है-हम किन सामाजिक कथाओं को स्वीकार करते हैं? हम किन आवाज़ों को मौन समर्थन देते हैं? क्या हमारी चुप्पी भी किसी अन्याय का हिस्सा बनती है?

आगे की पंक्तियाँ कुछ ऐसी हैं - "तू कौन है, तेरा नाम है क्या, सीता भी यहाँ बदनाम हुई।" इस पंक्ति में "सीता" जैसी आदर्श नारी के चरित्र का संदर्भ लेकर यह स्थापित किया गया है कि यदि समाज ने माता सीता तक को प्रश्नों और संदेह से नहीं बख्शा, तो किसी और स्त्री या व्यक्ति का मूल्यांकन करना उनके लिए सामान्य बात है। समाज और उसके लोगों की समझ, उनकी दूसरे लोगों की आलोचनाएं अक्सर पवित्रता और नैतिकता से नहीं, बल्कि पूर्वग्रहों और अधूरी समझ से तय होती हैं।

"फिर क्यों संसार की बातों से भीग गए तेरे नैना…" यह पंक्तियाँ उस विचार को उजागर करती हैं जब व्यक्ति जानता है कि उसका दोष नहीं है, फिर भी दूसरों की नजरें, ताने और अपेक्षाएँ उसे अंदर से तोड़ देती हैं। ये पंक्तियाँ भीतर की पीड़ा और बाहरी मुखौटे के बीच के द्वन्द को उजागर करती हैं - जहां व्यक्ति निर्दोष होकर भी अपराधबोध से ग्रस्त हो जाता है।

"कुछ तो लोग कहेंगे" केवल एक गीत नहीं, बल्कि यह समाज की आलोचनाओं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच संतुलन स्थापित करने का जरिया है। ये पंक्तियाँ समाज के दोगलेपन को उजागर करती हैं। जो लोग दूसरों की आलोचना करते हैं, वही स्वयं भी उसी प्रकार की गलतियों, यहाँ तक कि पाप समान गलतियों में लिप्त होते हैं। यह गीत हमें ये प्रेरणा दे रहा है कि हमें समाज के दबावों से ऊपर उठकर अपनी सच्चाई को अपनाना चाहिए, समाज की बातों से विचलित हुए बिना हमें अपनी राह पर चलते रहना चाहिए।

हर व्यक्ति इस पृथ्वी पर अद्वितीय है। हम सभी में कुछ-न-कुछ विशेषताएँ हैं जो हमें दूसरों से अलग बनाती हैं। हमारे व्यक्तित्व की सुंदरता हमारे दोषों में भी निहित है। कोई भी जन्म से पूर्ण नहीं होता; हर कोई अपनी-अपनी तरह से अपूर्ण है। लेकिन वही खामियां, कमियां और अपूर्णताएं हमें मनुष्य बनाती हैं।

समाज अक्सर हमसे कुछ विशेष मानकों की अपेक्षाएँ करता है और लोग अक्सर यह धारणा रखते हैं कि जो भी उनसे अलग सोच रखता है वह गलत है, लेकिन समझने समझाने की बात सिर्फ इतनी है कि हमें समाज की अपेक्षाओं के अनुसार नहीं, बल्कि अपनी आत्मा की आवाज़ के अनुसार जीना चाहिए। जब हम अपनी असली पहचान को स्वीकार करते हैं, तो हम बिना किसी दबाव के अपने लिए सही निर्णय ले सकते हैं।

हमारी असली कीमत समाज द्वारा निर्धारित नहीं होती, ना कभी की जा सकती है। हमारे मूल्यांकन की प्रक्रिया हमारे अपने आत्म-सम्मान और

आत्म-प्रेम पर आधारित होनी चाहिए। जब हम अपनी असली कीमत को समझते हैं, उसे स्वीकार करते हैं, तो हम बाहरी अनुमोदन की आवश्यकता महसूस नहीं करते, उसे खोजते नहीं, उसे पाने की चाह नहीं करते। और अगर हम यह करने में कामयाब हो जाते हैं, तभी हम "कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना" कहकर समाज की आलोचनाओं को नकार सकते हैं।

समाज की अपेक्षाओं से परे जाकर, हमें अपनी असली पहचान, ख़ुशी, वैल्यूज, मूल मान्यताओं को समझना चाहिए। जब हम अपनी असली पहचान को स्वीकार कर लेंगे, तो हम समाज की आलोचनाओं से मुक्त होकर अपने जीवन को सशक्त और उन्मुक्त बना सकेंगे।

प्रज्ञा अरोरा
वैज्ञा./अभि.-एसई

धुआँ-धुआँ शहर, बुझती ज़िंदगियाँ

धुआँ-धुआँ शहर है, साँसें भी जहर हैं,
पेड़ों को काट-काट, किया खुद पर कहर हैं।
सूरज भी शर्मिंदा, धुंध में खो गया,
नीला जो था आसमां, काला क्यों हो गया?
हवा में घुला ज़हर, चुभती हैं किरणें,
हर ओर फैली हैं, सिसकती चिंताएँ गहरी।
सड़कें हैं धूल भरी, शोर की हैं दीवारें,
पंछी भी लौट चले, छोड़कर ये गलियाँ सारी।
गंगा भी रो रही, मटमैली धार में,
ज़हर घोल दिया है हमने, इसके साफ़ बहाव में।
इंसान भी बीमार, पशु भी लाचार,
कैसे बचेगा जीवन, जब चारों ओर अंधकार?
फेफड़ों में जलन है, दिल में बेचैनी,
ज़हरीली इस हवा ने, हर सांस है छीनी।
अब भी न जागे हम, तो कुछ न बचेगा,
हर ओर मौत का तांडव, जीवन सिसकेगा।
आओ हम संकल्प लें, हरियाली फिर से लाएँ,
शहर को बचाएँ, प्रदूषण को मिटाएँ!

नेहाबेन किशनकुमार अपारनाथी
विवाहिती-अपारनाथी किशनकुमार मोहनगर
(तकनीशियन-एफ)

इन्सान

भोला था वो बचपन
हम सब थे इन्सान,
दोस्त थे हम सबके
ना कोई गिला, ना अपमान।
पता नहीं चला कब,
बने दोस्त अनजान,
खेलते थे हम बेफिक्र,
अब लेने लगे एक-दूजे की जान।
धर्म था वो औज़ार,
दिलाए तुझे आशा भरोसा,
जब धर्म ही बने हथियार,
तो हुआ भगवान भी निराश-सा।
कौन जाने कहाँ से आए,
माना ये सच है यहाँ,
पर अंत में तू कहाँ जाए,
निर्भर तुझ पर है, तू जान।
भूल गए कि हम सभी,
हैं संतान उन्हीं की,
समझो जो बने हैं हम,
अपने कर्मों के फल से।
जात, रंग जो भी हो,
हम सब हैं इन्सान,
जो डाले इसमें बाधा,
वो बने सबके हैवान।
बढ़ो आगे अपने पथ,
जान परख के अपना सच।
ना हो किसी का हथियार तू,
पर हो सके तो बन कवच।
नहीं आसान जानो
मुसाफ़िर,
जो बनना है इन्सान,
जब हैं अंदर-बाहर
सब तरह के शैतान।
आसान है चले जाना,
दुनिया की लहर में,
भूल के खुद को सबको,
माया की प्रलय में।
संभाल खुद को, गिरो न तू,
ईश्वर हैं हम सब में,
जब होगी ये पहचान तुझको
बढ़ोगे तुम जीवन में।
यही कर्म हम सब का है
बनना है हमें इन्सान,
मिटा दें हैवानों को,
हर हर इन्सान है, इन्सान।

श्रीजित बी
विवाहिती-अस्वथी विजय कृष्ण
(वैज्ञा./अभि.-एसडी)

कू ची टनल: वियतनाम की धरती में छिपा वीरता का इतिहास

वियतनाम के हो ची मिन्ह सिटी से लगभग 50 किलोमीटर दूर है -कू ची टनल (Cu` Chi Tunnels)। हम अप्रैल 2025 में वियतनाम घूमने गए थे और हो ची मिन्ह सिटी (पुराना नाम-सायगॉन) के दर्शनीय स्थलों की हमारी सूची में यह सबसे ऊपर था। कू ची टनल का निर्माण द्वितीय विश्व युद्ध के समय फ्रांसीसी उपनिवेशवादियों के विरोध में आरंभ हुआ, परंतु अमेरिका-वियतनाम युद्ध (1955-1975) के दौरान वियत कॉन्ग (Viet Cong) गुरिल्ला लड़ाकों द्वारा इसका सबसे अधिक उपयोग हुआ। यह सुरंग प्रणाली लगभग 250 किलोमीटर तक फैली हुई थी।

सुरंगों की यह प्रणाली न केवल सैनिकों के छिपने का स्थान थी, बल्कि यहां रहने, खाने, हथियार रखने और इलाज करने की भी पूरी व्यवस्था थी।

यह भूमिगत नेटवर्क तीन स्तरों में फैला हुआ था:

1. पहला स्तर -सतह से लगभग 3-4 मीटर नीचे
2. दूसरा स्तर -6 मीटर नीचे
3. तीसरा स्तर -लगभग 10 मीटर गहराई में, जहाँ से भागने के लिए नदियों तक रास्ते बनाये गए थे।

इन सुरंगों में ऑक्सीजन का इंतज़ाम, रसोईघर का धुआं निकालने की तकनीक, गुप्त दरवाजे और दुश्मनों के लिए फंदों की व्यवस्था भी थी। अपने से कई गुना बड़े, समृद्ध और उन्नत देश की सेना को पछाड़ने के लिए नन्हें से देश की सेना वियत कॉन्ग ने अभूतपूर्व बुद्धिमत्ता और शौर्य का परिचय दिया।

कू ची टनल का टूर दो हिस्सों में होता है। पहले हिस्से की शुरुआत में इन्स्टाग्राम पर वायरल छोटा-सा छिपा हुआ ट्रैपडोर (गुप्त दरवाजा) दिखाया गया है। टनल में प्रवेश करने का जो रास्ता है, उसके ढक्कन को मिट्टी और पत्तियों से ढककर आसपास के वातावरण से बिलकुल मेल खाता बना दिया जाता है। अगर कोई आपको बताए कि यहां ट्रैपडोर है, तभी आप उसे पहचान पाएंगे, वरना उसे खोज पाना लगभग नामुमकिन है। इसके अंदर जाकर ढक्कन बंद करना दमघोंटू अनुभव है। कुछ लोग इससे घबरा भी जाते हैं (claustrophobia हो जाता है)।

आगे हमने तरह-तरह के ट्रैप और हथियार देखे। अमेरिका के एक टैंक को वियत कॉन्ग सैनिकों ने तबाह कर दिया था, वह आज भी वहीं रखा हुआ है। हमें दुश्मन के सैनिकों को घायल करने और मारने के लिए बांस की कीलें, फिसलने वाले दरवाजे, छिपे हुए गहरे गड्ढे आदि कई तरह के फंदे दिखाए गए। उसके बाद हमने वियत कॉन्ग सैनिकों की यूनिफ़ॉर्म और जूते बनाने की वर्कशॉप देखी। वियत कॉन्ग सैनिकों की वेशभूषा पहने कुछ मॉडल भी रखे हुए हैं।

आधा टूर होने के बाद हम शूटिंग रेंज में पहुंचे। वहां 25 डॉलर का शुल्क देकर एके47 बंदूक चलाने का अनुभव लिया जा सकता था। हम लोगों ने शूटिंग की। बंदूक की आवाज को दबाने के लिए हमें कान ढकने वाले इयरमफ दिए गए। उसके बावजूद गोली की आवाज और गोली छूटने पर बंदूक का झटका, युद्ध की भयावहता का आभास करा रहे थे। युद्ध के दबाव के बिना, खाली शूटिंग रेंज में सिर्फ 10 गोलियां चलाने पर ऐसा लग रहा था, तो सचमुच युद्ध होने पर सैनिकों को कैसा लगता होगा? यही विचार हम सबके मन में आ रहा था।

शूटिंग रेंज के बाहर एक सॉविनियर की दुकान थी, वहां गोलियों के खाली हिस्से से प्लेन, टैंक के मॉडल और की-रिंग आदि चीजें बनाकर बेचने के लिए रखी हुई थीं। टनल टूर के अगले हिस्से में हमने कमांडर का बंकर देखा, कहने को वह टनल का सबसे वैभवशाली और आरामदायक हिस्सा था, क्योंकि वह लगभग 8*10 फुट का कमरा था, जिसमें एक छोटा पलंग और कुछ कुर्सियां रखी थीं, और जहां हम एकदम सीधे खड़े हो पा रहे थे। वैसे देखा जाए, तो शांतिकाल में किसी साधारण व्यक्ति की झोंपड़ी उससे ज्यादा आरामदायक लगेगी। युद्ध आराम और शांति के मायने कितने बदल देता है।

पर्यटकों को सुरंग में आवाजाही का अनुभव कराने के लिए एक हिस्से को तैयार किया गया था। उसमें गाइड के साथ 20 मीटर, 40 मीटर और 60 मीटर लंबाई तक जाने की अनुमति थी। शुरू के हिस्से में बच्चों की तरह हथेलियों और घुटनों के सहारे चले, फिर सुरंग की ऊंचाई कम होती गई और हम नीचे झुकते गए। अंतिम हिस्से में तो पेट और कोहनियों के बल रेंगकर बाहर निकले।

मिट्टी की बनी "हो ची मिन्ह की रसोई" में दिखाया गया कि कैसे धुएं को ज़मीन के नीचे ही रोकने की तकनीक अपनाई जाती थी ताकि अमेरिकी हवाई जहाज़ों को कोई सुराग न मिले। साथ ही, वहां पर्यटकों के लिए पारंपरिक वियतनामी "कसावा" (शकरकंद जैसा कंद) और ग्रीन टी भी रखे गए हैं, जो वियत कॉन्ग सैनिकों का मुख्य भोजन हुआ करते थे।

वर्तमान में सरकार ने इन सुरंगों को सुरक्षित और सुलभ बनाने के लिए विशेष प्रयास किए हैं। कुछ सुरंगों को चौड़ा किया गया है ताकि पर्यटक उसमें प्रवेश कर सकें।

कू ची टनल केवल वियतनाम की ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया की अनमोल ऐतिहासिक धरोहर है। यह स्थान हमें यह सिखाता है कि जब बात अपनी मातृभूमि की रक्षा की हो, तो सीमित संसाधन भी पर्याप्त हो सकते हैं। ये सुरंगें सिर्फ मिट्टी की नहीं बनी हैं, इनमें संकल्प, तपस्या और बलिदान का फौलाद भी लगा है।

भूपेंद्र जैन
विवाहिती-सोमा करनावट (कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी)

स्वस्थ जीवन के लिए योग

आज के दौर में, चाहे पुरुष हो या महिला, हर पेशेवर एक ही चुनौती का सामना कर रहा है: लंबे समय तक बैठकर काम करना। यह हमारी आधुनिक जीवनशैली का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है, लेकिन इसके गहरे नुकसान हैं। लगातार डेस्क पर बैठे रहने से होने वाली शारीरिक अकड़न और काम के दबाव से पनपने वाला मानसिक तनाव, ये दोनों मिलकर हमारे समग्र कल्याण को प्रभावित करते हैं। लेकिन निराश होने की ज़रूरत नहीं है! योग एक प्राचीन और प्रभावी समाधान है जो आपको इन चुनौतियों से निपटने और एक स्वस्थ, ऊर्जावान जीवन जीने में मदद कर सकता है। जैसा कि योगसूत्र में कहा गया है: "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" (योग मन की वृत्तियों का निरोध है), जिसका अर्थ है कि योग मन की चंचलता को शांत करता है।

पेशेवर जीवन से जुड़ी सामान्य समस्याएँ: एक अवलोकन:
आइए, सबसे पहले उन आम समस्याओं पर नज़र डालें जिनसे पेशेवर लोग जूझते हैं:

शारीरिक समस्याएँ:

- पीठ दर्द और गर्दन-कंधे में अकड़न
- कलाई और हाथों में परेशानी
- आँखों पर तनाव
- गतिहीन जीवनशैली के प्रभाव

मानसिक समस्याएँ:

- तनाव और चिंता
- एकाग्रता में कमी
- बर्नआउट और थकान
- नींद संबंधी समस्याएँ

योग: इन समस्याओं का प्राकृतिक समाधान:
योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि यह शरीर, मन और श्वास को संतुलित करने का एक समग्र विज्ञान है। इसके आसन, श्वास तकनीकें (प्राणायाम) और ध्यान आपको इन समस्याओं से राहत दिलाने में अद्भुत रूप से प्रभावी हो सकते हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि इनमें से कई अभ्यासों को आप अपने कार्यक्षेत्र में, अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे या अपनी डेस्क के पास आसानी से कर सकते हैं।

कार्यक्षेत्र में किए जा सकने वाले सरल योग अभ्यास:
यहाँ कुर्सी पर बैठकर किए जाने वाले कुछ आसन (Seated Poses) और खिंचाव दिए गए हैं जो पेशेवरों के लिए विशेष रूप से सहायक हैं:

- **बैठे हुए रीढ़ की हड्डी का घुमाव (Seated Spinal Twist):** अपनी कुर्सी पर किनारे की ओर बैठें, अपने धड़ को एक तरफ मोड़ें और सहारे के लिए कुर्सी की पीठ को पकड़ें। यह पीठ की अकड़न को कम करता है और रीढ़ की गतिशीलता में सुधार करता है।

- **बैठे हुए मार्जरासन-बिटिलासन (बिल्ली-गाय खिंचाव) (Seated Cat-Cow Stretch):** कुर्सी पर बैठे हुए अपनी पीठ को गोल और मेहराबदार करने के बीच बारी-बारी से बदलें। यह रीढ़ की हड्डी के लचीलेपन को बढ़ाता है और पीठ व गर्दन के तनाव को कम करता है।

- **बैठे हुए कबूतर मुद्रा (Seated Pigeon Pose):** एक टखने को विपरीत घुटने पर रखें और बाहरी कूल्हे में खिंचाव महसूस करने के लिए मुड़े हुए घुटने पर धीरे से दबाएँ। यह कूल्हों की अकड़न के लिए बहुत फायदेमंद है।

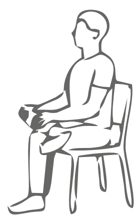

- **गर्दन के खिंचाव (Seated Neck Stretches):** धीरे-धीरे अपने सिर को एक तरफ झुकाएं, अपने कान को कंधे की ओर लाएँ, ताकि गर्दन का तनाव दूर हो सके।

- **कलाई और उंगलियों के खिंचाव (Wrist and Finger Stretches):** अपनी बाहों को फैलाएं और अपनी कलाइयों, उंगलियों और अंगूठों को धीरे-धीरे मोड़ें और फैलाएं। यह टाइपिंग और माउस के उपयोग से होने वाले तनाव को दूर करता है।

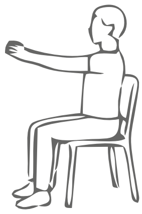

- **ईगल आर्म्स (Eagle Arms):** अपनी बाहों को अपने सामने क्रॉस करें, हथेलियों या हाथों के पिछले हिस्से को एक साथ लाएँ। यह कंधों और ऊपरी पीठ में तनाव कम करने में मदद करता है।

- **बैठे हुए फॉरवर्ड फोल्ड (Seated Forward Fold):** कूल्हों से आगे झुकें, अपनी छाती को अपनी जांघों की ओर लाएं। यह पीठ, हैमस्ट्रिंग और कंधों को खींचने में मदद करता है।

- **बैठे हुए अर्धचंद्रासन (Seated Crescent Moon Pose):** एक हाथ को ऊपर उठाएँ और एक तरफ झुकें, जिससे आपके शरीर के किनारे पर खिंचाव महसूस हो। यह मुद्रा और श्वास में सुधार कर सकता है।

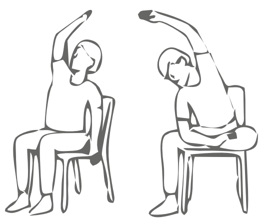

योग को अपनी दिनचर्या में कैसे शामिल करें?

- **छोटे-छोटे ब्रेक:** हर 60-90 मिनट में 5-10 मिनट का ब्रेक लें और इनमें से 2-3 अभ्यास करें।

- **नियमितता:** सबसे महत्वपूर्ण है नियमितता। भले ही आप कम समय के लिए करें, लेकिन प्रतिदिन करें।

- **अपने शरीर की सुनें:** याद रखें, आपका स्वास्थ्य आपकी सबसे बड़ी संपत्ति है। इसे अनदेखा न करें। कार्यक्षेत्र में योग का अभ्यास करके, आप न केवल शारीरिक दर्द और अकड़न से मुक्ति पा सकते हैं, बल्कि आप मानसिक तनाव को कम कर, अपनी एकाग्रता को बढ़ाकर और अपनी समग्र ऊर्जा को बढ़ाकर अपनी उत्पादकता और कार्य संतुष्टि में भी सुधार कर सकते हैं।

मोहित आनंद
वैज्ञा./अभि.-एसएफ

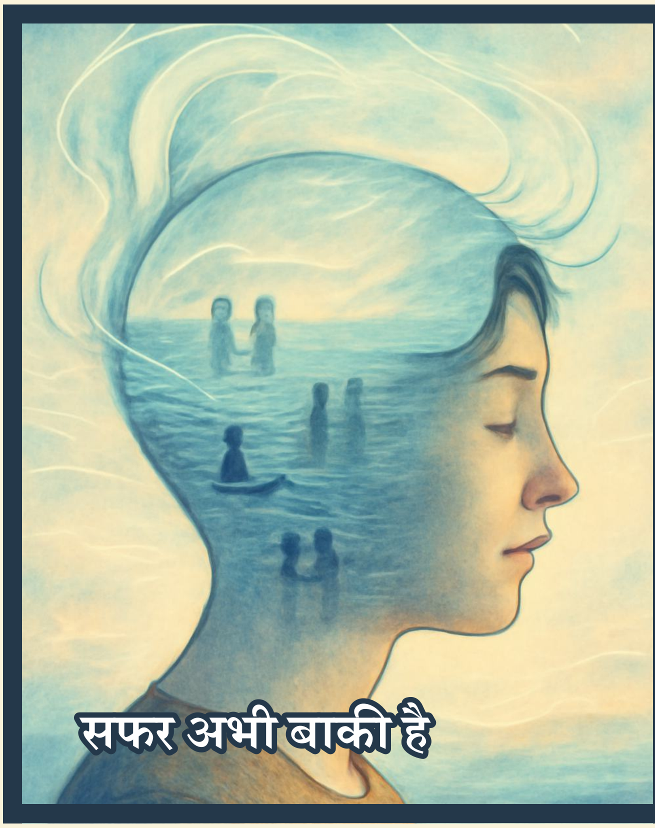

सफर अभी बाकी है

हम उपग्रह छोड़ने में सफल हो गये,
लेकिन पूर्वाग्रह छोड़ना अभी बाकी है।

फेसबुक पर हजारों मित्र बन गये,
बचपन के मित्र को ढूंढना अभी बाकी है।

हम मंगल ग्रह में प्रवेश कर गये,
हृदय में मंगल प्रवेश करना अभी बाकी है।

हम समुद्र की गहराई तक पहुंच गये,
दिलों की गहराई तक पहुंचना अभी बाकी है।

सात समुद्र पार की आवाज सुन लेते हैं,
सात कदम पास वाले को सुनना अभी बाकी है।

हम यात्रा धामों के प्रवास में सफल हो गये,
आत्मा के अंदर का सफर अभी भी बाकी है।

विनोदचंद्र एम पटेल
सहायक अभियंता

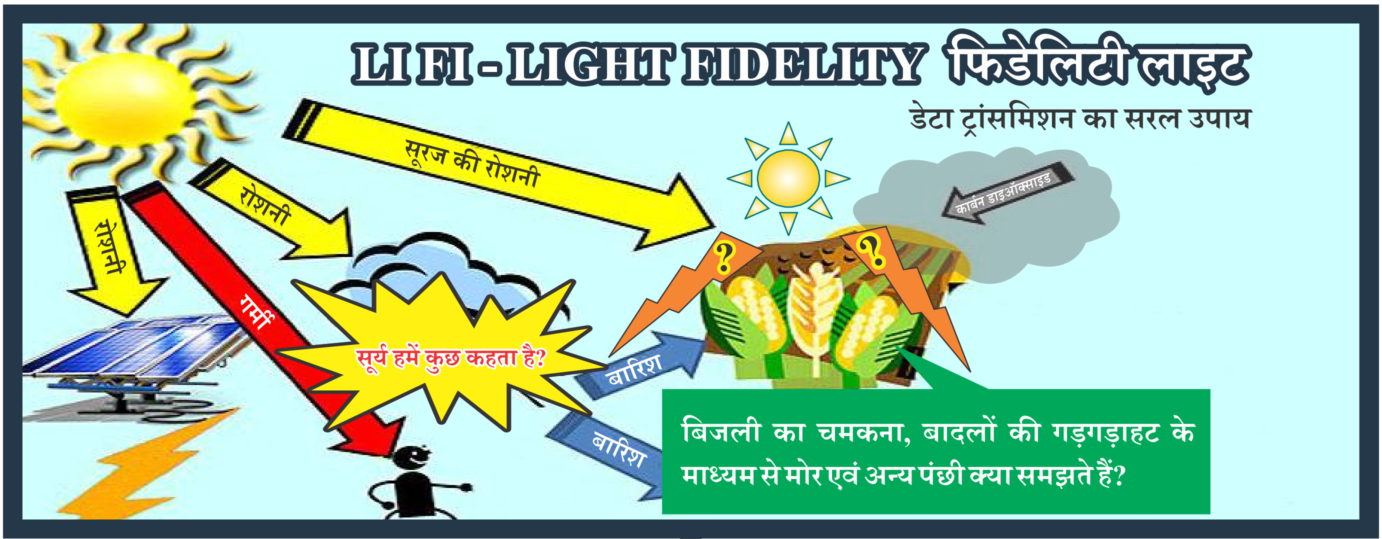

लाइट फिडेलिटी के बारे में –

LiFi - light fidelity, लाइट फिडेलिटी तकनीक जर्मन भौतिक विशेषज्ञ हराल्ड हास ने 2011 में प्रस्तुत की। इस तकनीक द्वारा डेटा को लाइट के सिग्नल द्वारा ट्रांसमिट किया जा सकता है। सूरज की रोशनी हमें काफ़ी जानकारी देती है। सुबह की किरण जैसे ही धरती पर आती है हमें दिन की शुरुआत का पता चलता है। यही जानकारी प्रकृति हमें लाइट के माध्यम से प्रारंभ से देती आ रही है। दोपहर की तेज धूप बताती है कि अब छाया में रहो, अपने-आप को बचाओ। शाम की ढलती किरणें पशु-पक्षियों को अपने घर जाने का संदेश देती हैं। लाइट के ये सिग्नल हम कैसे डीकोड करते हैं? इस तरह कई जानकारियां प्रकृति हमें लाइट के माध्यम से देती आ रही है। तकनीकी क्षेत्र में वाईफाई एवं अन्य संशोधनों से हमारे दिन के कार्य में काफ़ी हद तक सुविधा उपलब्ध हुई है। इस लेख के प्रारंभ में दिखाए मोर को प्रकृति हर वक्त सूचना देती है, जिसे वह अपनी बोली से ट्रांसलेट करता है।

क्या है लाईफाई?

यह एक वायरलेस ऑप्टिकल नेटवर्किंग तकनीक है, जिसमें एलईडी की सहायता से डेटा ट्रांसमिट किया जाता है। LiFi एक 5 जी तकनीकी है [1]।

यह तकनीक वाईफाई से भी बेहतर है। वाईफाई रेडियो फ्रिक्वेंसी 2.4 से 5 GHz तक के दायरे में होती है। यह कम्युनिकेशन दीवारों से निकलकर आगे जाता है, और उपलब्ध लिटरेचर के अनुमान से यह असुरक्षित कहा जाता है।

इसके अलावा रेडियो तरंगों को सभी वातावरणों में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है, जैसे केमिकल प्लांट एवं पॉवर प्लांट या अस्पताल। LiFi तकनीकी से 3 Gbps की गति से सिग्नल ट्रांस्मिट करके प्रदर्शित किया गया है [1]। लाईफाई फुल डुप्लेक्स और बाय डायरेक्शनल है जो डेटा भेजने और प्राप्त करने में कारगर है।

लाईफाई के लाइट पर निर्भर होने से विसिबल लाइट का स्पेक्ट्रुम वाईफाई से 10000 हज़ार गुना ज्यादा है। चित्र-1 में अलग-अलग फ्रिक्वेंसी को दर्शाया गया है। लाइट उत्पन्न कराने के लिए एलईडी जैसे माध्यम का उपयोग करके कम एनर्जी लगेगी।

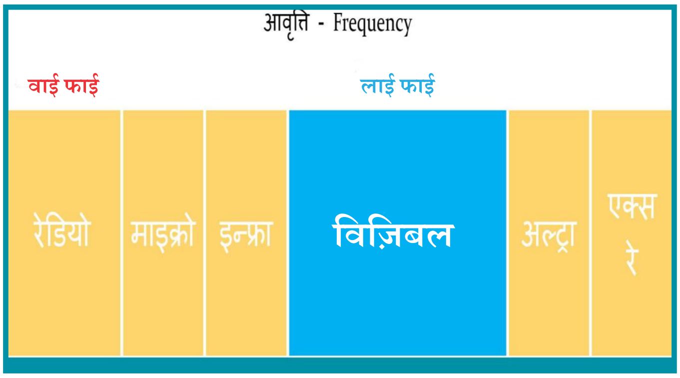

एलईडी का महत्व -

एलईडी लाईफाई में काफी कारगर साबित हुई है। इसे चालू-बंद करने के लिए कुछ माइक्रो सेकंड लगते हैं जो हमारी आँखें भी पता नहीं कर सकतीं। इस कार्य को डिटेक्टर के माध्यम से हम पता कर सकते हैं कि कब एलईडी चालू हुआ या बंद हुआ। जब एलईडी चालू है तब 1 और जब बंद है तब 0 का मान दिया जा सकता है, जिससे हम बाइनरी कोड द्वारा जानकारी को कोडीफाई कर सकते हैं। इसी तकनीक को विसिबल लाइट कम्युनिकेशन कहते हैं [2]। इसमें डेटा रेट 100 Mbps अच्छे एलईडी के इस्तेमाल से प्राप्त कर सकते हैं। एलईडी के प्रयोग से इंटरफेरेंस की संभावना नहीं होती है और इंटेसिटी मोडुलेशन से डेटा को एनकोड भी किया जाता है [1]। इस प्रणाली को इस्तेमाल करने से पूर्व दो बातें हमें याद रखनी चाहिए, एक लाइट का होना और Line of Sight (नज़र के सामने) में होना।

लाईफाई में डेटा रेट ज्यादा होता है और यह कम ऊर्जा का इस्तेमाल करता है, वाईफाई की बेंड विड्थ सीमित होती है जबकि लाईफाई में असीमित मिलती है।

लाईफाई के उपयोग (एप्लीकेशन) -

लाईफाई के विभिन्न क्षेत्र में उपयोग है, इंटरनेट से ऑटो-पायलट मोड कार और अस्पतालों जहां पर वाईफाई उपलब्ध नहीं है। इसके अलावा अन्य क्षेत्र जैसे पॉवर प्लांट आदि जहां इलेक्ट्रोमेग्नेटिक रेडियो तरंग का उपयोग मना है वहाँ इसका उपयोग कर सकते हैं।

निष्कर्ष -

लाईफाई डेटा ट्रांसमिशन का एक सरल उपाय है। इसे ट्रांसमिशन और

रिसीविंग उपकरणों को बनाकर ऑटो ट्रांसमिशन के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। इस तकनीक का कई क्षेत्रों में प्रयोग किया जा रहा है। बाजार में कई डिवाइस उपलब्ध हैं जिससे घर का सारा डिजिटल कम्युनिकेशन कर सकते हैं। सम्मिश्र रूप में हाल के वाईफाई के साथ हम लाईफाई का प्रयोग डेटा ट्रांसमिशन के लिए कर सकते है। उपलब्ध सैटेलाईट नेटवर्क और प्रभावी स्वरूप में भविष्य में लाने में इसका योगदान रहेगा।

संदर्भ -

1. Harald Haas and Cheng Chen "What is LiFi?"

2.वेब संग्रह - http://www.ijcta.com/documents/volumes/vol5issue1/ijcta2014050121.pdf

राजेन्द्र एन गायकवाड
वैज्ञा./अभि.-एसई

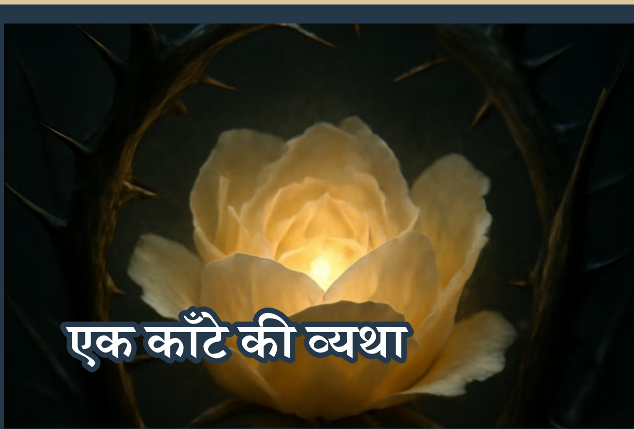

एक काँटे की व्यथा

कोमल हरी पत्तियों में छुपा
एक कोमल, सुंदर सा फूल
आकर्षित करता है सबको
पाता है सबकी वाह-वाही

नहीं पूछता कोई उस काँटे को
जिसने इस मनमोहक फूल की जान बचाई
उसके पैने काँटे कवच हैं उस फूल के
जो आने वाली विपदा से उसे बचाते हैं

नहीं सराहा किसी ने उस काँटे की कठोरता को
न जाना कि किसी कोने में छिपी है उसमें भी कोमलता
दबा रखे हैं उसने अपने अंदर न जाने कितने ही घाव
पर दिखा रहा वह दुनिया को अपना निर्दयी स्वभाव

कभी-कभी कठोरता, कोमलता को बचाती है
खुद काँटा बनकर फूल की जान बचाती है।।

रेणुका मिश्रा
विवाहिती- दीपक मिश्रा (वैज्ञा./अभि.-जी)

एक कोशिश फिर से .....

तुम बैठी सामने नज़रों के मेरे,
कि मैं तुम्हें देखता रह जाता।

तुम खुद में उलझी इतनी,
कि मैं तुम्हें सुलझा नहीं पाता।

छिपा रखा तुमने खुद में इतना कुछ,
कि मैं तुम्हें समझ नहीं पाता।

हो अभी यहां, फिर तुम कहीं और पहुंच जातीं।

कहां खोई हो तुम इतना,
कि मैं तुम्हें ढूँढ नहीं पाता।

लिखा कितना कुछ तुम में,
कि मैं तुम्हें पढ़ नहीं पाता।

अगर पहले होता पता तुम्हारा,
तो इन राहों पर आज मैं नहीं भटकता।

चलो कोई ना, जो हो गया उसे छोड़ देते हैं।

इस बार थोड़ी कोशिश मैं करूं,
थोड़ा साथ तुम मेरा देना।

उलझनें जितनी भी हैं अभी मन में,
उन्हें मिलकर सुलझाया जाए।

कुछ कदम साथ फिर से चलते हैं,
देखते है कितना हम आगे बढ़ पाते।

चलो किताब,
तुम्हें एक बार फिर से पढ़ा जाए,

पंखे से लटकने वालों को,
एक बार फिर सही राह पर लाया जाए।।

प्रभु लाल पँवार
वरिष्ठ सहायक

प्रकृति की गोद में - तुंगनाथ, चंद्रशिला और चोपता यात्रा का अनुभव

बर्फ से ढके हिमालय की चोटियाँ

जब ज़िन्दगी की तेज़ रफ्तार से कुछ पल ठहरने की चाह हो, तो पहाड़ों का रुख करना सबसे अच्छा होता है। ऐसा ही कुछ मेरे साथ हुआ, जब मैंने उत्तराखंड के सुरम्य पर्वतीय मार्ग - तुंगनाथ, चंद्रशिला और चोपता की ओर यात्रा का निर्णय लिया। इस यात्रा ने न केवल मुझे प्रकृति के करीब पहुंचाया, बल्कि भीतर के सुकून से भी रूबरू कराया।

हमारी यात्रा रुद्रप्रयाग जिले के एक छोटे से सुंदर गाँव सारी से शुरू हुई। हर तरफ हरियाली, शांत वातावरण और सामने फैली पहाड़ों की कतारें मन को सहज ही आकर्षित करती थीं।

देवरियाताल की ओर बढ़ते कदम

हम लगभग 2.5 किलोमीटर की चढ़ाई करके पहुँचे देवरियाताल, जो लगभग 7800 फीट की ऊँचाई पर स्थित एक शांत और रहस्यमयी झील है। इस ताल का पौराणिक महत्व भी है क्योंकि माना जाता है कि इसी स्थान पर यक्ष ने पांडवों की परीक्षा ली थी, जिसका वर्णन महाभारत में मिलता है। झील के साफ पानी में चौखंबा पर्वत का प्रतिबिंब दिखता है, जिससे यह जगह और भी मनमोहक हो जाती है। इस ताल का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में भी मिलता है, जो इसे ऐतिहासिक रूप से विशेष बनाता है।

चोपता की ओर रवानगी

देवरियाताल से लौटकर हम वाहन द्वारा चोपता (बनिया कुंड) की ओर बढ़े। चोपता एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल और प्राकृतिक सुंदरता का केंद्र है। इसे भारत का "मिनी स्विट्ज़रलैंड" भी कहा जाता है। चोपता ऐतिहासिक महत्व के साथ धार्मिक यात्राओं का भी मुख्य आधार है क्योंकि यहाँ से तुंगनाथ और चंद्रशिला के लिए यात्रा शुरू होती है। प्राचीन काल से ही यह जगह योगियों, ऋषियों और यात्रियों के लिए विश्राम और ध्यान का केंद्र रही है। रास्ते भर हर मोड़ पर बदलते प्राकृतिक दृश्य - कभी घना जंगल, कभी खुला मैदान और कभी हिमालय की चोटियाँ - सब कुछ मंत्रमुग्ध कर देने वाला था।

360 डिग्री बर्फीले हिमालय के बीच खड़े तुंगनाथ मंदिर की ओर

यह दिन हमारी यात्रा का सबसे रोमांचकारी और चुनौतीपूर्ण हिस्सा था। हम चोपता से शुरू करके लगभग 3.5 किलोमीटर की खड़ी चढ़ाई चढ़ते हुए पहुँचे तुंगनाथ, जो विश्व का सबसे ऊँचाई पर स्थित शिव मंदिर है। इसे भगवान शिव का तीसरा केदार कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि महाभारत काल में पांडवों ने अपने पापों से मुक्ति पाने के लिए भगवान शिव की खोज की थी। शिव जी ने पांडवों से बचने के लिए बैल का रूप धारण किया और उनके शरीर के अंग अलग-अलग जगह प्रकट हुए। तुंगनाथ में शिव जी का हृदय और हाथ प्रकट हुए थे। इसलिए इस मंदिर का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व बहुत अधिक है। मंदिर पहुँचते ही ठंडी हवा और आध्यात्मिक ऊर्जा का अनोखा संगम महसूस हुआ।

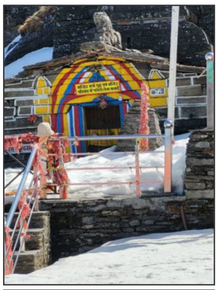

तुंगनाथ मंदिर के दर्शन – आध्यात्मिकता और प्रकृति का संगम

चंद्रशिला की ओर जाती बर्फीली पगडंडी

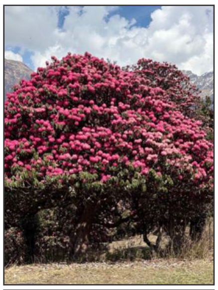

बुरांश के फूलों से सजी घाटियाँ – वसंत का स्वागत करते रंग

चंद्रशिला शिखर की ओर

इसके बाद हमने चंद्रशिला पीक (लगभग 12500 फीट) तक ट्रेक किया। चंद्रशिला तुंगनाथ मंदिर से लगभग 1.5 किलोमीटर ऊपर स्थित एक पर्वत शिखर है। चंद्रशिला का अर्थ है "चंद्रमा की चट्टान"। भगवान राम ने रावण का वध करने के बाद यहाँ आकर भगवान शिव की तपस्या की थी।

इस स्थान से हिमालय की चोटियों (नंदा देवी, त्रिशूल, चौखंबा आदि) का शानदार दृश्य दिखता है, जो इसे ऐतिहासिक एवं पौराणिक रूप से विशेष बनाता है। यह क्षण जीवन भर स्मृति में रहेगा।

विदाई के भावुक पल

अंतिम दिन हम सारी गांव वापस लौटे और अल्पाहार के बाद विदाई ली।

साथ में ले आए - थकान नहीं, बल्कि यादों की एक सुंदर गठरी और आत्मा को छूने वाले अनुभव।

अनुभव की खास बातें

इस यात्रा में हरियाली, झील, बर्फीले पहाड़ और आध्यात्मिक शांति - सभी एक साथ कुछ ऐसे मिला कि अंतरात्मा तृप्त हो गई। रास्ते में बुरांश के फूलों से ढके पेड़, हिमालयी पक्षियों की चहचहाहट और रास्तों पर बिछी बर्फ ने इस यात्रा को और भी खास बना दिया, भ्रमण का यही आनंद है कि आप खुद को खोकर पाते हैं।

समापन

यह यात्रा न केवल एक शारीरिक यात्रा थी, बल्कि यह मेरे आत्मीय विकास का भी एक माध्यम बना। एकांत में बिताए वो पल, नए लोगों के साथ बनी दोस्तियाँ और सबसे बढ़कर प्रकृति की गोद में खुद को पाना - यह सब कुछ मुझे जीवन भर याद रहेगा।

"अगर ज़िन्दगी को फिर से महसूस करना हो, तो एक बार पहाड़ों से होकर गुज़रिए।"

विश्व मोहन
वैयक्तिक सहायक

ख़ुशी गदाणी
पुत्री-डॉ. मौलेश गदाणी (चिकित्सा अधिकारी एसई)

अपनी हिंदी परखें

पिछले कई अंकों की भांति इस अंक में भी हम अपने पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं, राजभाषा हिंदी और हिंदी साहित्य से संबंधित रोचक प्रश्नावली। इन प्रश्नों के सही उत्तर देने का प्रयास कीजिए, न दे पाएं तो पेज को उल्टा करके सही उत्तर देखें और अपने हिंदी संबंधी ज्ञान में वृद्धि करें। आशा है, यह स्तंभ आपको पसंद आएगा।

1. "निन्यानवे के फेर में पड़ना" मुहावरे का सही अर्थ क्या है?

क. धन जोड़ने में लगे रहना
ख. मूर्खता के कार्य कर बैठना
ग. किसी चक्कर में पड़ जाना
घ. परिवार के झंझटों में फंसे रहना

2. 'महर्षि' शब्द का संधि विच्छेद करें।

क. मह + ऋषि
ख. महा + ऋषि
ग. महः + ऋषि
घ. मह + ऋषी

3. 'जिन ढूंढा तीन पाइयाँ गहरे पानी पैठ' लोकोक्ति का अर्थ क्या है?

क. परिश्रम का फल अवश्य मिलता है
ख. काम करने में शीघ्रता करना
ग. बिना प्रयास के लाभ होना
घ. संसारिकता में लिप्त रहकर ईश्वर को प्राप्त करना

4. 'सबकी मति भ्रष्ट होना' अर्थ को प्रकट करने वाला मुहावरा क्या है?

क. खटाई में पड़ना
ख. कुएं में ही भाँग पड़ना
ग. गूंगे का गुड़
घ. गर्दन पर छुरी फेरना

5. "बिल्ली के भाग्य से छींका टूटना" मुहावरे का अर्थ क्या है?

क. अनायास लाभ होना
ख. जान-बूझकर मुसीबत लेना
ग. बिल्ली द्वारा दूध का बर्तन तोड़ देना
घ. बहुत मेहनत के बाद सफलता मिलना

उत्तर- 1.क 2.ख 3.क 4.ख 5.क

अमर बलिदानी प्रताप सिंह बारहठ

भारत के इतिहास में मेवाड़ राज्य का उच्च और गौरवशाली स्थान रहा है। मध्यकालीन युग में महाराणा कुम्भा ने मेवाड़ को एक शक्तिशाली राज्य के रूप में स्थापित किया तो महाराणा सांगा ने दिल्ली की गद्दी से लोहा लिया। वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप ने बादशाह अकबर से मेवाड़ की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाये रखने की जो लड़ाई लड़ी, उससे वे आने वाली पीढ़ियों के लिये प्रेरणास्रोत बन गए। परंतु स्वतंत्रता की यह ज्वाला शनैः-शनैः ठंडी पड़ गई और देश को तुर्कों के पश्चात् अंग्रेजों ने हड़प लिया। इस मंद पड़ी ज्वाला को अपने बलिदानों की समिधा से प्रज्वलित किया शाहपुरा (वर्तमान जिला भीलवाड़ा, राजस्थान) के बारहठ परिवार ने।

बारहठ परिवार की रग-रग में राष्ट्रप्रेम बहता था। परिवार के मुखिया ठाकुर केसरीसिंह बारहठ का जन्म तत्कालीन राज्य शाहपुरा के निकट अपनी पैतृक जागीर के गाँव देवपुरा में हुआ था। वे क्रान्तिकारी दल के सदस्य थे और बड़े प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी थे। इसी राष्ट्रभक्त परिवार में प्रताप सिंह बारहठ का जन्म उदयपुर में विक्रम संवत 1950 ज्येष्ठ शुक्ल 9 (24 मई ईस्वी 1893) को हुआ, उनकी माता का नाम माणिक कँवर था। प्रतापसिंह के जन्म के समय ठाकुर केसरीसिंह मेवाड़ के महाराणा फतह सिंह जी की सेवा में थे। प्रताप की शिक्षा पहले अजमेर और जयपुर में हुई और बाद में पिता ने उन्हें और अपने दामाद ईश्वरदान आसिया को प्रसिद्ध क्रांतिकारी मास्टर अमीरचंद के पास दिल्ली भेज दिया।

प्रताप दिल्ली आकर क्रांति के कार्य में तन-मन से लग गये। अंग्रेजों ने वर्ष 1911 में दिल्ली को देश की नई राजधानी घोषित किया था और इसी से संबंधित उत्सवों के क्रम में ब्रिटिश भारत के वायसराय लॉर्ड हार्डिंग का भव्य जुलूस दिल्ली में निकलना था। इस पूरे कृत्य से अंग्रेज ऐसा दिखाना चाह रहे थे जैसे वे ही भारत के सच्चे राजा हैं और सभी भारतीयों ने उनकी दासता मन-वचन-कर्म से स्वीकार कर ली है। क्रांतिकारियों ने इस योजना को विफल करना चाहा, वे अंग्रेजों के हृदय में अंकित कर देना चाहते थे कि भारत का स्वाभिमान अभी मरा नहीं है। क्रांतिकारी दल के नेता रासबिहारी बोस की बनाई योजना के तहत जब 23 दिसंबर 1912 को लॉर्ड हार्डिंग अपनी पत्नी के साथ हाथी पर बैठे भव्य जुलूस में चल रहे थे उस समय चांदनी चौक में उनके ऊपर क्रांतिकारियों ने बम फेंका जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गये और उनका सेवक मौके पर ही मारा गया। इस घटना ने अंग्रेजों में भय व्याप्त कर दिया। हालाँकि हार्डिंग अंत में बच गये लेकिन संसार ने देखा कि क्रांतिकारी किस स्तर की क्षमता रखते हैं। बम फेंके जाने के समय वहाँ प्रताप सिंह बारहठ के साथ उनके काका जोरावरसिंह बारहठ भी उपस्थित थे, वे दोनों बाकी क्रांतिकारियों के साथ वहाँ से बच निकले और अंग्रेज सरकार को किसी का कोई ठिकाना नहीं मिला। बाद में धरपकड़ शुरू हुई और प्रतापसिंह के साथ उनके बहनोई ईश्वरदान आसिया को भी गिरफ्तार किया गया परंतु ठोस प्रमाण न मिल पाने के कारण उन्हें छोड़ दिया गया। जोरावरसिंह के नाम भी वारंट निकला पर वे पकड़ से बचे रहे। क्रांतिकारियों ने उपरोक्त कार्य इतनी कुशलता से किया था कि किसी पर भी आरोप सिद्ध न किया जा सका, हालाँकि एक अन्य मामले में पकड़े जाने पर मास्टर अमीरचंद, अवधबिहारी, बालमुकुन्द और बसंत कुमार बिस्वास को 8 मई 1915 को फाँसी दी गई तथा इस प्रकार फांसी के फंदों पर झूलकर उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी।

मास्टर अमीरचंद और अवधबिहारी के पकड़े जाने के पश्चात् दिल्ली में क्रांतिकारी संगठन का कार्य कमजोर पड़ गया था, तब प्रतापसिंह और शचीन्द्रनाथ सान्याल ने साथ मिलकर संगठन का पुनर्जागरण किया। अंग्रेज सरकार की नज़र में आने के पश्चात् भी, तब मात्र 20 वर्ष के प्रताप कभी अपने कर्तव्य से विमुख नहीं हुए और क्रांति के कार्य में अनवरत लगे रहे।

प्रथम विश्व युद्ध छिड़ चुका था और क्रांतिकारियों ने इस दुर्लभ अवसर का लाभ लेने के लिए ब्रितानी सरकार के विरुद्ध सशस्त्र क्रांति की योजना बनाई और व्यापक कार्यान्वयन प्रारंभ कर दिया। क्रांतिकारी शस्त्रों का प्रबंध करने लगे और सेना में भारतीय सैनिकों से विद्रोह करवाने हेतु पलटनों में गुप्त बैठकें करने लगे। अंततः यह भेद खुल गया और योजना असफल हो गई। इससे जुड़े क्रांतिकारियों पर सरकार शिकंजा कसने लगी और पूरे उत्तर भारत में बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियाँ की गईं। 30 जुलाई 1915 के दिन प्रतापसिंह को एक रेलयात्रा के दौरान जोधपुर के निकट देशद्रोही स्टेशन अधीक्षक बद्री प्रसाद ने गिरफ्तार करा दिया। 'बनारस षड्यंत्र अभियोग' में उन पर मुकदमा चला और 14 फरवरी 1916 को उन्हें 5 वर्ष के सश्रम कारावास का दंड दिया गया और बरेली जेल में रखा गया। प्रताप के पिता पहले ही कारावास में बंद थे, काका फरार थे और उनकी शाहपुरा स्थित पैतृक संपत्ति जब्त कर ली गई थी। उनकी माता माणिक कँवर एवं शेष परिवार अत्यंत कष्टप्रद जीवन व्यतीत कर रहे थे।

कारावास में प्रताप को अमानवीय शारीरिक और मानसिक प्रताड़नाएँ दी गईं, साथ-साथ उन्हें अपने साथियों के नाम बताने के लिए अनेक प्रलोभन भी दिए गए। उन्हें माता की दुखद स्थिति से अवगत कराया गया ताकि वे पिघलकर सरकारी पक्ष में आ जाएं। कुछ दिन ऐसे बीते और फिर प्रताप ने सोच-विचार करने के लिए समय माँगकर पुलिस से अगले दिन आने को कहा। अगले दिन जब पुलिस आई तब पास की कोठरियों में बंद बाकी क्रांतिकारी साथी साँसें थामकर बैठे थे, सबने सोचा कि प्रताप टूट जाएंगे, परंतु प्रताप ने अत्यंत परिपक्वता, चारित्रिक क्षमता और ध्येयनिष्ठा का परिचय देते हुए कहा "देखिए, बहुत सोचा-विचारा और अंत में तय किया है कि कोई बात नहीं खोलूँगा। अभी तक तो केवल मेरी माता ही कष्ट पा रही हैं, किन्तु यदि मैं गुप्त बातें प्रकट कर दूँ तो और भी कितने लोगों की माताएँ ठीक मेरी माता के समान दुःख पाएँगी, एक माँ के बदले और कितनी माताओं को तब हाहाकार करना होगा।"

अंत में अंग्रेजों की अत्यधिक यातनाओं को सहते-सहते प्रताप ने कारावास में ही मात्र 25 वर्ष की आयु में 24 मई 1918 को देह त्याग दी। प्रताप ने अमानुषिक अत्याचार सहे और बलिदान स्वीकार किया लेकिन अपने साथियों के नाम कभी नहीं उगले। जब प्रतापसिंह का देहांत हुआ तब भी उनके पिता केसरीसिंह बिहार की हजारीबाग जेल में कारावास भोग रहे थे, उन्हें जब अपने पुत्र के बलिदान का समाचार मिला तब उन्होंने कहा "भारत माता का पुत्र उसकी मुक्ति के लिए बलिदान हो गया।"

जोरावरसिंह तो अंत तक भूमिगत ही रहे, उनका शेष जीवन चम्बल-मालवा के बीहड़ों में बड़ी कठिनाइयों में कटा और वहीं पर वर्ष 1939 में उनका देहावसान हुआ। केसरीसिंह बारहठ का स्वर्गवास 14 अगस्त 1941 को हुआ। भारत माँ की बेड़ियाँ काटने के लिए केसरीसिंह जी ने अपना पूरा परिवार वार दिया।

धन्य हैं ऐसे वीर जिन्होंने मातृभूमि के स्वाभिमान हेतु अपने प्राणों का मोह त्यागा और कायरता का जीवन जीने से मृत्युवरण श्रेयस्कर समझा। जब तक ऐसे नरसिंह इस धरा पर जन्मते रहेंगे, तब तक भारत माँ स्वतंत्र-सुरक्षित रहेंगी।

संदर्भ सूची

1. बंदी जीवन, शचीन्द्रनाथ सान्याल, साक्षी प्रकाशन
2. राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम, बालू लाल (बी. एल.) पानगड़िया, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी
3. अमर शहीद कु. प्रताप सिंह बारहठ सेवा संस्थान (शाहपुरा) द्वारा प्रकाशित पत्रक एवं पुस्तिका
4. Role of Rajasthan's Revolutionary Pratap Singh Barahat in the Freedom Movement of India, Dr. Peeyush Bhadviya, P. 147, Rajasthan History Congress Proceedings Vol.29
5. स्वातंत्र्य राजसूय यज्ञ में बारहठ परिवार की महान आहुति, ओंकार सिंह लखावत, तीर्थ पैलेस प्रकाशन

विश्वेन्द्र प्रताप सिंह
वैज्ञा./अभि.-एसडी

ऊर्जानिधि नव युवा, कल्पना के पंख लगा,
बदलने को दुनिया करता है करतब नया।
उसे नहीं स्वीकार, थक जाना, रुक जाना,
बढ़ने का प्रण या फिर मर जाना मिट जाना।।
कैसे माने हार रगों में दौड़ती स्फूर्ति नयी-नयी,
अपनी हर परिकल्पना लगती उसे सत्य सही।
बढ़ता उत्साह दूना यदि करे कोई प्रतिकार,
झुके-रुके बिना करना हर सपना साकार।।
लगता कभी छोड़ दी उसने संयम की डोर,
लगता उसको मानो धैर्य कर रहा कमजोर।
पर धीरज खोकर नहीं मिलती मंजिल कभी,
मिलते हैं मार्ग में ढलान और चढ़ाव सभी।।
ध्यान रहे सदा न होना ढलान में अनियंत्रित,
आरोहण मांगता धैर्य और साहस अभितंत्रित।
खुली आँखों का स्वप्न है अर्जित सफलता,
स्वप्न में जागृति और जागरणभरी स्वप्नता।।
असफलता से बल बढ़ाना पर उफ न कहना,
सफलता को जिम्मेदारी मान चढ़ते रहना।
तुम ही बदलोगे जहां, गढ़ोगे नये आदर्श,
साधोगे पथ नया, सृजित होंगे नवविमर्श।।
फिर सौंपकर यह ऊर्जा नयी पीढ़ी को,
अपने ढलते यौवन में देखोगे वही दुहराव।
किसी का सर्जन नहीं, विश्व तो है शाश्वत,
बस होते रहते है कल्पों के उतार-चढ़ाव।।
समय का पहिया ऐसे ही शाश्वत गतिमान,
अतः दुःखी न होते परिवर्तन से मतिमान।
परिवर्तन को गति दे सदा करती धरती हरी,
नयी पीढ़ी आती ऊर्जित, नवस्वप्नों से भरी।।

डॉ. सोनू जैन
उप निदेशक (राजभाषा)

ट्रेन स्ट्रीट: हनोई, वियतनाम

भगवान ने मनुष्य को बनाया और मनुष्य ने अनेक आश्चर्यजनक चीजों को। जब हम पर्यटन पर निकलते हैं तो ऐसी ही कई चीजें हमें देखने को मिलती हैं। जो लोग सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं, वे जानते हैं कि हर देश के कुछ प्रसिद्ध स्थान वायरल हैं, और अगर आप अपनी यात्रा के दौरान वहां नहीं गए तो फिर आपने देखा ही क्या? ऐसी ही एक जगह है वियतनाम की राजधानी हनोई का "ट्रेन स्ट्रीट", जो दुनिया भर में अपने रोंगटे खड़े कर देने वाले अनुभव के लिए प्रसिद्ध है। यह एक ऐसी जगह है जहाँ बेहद संकरी गलियों के बीच से ट्रेन गुज़रती है, और स्थानीय लोग व यात्री कुछ इंच की दूरी पर खड़े होकर इस अद्भुत नज़ारे का आनंद लेते हैं।

ट्रेन स्ट्रीट का इतिहास 1902 के समय से जुड़ा है, जब वियतनाम में फ्रांसीसी औपनिवेशिक शासन था। उस समय उत्तरी वियतनाम को अन्य हिस्सों से जोड़ने के लिए रेलवे लाइन बिछाई गई थी। यह रेलवे लाइन हनोई के पुराने क्वार्टर (Old Quarter) से होकर गुजरती थी। समय के साथ, रेलवे के दोनों ओर स्थानीय निवासियों ने अपने घर बना लिए।

यूं तो भारत में भी रेल रोजमर्रा के जीवन का एक अहम भाग है। कितने ही स्थानों पर रेल और सड़क साथ-साथ चलती है, या फिर रेल की पटरियां रिहाइशी इलाकों से गुजरती हैं। मुंबई की लोकल ट्रेनों की आवाज वहां के निवासियों के जीवन में घुलमिल गई है। लेकिन हनोई के ट्रेन स्ट्रीट का सबसे बड़ा आकर्षण इसकी नज़दीकी है। यहाँ पर रेल की पटरी और घरों के बीच मुश्किल से कुछ इंचों का फासला है। जैसे ही ट्रेन का समय नज़दीक आता है, स्थानीय दुकानदार अपनी कुर्सियाँ समेटते हैं, बच्चे घरों के अंदर चले जाते हैं और पर्यटक दीवारों से चिपककर सांस रोककर ट्रेन के गुज़रने का इंतज़ार करते हैं।

पिछले कई सालों से ट्रेन स्ट्रीट सोशल मीडिया पर वायरल हो गई है। दुनियाभर से यात्री यहाँ आकर तस्वीरें खींचते हैं। इसके चलते कई छोटे कैफे और दुकानें रेलवे ट्रैक के किनारे खुल गई हैं। हालाँकि, भीड़भाड़ और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, कई बार स्थानीय प्रशासन ने इस जगह पर प्रतिबंध भी लगाया। कुछ समय के लिए पर्यटकों का आना-जाना सीमित कर दिया गया था, लेकिन बाद में नियमों का पालन करते हुए इसे फिर से खोला गया।

अब कुछ विशेष समयों पर ही पर्यटकों को प्रवेश मिलता है और स्थानीय गाइड्स के जरिए ही ट्रैक तक पहुंचने की अनुमति दी जाती है। इससे न केवल यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित होती है, बल्कि ट्रेन स्ट्रीट की अनोखी संस्कृति भी संरक्षित रहती है। हमने भी अपनी वियतनाम यात्रा के पहले दिन का पहला पड़ाव इसी जगह को बनाया। यहीं हमने पहली बार कोकोनट कॉफी पी, जो अपने अनोखे स्वाद के कारण दिल लुभा गई। कुछ इंच की दूरी से जब धड़धड़ाती ट्रेन निकली, तो सचमुच रोंगटे खड़े हो गए। यह अनुभव हमेशा याद रहेगा।

अगर आप कभी हनोई जाएँ, तो ट्रेन स्ट्रीट की यह अनोखी झलक जरूर देखें, वायरल आकर्षण के लिए नहीं, एक रोमांचक अनुभव के लिए जाएं। यह अनुभव आपको हमेशा याद रहेगा।

तृषा जे. त्रिवेदी
तकनीकी अधिकारी-सी

आओ देखो राजस्थान

समृद्ध संस्कृति, ऊँचे किले और रणबांकुरों का बलिदान,
सब कुछ एक जगह देखना हो तो, आओ देखो राजस्थान।

बीहड़ में विराजे महावीर और केलादेवी के दर्शन जरूरी,
ब्रज से मीठे भरतपुर में केवलादेव की अजब छटा नूरी,
अलवर डराता भानगढ़ से और जीण सीकर में खाटू पुरी,
ताल छापर के कृष्ण मृग और देखो खेतड़ी महल की शान।
भटनेर, कालीबंगा देखना हो तो, आओ देखो राजस्थान॥

रणथम्भौर का हमीर हठ और त्रिनेत्र गणेश का माधोपुर,
चाँद बावड़ी, हर्षत माता और कहाँ दूर है अपना मेहंदीपुर,
आना सागर और पुष्कर को देखने, अजयमेरु आना जरूर,
नाहरगढ़, आमेर, बिड़ला, अलबर्ट और गलता के उद्यान।
हवा महल के झरोखे देखने हो तो, आओ देखो राजस्थान॥

चम्बल, बैराज, अभेद महल और सात अजूबों वाला कोटा,
जेतसागर, रानी बावड़ी और तारागढ़ का विशाल परकोटा,
भण्डदेवरा लगे खजुराहो जैसा, काकूनी भी नहीं है छोटा,
घंटियों वाला शहर पाटन, चंद्रभागा और सूर्य का सम्मान।
गागरोन दुर्ग देखना हो तो, आओ देखो राजस्थान॥

मांडल, बदनौर, बागोर और बिजोलिया का किसान आंदोलन,
वस्त्र नगरी की अजब प्रसिद्धि और अगुचा में गजब संचालन,
विजय स्तंभ, मीरा मंदिर और कुम्भा का कीर्ति उद्बोधन,
पद्मिनी के जौहर की ज्वाला और अनगिन बलिदानों का स्थान।
चमकता चित्तौड़ देखना हो तो, आओ देखो राजस्थान॥

बेणेश्वर बागड़ का राजा और माही सागर पर सीधे सूर्य का ताप,
कुम्भलगढ़ का बादल महल शिखर पर और श्रीनाथ जी का जाप,
फतह, पिछोला, स्वरूप सागर और मोती मंगरी पर राणा प्रताप,
सिटी पैलेस, दूध तलाई और सहेलियों की बाड़ी की गजब शान।
झीलों वाला शहर देखना हो तो, आओ देखो राजस्थान॥

शिमला हमारा आबू पर्वत, गुरु शिखर और दिलवाड़ा के आकर्षण,
भीनमाल, सुंधा माता और किराडू, नाकोड़ा मंदिर का हमें निमंत्रण,
तनोट, कुलधरा, लोंगेवाला और परमाणु विस्फोट वाला पोखरण,
उम्मेद भवन, मंडोर, ओसियां मंदिर और सबसे ऊँचा गढ़ मेहरान।
घंटाघर वाला नीला शहर देखना हो तो, आओ देखो राजस्थान॥

कुचामन सिटी बहुत निराली और मेड़ता से भक्त मीरा का नाता,
जूनागढ़ वाले शहर में भुजिया स्वादिष्ट और वहीं की करणी माता,
लैला मजनू वाला गंगानगर, अन्न भंडार और बिजली का दाता,
हम्मीर, सांगा, बीका, जोधा और पृथ्वी, दुर्गा, राणा प्रताप महान।
घर-गली-गांव-शहर का इतिहास देखना हो तो, आओ देखो राजस्थान॥

कालबेलिया, तेरहताली, गवरी, घुमर, चकरी, भवई और चरी का मान,
मेमन्द, राखडी, बोर, कंदोरा, बाजुबंध, पाजेब, तिमाणियां और बाजे पगपान,
मोरचंग, भपंग, पखावज बाजे, पुंगी, जंतर, मादल और अलगोजे की तान,
मेवाड़, मरू, तीज का मेला, शीत-ग्रीष्म और गणगौर का सम्मान।
सब कुछ एक जगह देखना हो तो, आओ देखो राजस्थान॥

विष्णु कुमार सेन
तकनीशियन-एफ

वियतनामी कॉफी: इतिहास और विविधता

भारत चाय-प्रेमी देश है। हमारे यहां सुबह, दोपहर, शाम, रात, मेहमानों के आने पर, सिरदर्द होने पर, छोटी-सी भूख लगने पर और यहां तक कि बोरियत होने पर... किसी भी समय और अवसर पर चाय पी जा सकती है। पीढ़ियों से चाय पी रहे देश की पसंद में कॉफी धीरे-धीरे अपनी जगह बना रही है। बड़े शहरों में तो कॉफी कल्चर देखने को मिलता था, अब टियर-2 और टियर-3 शहरों में भी कॉफी और कैफे लोकप्रिय हो रहे हैं। युवा पीढ़ी वर्क-फ्रॉम-होम करने, दोस्तों से मिलने, डेट पर जाने और कभी-कभी सिर्फ कॉफी का आनंद लेने के लिए कैफे में घंटों बिताती है।

भारत में कॉफी कई स्थानों पर उगाई जाती है, जिनमें सबसे प्रसिद्ध स्थान कर्नाटक के कूर्ग, चिकमंगलूरु और केरल के वायनाड और पलक्कड हैं। भारत में अधिकांश जगह कॉफी बनाने का मतलब गर्म दूध में चुटकी भर कॉफी पाउडर मिलाना माना जाता है, जबकि विश्व के अन्य स्थानों पर कॉफी ब्रू करना (coffee brewing) एक कला के रूप में सिखाया जाता है। वे लोग कॉफी के साथ कई तरह के प्रयोग करते हैं।

अप्रैल 2025 में हमारी वियतनाम यात्रा के दौरान मुझे पहली बार विदेश में कॉफी पीने का मौका मिला और यहां की कॉफी का स्वाद जबान पर रच-बस गया। वहां से मैं अलग-अलग तरह की कॉफी के 15 से ज्यादा पैकेट लेकर आई। वियतनाम के बाजारों में इन्स्टेंट कॉफी पाउडर के साथ विभिन्न प्रकार के कॉफी बीन्स भी उपलब्ध थे, जो आपकी पसंद के अनुसार आपके सामने पीसकर पैक किए जाते थे। कॉफी पीने और खरीदने के साथ मैंने स्थानीय लोगों से तथा इंटरनेट के माध्यम से वहां की कॉफी का इतिहास जाना और अब अभिव्यक्ति के पाठकों के साथ कुछ रोचक जानकारी साझा कर रही हूं।

इतिहास

वियतनाम को आज विश्व के सबसे बड़े कॉफी उत्पादकों में गिना जाता है। ब्राज़ील के बाद वियतनाम दूसरा सबसे बड़ा कॉफी उत्पादक देश है, लेकिन इसकी शुरुआत बहुत पहले नहीं हुई थी। सन् 1857 में एक फ्रांसीसी मिशनरी ने वियतनाम में पहली बार कॉफी के बीज बोए। शुरू में यह खेती छोटे पैमाने पर थी और मुख्य रूप से धार्मिक संस्थानों के आसपास ही सीमित थी। परंतु धीरे-धीरे फ्रांसीसी उपनिवेशवादियों ने इसे एक वाणिज्यिक फसल के रूप में विकसित करना शुरू किया। विशेष रूप से मध्य वियतनाम के पहाड़ी क्षेत्र, जैसे डा लाट और केंद्रीय हाईलैंड्स (Central Highlands), कॉफी उत्पादन के लिए आदर्श माने गए।

19वीं सदी के अंत तक, वियतनाम में रोबस्टा (Robusta) कॉफी की खेती बड़े पैमाने पर होने लगी। रोबस्टा किस्म यहाँ के गर्म और आर्द्र जलवायु के लिए उपयुक्त थी और इसकी पैदावार भी अधिक थी। वहीं, कुछ क्षेत्रों में ऐरेबिका (Arabica) किस्म की भी खेती की गई, लेकिन वह कम लोकप्रिय रही क्योंकि उसकी देखभाल कठिन थी। रोबस्टा कॉफी में ऐरेबिका के मुकाबले ज्यादा कैफीन होता है। अतः इसकी कम मात्रा से भी अधिक ऊर्जा मिल जाती है।

अमेरिका-वियतनाम युद्ध और इसके बाद के कठिन वर्षों में कॉफी उत्पादन को भारी नुकसान हुआ। लेकिन 1986 में "डोई मोई" (Doi Moi) नामक आर्थिक सुधार नीति के तहत वियतनाम ने अपने कृषि क्षेत्र को फिर से खोला और कॉफी को एक मुख्य निर्यात फसल के रूप में पुनर्जीवित किया।

आज वियतनाम का कॉफी उद्योग न केवल देश की अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा है, बल्कि कॉफी उसकी सांस्कृतिक पहचान का भी प्रतीक बन गई है।

अद्वितीय पेय शैलियाँ

वियतनाम में तरह-तरह की कॉफी मिलती है, लेकिन गर्म से ज्यादा आइस कॉफी पसंद की जाती है।

- यहाँ की सबसे प्रसिद्ध शैली है "का फे सू दा" (Cà Phê Sua Dá), जिसमें गाढ़ी ब्लैक कॉफी, मीठा कंडेन्स्ड मिल्क मिलाकर बर्फ के साथ परोसी जाती है।

- फिन का फे (Phin cà phê) पारंपरिक फिन फिल्टर का उपयोग कर बनाई जाती है। एक कप/ग्लास में थोड़ा कंडेन्स्ड मिल्क डालकर ऊपर फिन फिल्टर रखा जाता है, जिससे कॉफी धीरे-धीरे टपकती है। फिर इन्हें मिलाकर गर्म कर या बर्फ डालकर पिया जाता है।
- एक और दिलचस्प वियतनामी कॉफी है "एग कॉफी" (Egg Coffee - Cà Phê Trung)। इसमें अंडे की जर्दी, कंडेन्स्ड मिल्क और कॉफी को मिलाकर एक झागदार, मलाईदार पेय तैयार किया जाता है। इसका स्वाद मीठा और सुगंधित होता है, जो किसी डेज़र्ट जैसा अनुभव देता है।
- इसके अलावा शाकाहारियों के लिए अनोखे स्वाद वाली कोकोनट कॉफी (Cà phê dua) भी है, जो नारियल के दूध, मीठे कंडेन्स्ड मिल्क और कॉफी का लाजवाब मिश्रण है।
- यहीं हमने सॉल्ट कॉफी (Cà phê muoi) भी पी। इसमें कॉफी और कंडेन्स्ड मिल्क के साथ दूध का नमक मिश्रित झाग मिलाया जाता है। सॉल्ट कॉफी के शौकीन कहते हैं कि नमक कॉफी की कड़वाहट तथा कंडेन्स्ड मिल्क की मिठास को संतुलित करता है और दोनों के फ्लेवर को उभारने का काम करता है।
- एवोकाडो कॉफी (Sinh to bo cà phê) पके एवोकाडो, कॉफी, कंडेन्स्ड मिल्क और बर्फ को मिलाकर बनाई गई गरिष्ठ और क्रीमी स्मूदी होती है।

वियतनामी एग कॉफी की कहानी

एग कॉफी की शुरुआत 1946 में हुई थी, जब हनोई के एक बारटेंडर Nguyen Van Giang ने दूध की कमी के कारण कॉफी में अंडे की जर्दी और कंडेन्स्ड मिल्क का प्रयोग किया। यह प्रयोग इतना सफल रहा कि बाद में यह एक खास वियतनामी कॉफी बन गई। आज उसी व्यक्ति के परिवार द्वारा चलाया जा रहा "Café Giang" हनोई में एग कॉफी का सबसे प्रसिद्ध स्थान माना जाता है।

मुझे लगता है कि वियतनामी कॉफी के बारे में इतना कुछ जानने के बाद आपकी भी इसका स्वाद लेने की इच्छा हो गई होगी। तो चलिए, वियतनाम घूमकर वहां की कॉफी का आनंद लेकर आते हैं.....

सोमा करनावट
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

राम जी की शपथ और हनुमान जी का रण कौशल

पलायन वेग एक ऐसा वेग है, जिसके बराबर या उससे अधिक वेग से अगर किसी वस्तु को पृथ्वी से ऊपर फेंका जाए तो वो वस्तु पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र से बाहर निकल जाती है और फिर से स्वतः पृथ्वी पर नहीं आ सकती।

गोस्वामी तुलसीदास जी कृत रामचरितमानस में वर्णन है कि एक बार राम जी ने ये शपथ ली कि मैं पृथ्वी को राक्षसों से रहित कर दूंगा। लेकिन जब राम-रावण युद्ध हुआ तो पता चला कि रावण की सेना में 1000 ऐसे राक्षस हैं जो अमर हैं, उन्हें मारा नहीं जा सकता। उस सेना को, अमरी सेना नाम दिया गया। ऐसे समर्थ राक्षस, केवल श्री हनुमान जी की पूंछ के विषय हैं।

इस विषय और श्री हनुमान जी के रण कौशल पर आधारित यह छंद है। हनुमान जी के पास सबसे अचूक अस्त्र उनकी पूंछ ही है, वैसे भी पूंछ तब तक ही सहायक है जब तक वो स्वयं के नियंत्रण में बनी रहे, न कि स्वयं पूंछ के अधीन हो जाओ।

पवन को पूत राम दूत अंजनीकुमार
देखो देखो युद्ध माही कौतुक करत हैं।
सब लड़े बानन ते, धनु औ कृपानन ते
इहाँ एक लूम चहुँ दिशा मैं फिरत हैं।।
काहूँ को पछारै काहूँ सरग सिधारै काहूँ
पटकि के मारै ऐसी जोर की लरत है।
अमरी सेना को देखि, व्याकुल है "वेद" सब
बिकट भटन्ह मद, लूम ही हरत है।।

सन्दर्भ

पुस्तक:- रामचरितमानस एवं कवितावली

लेखक:- गोस्वामी तुलसीदास

"लूम लपेटि अकास निहारिकै, हाँकि हठी हनुमान चलाये।
सूखि गे गात चले नभ जात, परे भ्रम-बात न भूतल आये।।"

- कवितावली

वेद प्रकाश शर्मा
वैज्ञा./अभि.-एससी

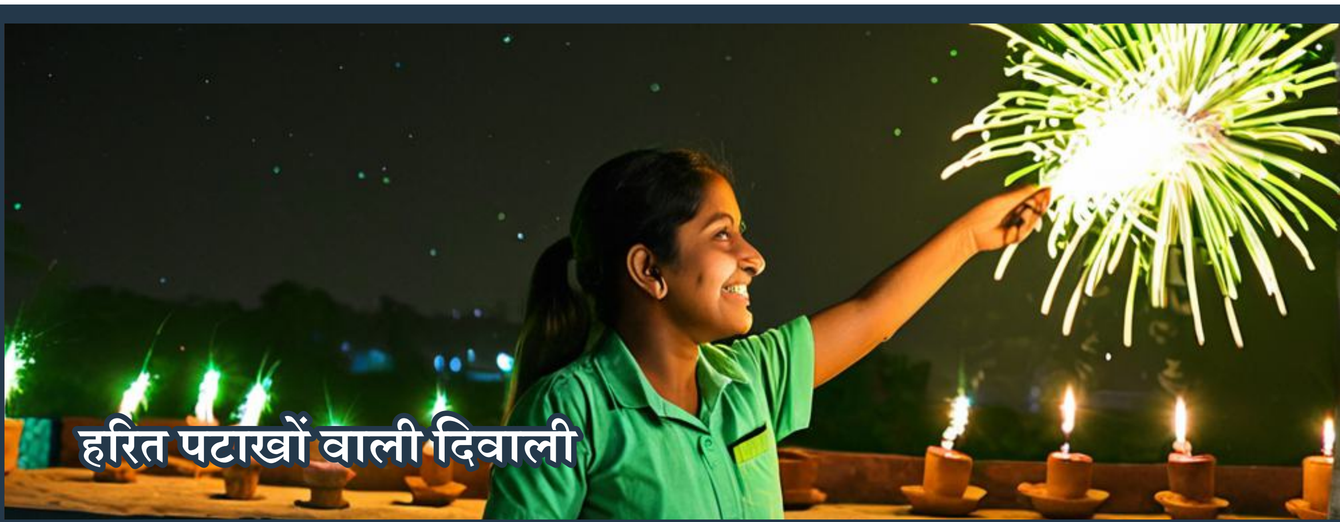

हरित पटाखों वाली दिवाली

दिवाली, रोशनी का त्योहार हमेशा छोटे से शहर खंभात को रंगों और आवाज़ से जीवंत कर देता था। लेकिन इस साल, हवा में कुछ अलग-सा महसूस हो रहा था। पहली बार, शहर एक नए तरह की दिवाली मनाने की तैयारी कर रहा था -ऐसी दिवाली जिसमें हरित पटाखे इस्तेमाल होंगे।

पर्यावरण के प्रति चिंतित कुछ युवा पर्यावरणविदों के समूह ने पर्यावरण के अनुकूल दिवाली मनाने का विचार दिया था। यह चिंता सिर्फ खंभात तक सीमित नहीं थी; पूरे भारत में परंपरागत पटाखों के कारण पर्यावरण और लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले असर के प्रति जागरूकता बढ़ रही थी। दिल्ली में दिवाली के बाद गंभीर प्रदूषण होने पर, सर्वोच्च न्यायालय ने पारंपरिक पटाखों पर प्रतिबंध लगा दिया और उनकी जगह वैज्ञानिकों द्वारा विकसित हरित पटाखों को मंजूरी दी। हरित पटाखे कम हानिकारक उत्सर्जन करते हैं और कम शोर उत्पन्न करते हैं, जिससे ये स्वास्थ्य के लिए बेहतर विकल्प बन गए।

खंभात में उत्साह की लहर दौड़ गई क्योंकि लोग नए तरह के पटाखों के बारे में बातचीत करने लगे। हरित पटाखे दिखने में पारंपरिक पटाखों जैसे ही थे, लेकिन हर डिब्बे पर एक क्यूआर कोड था, जिसे खरीदार स्कैन करके उनकी प्रामाणिकता का सत्यापन कर सकते थे। इस व्यवस्था ने यह सुनिश्चित किया कि केवल सरकार द्वारा अनुमोदित असली हरित पटाखे बिकें और प्रतिबंधित या नकली पटाखे बाजार में न आ सकें। ये पर्यावरण अनुकूल पटाखे प्रदूषण को दबाने के लिए जलवाष्प का उपयोग करते थे, जिससे सल्फर जैसे हानिकारक उत्सर्जन में 30-35% तक की कमी आती थी।

मीरा, खंभात की एक छोटी बच्ची हमेशा अपने दादा के साथ आतिशबाजी देखना पसंद करती थी, लेकिन उसके दादा की अस्थमा की बीमारी के कारण पहले यह अनुभव मुश्किल होता था। पटाखों के धुएं से उनके दादा की सांसों में दिक्कत होती थी। जब मीरा को हरित पटाखों के बारे में पता चला, तो उसने अपने परिवार को इन्हें आजमाने के लिए उत्साहित किया और समझाया कि वे त्योहार का आनंद लेते हुए पर्यावरण और दादा की सेहत दोनों का ध्यान रख सकते हैं। उसके माता-पिता ने उसका समर्थन किया और हरित पटाखों का एक डिब्बा खरीदा।

जैसे ही दिवाली की रात आई, खंभात दियों, मालाओं और लाइट्स से सजा हुआ था। एक शांति का माहौल था क्योंकि परिवार बाहर एकत्र होकर अपने हरित पटाखे जलाने की तैयारी कर रहे थे। मीरा अपने परिवार के साथ खड़ी थी, उसके हाथ में एक छोटा फुलझड़ी पटाखा था। जैसे ही उसने उसे जलाया, रोशनी का एक शानदार स्तंभ ऊपर उठा, जो पारंपरिक पटाखों की तरह धुएं या तेज आवाज़ के बिना झिलमिला रहा था। आसमान में कोमल रंगों की हल्की चमक के साथ वातावरण जादुई लग रहा था।

पूरे खंभात के लोगों ने फर्क महसूस किया। आसमान साफ था और तारे पहले से ज्यादा चमकीले लग रहे थे। पड़ोसी मुस्कुराहटें बांट रहे थे, खुश थे कि वे एक ऐसे त्योहार का हिस्सा बने जिसमें आनंद के साथ-साथ जिम्मेदारी भी थी। मीरा ने आकाश में हरित चमक को गर्व से देखा, उसे पता था कि उसके प्रयास से त्योहार धुएं की चादर से मुक्त रहा। खंभात की दिवाली सचमुच ताजगी भरी सांस की तरह थी।

अगले दिनों में कई पड़ोसी शहरों ने खंभात की सफलता से प्रेरणा लेकर अपने त्योहारों में हरित पटाखों को अपनाया। दिवाली का त्योहार पहले की तरह चमकता रहा, लेकिन अब उसमें पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी और सम्मान का भाव भी जुड़ गया था।

मीरा की यह कामना थी कि एक दिन हरित पटाखे पूरी दुनिया में आम हो जाएँ, ताकि हर कोई प्रकाश और खुशी से भरी ऐसी दिवाली मना सके।

व्योम गदाणी
पुत्र-डॉ. मौलेश गदाणी (चिकित्सा अधिकारी एसई)

इस बार सैक का हिंदी माह विशेष रहा। 30 सितंबर, 2025 को आयोजित पुरस्कार वितरण एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम की मुख्य अतिथि उ.प्र. की माननीय राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल थीं। साथ ही, अहमदाबाद की वर्तमान मेयर श्रीमती प्रतिभा जैन, पूर्व मेयर श्रीमती मीनाक्षी, असारवा-अहमदाबाद की सांसद श्रीमती दर्शना वाघेला, संघ प्रचारक श्री हरीशभाई रावल, श्री आर के शाह, विद्या प्रचारक, श्रीमती अनार पटेल, सामाजिक उद्यमी, श्री जयेशभाई पटेल उद्यमी भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में 1-30 सितंबर 2025 के दौरान हिंदी माह आयोजित किया गया। 1 सितंबर 2025 को कर्मचारियों के लिए टंकण प्रतियोगिता के साथ प्रतियोगिताओं का शुभारंभ किया गया। हिंदी माह के दौरान कर्मचारियों के लिए 10 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। वर्ष 2017 से अधिकांश प्रतियोगिताओं में 'क', 'ख' और 'ग' भाषा क्षेत्र के कर्मचारियों को अलग-अलग पुरस्कार दिए जाते हैं। इस वर्ष प्रतियोगिताओं में कई नवीन प्रयोग किए गए। काव्यपाठ प्रतियोगिता में 44 प्रतिभागियों ने अपनी स्वरचित कविताओं का पाठ किया। तत्पश्चात् उनमें से 6 कवियों का चयन कर एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कर्मचारियों के लिए राजभाषा ज्ञान हाउजी प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें हर नंबर के साथ राजभाषा ज्ञान से संबंधित एक प्रश्न संलग्न था। कर्मचारियों को पुरस्कार जीतने के लिए सभी प्रश्नों के उत्तर देने थे। इस प्रतियोगिता से कार्मिकों के राजभाषा संबंधी ज्ञान में काफी वृद्धि हुई। उल्लेखनीय है कि ऑनलाइन हिंदी प्रश्नमंच में लगभग 740 कर्मचारियों ने भाग लिया।

वाहन चालक और कुक, गार्डनर आदि स्टाफ सदस्यों के लिए सरल लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। हिंदी माह के दौरान कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों के लिए भी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। कर्मचारियों के विवाहितियों के लिए म्यूजिकल हाउजी तथा आश्रित बच्चों के लिए 'राजभाषा रंग भरो', 'सुलेखन', 'प्रेरक व्यक्तित्व एकल संवाद', 'पीपीटी के माध्यम से कहानी प्रस्तुति' और 'पीपीटी के माध्यम से समसामयिक विषय की प्रस्तुति' प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

हिंदी माह के दौरान आयोजित विविध प्रतियोगिताओं में सैक के लगभग 1175 कर्मचारियों ने भाग लिया। संपूर्ण माह के दौरान कार्यालय में हिंदी में कार्य करने के लिए लोगों में अलग ही उत्साह नजर आया। हिंदी माह प्रारंभ होने के पूर्व, नियंत्रक, सैक के हस्ताक्षर से अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए सभी कर्मचारियों को एक पत्र जारी किया गया। हिंदी माह के दौरान कर्मचारियों के लिए हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने हेतु प्रोत्साहन योजना भी लागू की गई।

30 सितंबर 2025 को हिंदी माह पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें कुल रु. 98,050/- की पुरस्कार राशि कर्मचारियों को तथा रु. 22700/- की पुरस्कार राशि कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों को वितरित की गई। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत देवी अहिल्याबाई होल्कर के जीवन पर आधारित भव्य नाटक "लोकमाता" प्रस्तुत किया गया, जिसमें 40 से अधिक कर्मचारियों ने भूमिका निभाई। इसके अलावा सैक पुस्तकालय द्वारा संपूर्ण हिंदी माह के दौरान हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। पुस्तकालय में पिछले वर्ष के दौरान खरीदी गई पुस्तकों को पूरे माह प्रदर्शन हेतु रखा गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत देवी अहिल्याबाई होल्कर के जीवन पर आधारित भव्य नाटक 'लोकमाता' की प्रस्तुति।

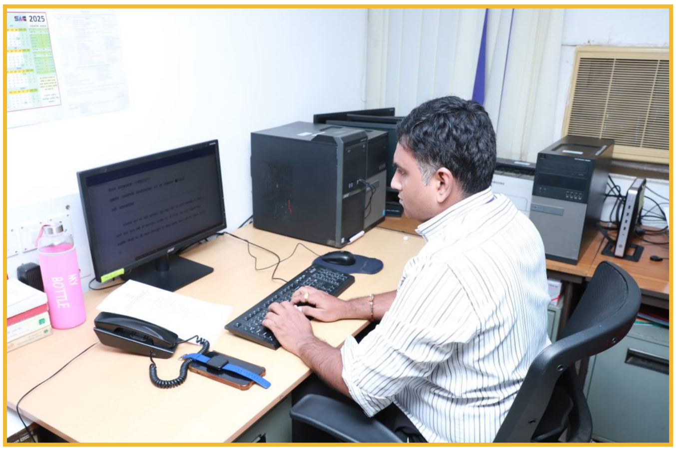

हिंदी टंकण प्रतियोगिता

मेरा कार्यालय, मेरी भाषा प्रतियोगिता

गृह-पत्रिका प्रतियोगिता

एकांकी प्रतियोगिता

अपनी हिंदी परखें प्रतियोगिता

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

सरल लेखन प्रतियोगिता

स्मरण प्रतियोगिता

28 फरवरी 2025 को संपन्न राजभाषा कार्यशाला

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के वैज्ञानिक/अभियंता-एसजी वर्ग के लिए 28 फरवरी 2025को एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. मिलिंद बी. महाजन, उप निदेशक, एएसए ने की। कार्यशाला में 136 प्रतिभागियों को नामित किया गया।

03 जून 2025 को संपन्न राजभाषा कार्यशाला

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के वैज्ञानिक/अभियंता-एसएफ वर्ग के लिए 03 जून 2025 को एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री जैमिन बी. रामी, समूह प्रधान, एसटीएसजी-एस्सा ने की। कार्यशाला में कुल 101 कर्मचारियों को नामित किया गया।

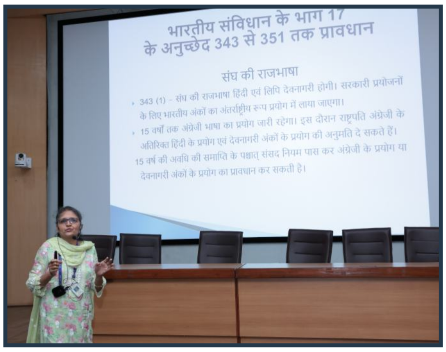

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में सभी प्रभाग/अनुभाग के राजभाषा समन्वयकों के लिए 30 जुलाई 2025 को एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री उल्केश देसाई, समूह प्रधान, एमपीएमजी-मेसा ने की। कार्यशाला में कुल 159 कर्मचारियों को नामित किया गया।

22 अगस्त 2025 को संपन्न राजभाषा कार्यशाला

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में प्रशासन क्षेत्र के सभी अधिकारियों के लिए 22 अगस्त 2025 को एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. रविशंकर जे., समूह प्रधान-पीपीईजी ने की। सत्र संचालन श्री हरीश सिंह चौहान, उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम) द्वारा किया गया। कार्यशाला में 33 प्रतिभागियों को नामित किया गया।

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में दिनांक 30 सितंबर, 2025 को आयोजित सांस्कृतिक एवं पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां

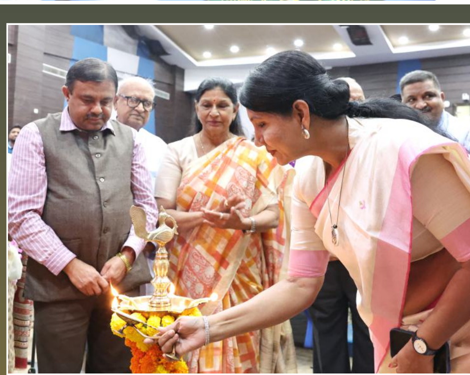

पत्रिका पढ़ने के लिए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

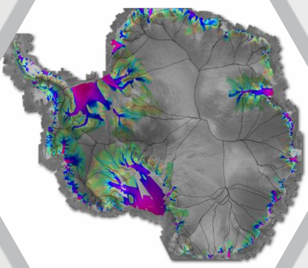

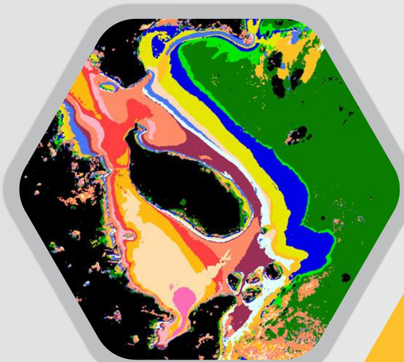

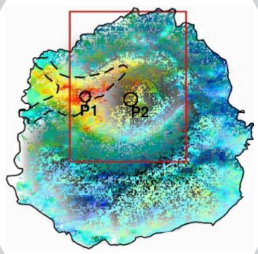

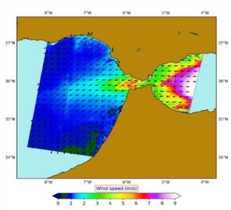

जी. एस. एल. वी.-एफ16

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद